

१५२८८१

जुलै १९८९

त्रि-त्र-यत्र विज्ञान



पूज्य गुरुदेव

सम्पादकीय.....

यन्त्र सत्य यन्त्र विज्ञान पत्रिका का मासिक 'सत्य विवेचन' भाग के साथ में है, जिसमें 'संकर्ष' ऐसी पटना पर चर्चित होती रहती है, जो अपने मास में रहस्यपूर्ण है और जिसका उत्तर सब तक भी विज्ञान बाध नहीं पाया है, इस ऐसी ही दुर्लभ ज्ञानकारी इस पत्रिका के माध्यम से आपके सामने प्रस्तुत है।

जनवरी १९८१ से इस पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया था, प्रारम्भ करने के मूल में तो किसी प्रकार का कोई स्वार्थ या धोरन किसी प्रकार की यह बुद्धि, देव रहा था कि धीरे धीरे समाज में दुष्प्रवृत्तियों हटती जाती रही है, यन्त्र प्रसार के बिचार, मुठ-कथोट, हत्या, बपराब भादि से सम्बन्धित चटनाएँ मानविक दृष्टिक के रूप में लक्ष्य पीछे की बात हो रही है और धीरे-धीरे वे अपने इस उल्ट धोर चरित्र को भूलते जा रहे हैं, इसी पीछे में छटपटाकर इस पत्रिका का प्रकाशन किया था।

धीरे में धात प्रसूता, उपाय धोर हर्षविरक्त के श्रोत-श्रोत हैं कि धार लोभी का सहयोग मुझे मिला, सामने इस पत्रिका को सतक कर उठाया, सहयोग दिया, स्वयं सदस्य बने, दूसरे साक्षियों धोर परिचितों को सत्य बताना धोर इस प्रकार पत्रिका को यह साधारण भाग सब ने दिया है, यह अविस्मरणीय है, हमने आपके विचारों को रखा की है, आपने देखा होगा कि हमने किसी प्रकार का विज्ञापन स्वीकार नहीं किया, यद्यपि विज्ञापन के लिए शोध स्वयं भागे बढ़े, परन्तु सभी तक हम अपनी नीति पर बड़ है कि पत्रिका के पृष्ठ विज्ञापन से न बरे जाय, प्रसिद्धि उनमें ओल मौलिक धोर शास्त्रबद्ध न गोनीय सामग्री ही थी जाय, जिससे कि वे साक्ष्य सके, धोर आपने किसी भी विधि इसके प्रकाश में जीवन प्रशस्त कर सके।

पिछले वर्ष महत्वपूर्ण साधना विधिर लगाये कि धोर इसके माध्यम से सदस्यों ने पहली बार साधना का क्रम, स्तर धोर जानकारी अनुभव की, इस जिबिरी में जिन साक्षकों ने भाग लिया था वे पूरे विश्व में साधना के प्राप्ति साधारण है, उनमें इतनी क्षमता है कि वे अन्य लोगों को साधना के मूल स्वरूप धोर साधना के बारे में पूरी जानकारी दे सकें उनका पत्र प्रशस्त कर सके, उन सभी साक्षकों को यह बोझ उठाना चाहिए धोर अपने जीवन का कुछ भाग ऐसे कार्यों में व्यत्यस लगाना चाहिए, जिससे कि अन्य व्यक्ति भी साधना, साधना के रहस्य, साधना की विधि धोर साधना का क्रम समझ सकें, तदनुकूल उतने सफलता पा सकें।

मेरी इच्छा यह है कि प्रति माह यह पत्रिका समग्र तो पृष्ठों की प्रकाशित हो और फिर भी इसका मूल्य न बढ़ाया जाय, इतने ही मूल्यों में सबभग तो पृष्ठों की पत्रिका देने के लिए हम प्रयास से प्रयत्नशील है, पर यह सभी सम्भव हो सकता है, अब इस पत्रिका की सदस्यता काफी बढ़े, ऐसा होने पर ही 'घाफ लेट प्रिंटिंग' की कार्यवाई जा सकती है, पर यह तो धार लोगों पर ही निर्भर है, यदि प्राप्त इस अंक को प्राप्त कर यह संकल्प ले लें, कि एक महीने के अन्दर-अन्दर तीन मने विचारिक सत्य बताने हो है, धोर यदि सोच लें तो वह कोई मुश्किल काम नहीं है, पर ऐसा करने ही हमारा जो लक्ष्य है, हम उसे निश्चित रूप से प्राप्त कर सकेंगे धोर प्रत्येक महीने ज्ञान के ज्ञाता पृष्ठों में महत्वपूर्ण सत्यको धारको प्रदान कर सकेंगे, यदि आप ऐसा करते हैं तो पत्रिका स्थिर धोर निरंतरा प्रोत्त कर सकती है, मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अंतिम बतल उप भी इस पत्रिका का प्रकाशन बनाये रखूँगा।

मैं आपसे सहयोग चाहता हूँ, सहयोग के लिए आपके सामने उपस्थित हूँ और मुझे विश्वास है कि आप मेरे प्रत्येक सदस्य उपरोक्त संकल्प ले कर मुझे सहयोग देंगे।

आपके जो शब्द ही भरे लिए उत्साहवर्धक होते हैं, धात यह लिखे कि आपके यह अंक कैंसा गया है।

गी
ही
तो
सा
प्रक
रहे
भा,
दी
रके
पि
वन
कर
के
मं
पने
म,
भा
है,
भा
अप
नेई
गौर
तो
सक
भाप

चैत्र नवरात्रि

शतचण्डी युक्त

महा भगवती साधना शिविर

महालक्ष्मी काली और महासरस्वती सम्पुट युक्त

१८-३-८८ से २५-३-८८ तक

इस वर्ष विक्रमी सम्बत् के प्रारम्भ में जो चैत्र नवरात्रि प्रारम्भ हो रही है, वह मास्कों के अनुसार सकाम्य कामदा नवरात्रि है इस नवरात्रि में त्रित कामना के साथ साधना सम्पन्न की जाती है, यह कामना भगवती दुर्गा अवश्य ही पूर्ण करती है।

अतोत्तिष की श्रुति से भी इस कार्य नवरात्रि का अपने धार में धाम्पर्यजनक महत्व है, कहा गया है—

चैत्रे प्रतिपदा शुक्ले भोगेश्वर ददा ययः ।

सर्वं सिद्धिं भवेत्तस्य नवरात्रौ स दुर्लभः ॥

अर्थात्—यदि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को शुक्रवार हो और मीन का चन्द्रमा हो, तो इस प्रकार का योग पुण्यतया दुर्लभ भव्यता है और जो साधक ऐसी नवरात्रि में साधना सम्पन्न करते हैं, उसे निश्चय ही समस्त प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

और यदि सर्वं देख लें, कि इस बार चैत्र प्रतिपदा को शुक्रवार है, और मीन राशि पर ही चन्द्रमा परिक्रमण है, ऐसी स्थिति में यह नवरात्रि का वर्ष अपने आप में

दुर्लभ अद्वितीय और महत्वपूर्ण है।

दुर्लभ योग

वास्तव में ही इस नवरात्रि में यदि एक दिन भी दिवस विधान के साथ साधना की जाय तो निश्चय ही उसे पूर्ण सिद्धि तो प्राप्त होती ही है, उसकी सभी प्रकार की मनोकामनाएं भरी सकल होती हैं।

चैत्रे शुक्ला भुव चारे प्रतिपदा या यदि भवेत् ।

मीने चन्द्रो रवौ वांति स योगं दुर्लभं नरः ॥

विधानों के अनुसार—यदि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को शुक्रवार हो और मीन राशि पर ही सूर्य और चन्द्र दोनों हो तो ऐसा योग अत्यन्त दुर्लभ कहा जाता है और सोनाम्यशाली व्यक्ति और साधक ही ऐसे दिनों में गुरु चरणों में बैठ कर साधना सम्पन्न करने का सोभाव्य प्राप्त करते हैं।

और इस वर्ष ये सभी योग उपाहित हैं, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का शुक्रवार है और एक ही राशि पर सूर्य चन्द्रमा का संयोग होने से अमृत तुल्य सकाम्य सिद्धि-

दायक योग बन गया है, ऐसे अङ्गिणों और महत्वपूर्ण अवसर पर तो सीमापारणी साधकों की शिबिर में भाग ले कर पूर्णता प्राप्त करने में समर्थ हो पाते हैं।

सूर्य ग्रहण

साधकों के लिए ग्रहण का धार्मिक महत्व है और फिर यदि सूर्य ग्रहण हो और ऐसे "श्रीवर्धन सूर्य ग्रहण" में महालक्ष्मी साधना सम्पन्न की जाय तो ऐसे नाशक की लम्प लम्प की दृष्टिगत मिटाकर परदायक लक्ष्मी प्रसन्न होती है और उसके समस्त दुर्भाग्य भी दूर करती है।

अतः सर्वत्र सूर्यग्रहण लक्ष्मी सिद्धि प्रकीर्तिते।

सर्व दुःख हरे देवो साधको देव दुर्लभः॥

इस वर्ष नवरात्रि के प्रारम्भ में ही धर्मतोषम सूर्यग्रहण है, जो कि साधकों के लिए अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है, साधकों को चाहिए कि सूर्यग्रहण के अवसर पर स्वयं भी साधना साधना सम्पन्न कर पूर्णता प्राप्त करें।

नवरात्रि प्रारम्भ

श्रावण मासक स्नान कृदि निवृत्त हो कर पूरे की ओर मुंह कर बैठ जायेंगे और फिर विभिन्न वर्षों में हुए श्रावण विधान के अनुसार चन्द्रमण्डल स्थापित करेंगे। (१) भगवती दुर्गा घट स्थापन (२) महालक्ष्मी घट स्थापन (३) महाकाली घट स्थापन (४) सरस्वती घट स्थापन (५) सर्वसिद्धिदायक "श्री" घट स्थापन।

श्रावण प्रमाण के अनुसार इन पाँचों घटों का स्थापन साधकों के द्वारा होगा और सभी साधक अपनी स्वीकृति उत्पन्न कर नवरात्रि का प्रारम्भ करेंगे, जिससे कि भगवती दुर्गा प्रत्यक्ष सिद्धिदायक हो, और वे साधना में पूर्णता, सफलता एवं श्रेष्ठता

प्राप्त करें।

प्रथम दिन दुर्गा सूर्य ग्रहण का अवसर उपस्थित होता है, अतः लक्ष्मी साधकों के लिए यह अवसर बड़ा उचित नहीं। विश्वामित्र द्वारा सिद्ध की हुई विशेष गोपनीय "सहस्र लक्ष्मी आवाहन सिद्धि साधना प्रयोग" सम्पन्न कराया जायेगा, तबरात्रि का प्रारम्भ होगा, कई सौ वर्षों बाद ऐसे महत्वपूर्ण अवसर पर सूर्यग्रहण का विधान होगा, और फिर विश्वामित्र द्वारा गोपनीय साधना प्रयोग के द्वारा लक्ष्मी प्राप्ति का विशेष प्रयोग सम्पन्न किया जायेगा, ऐसे प्रयोग की प्रतीक्षा तो देखता तक करते हैं। उच्च कोटि के योगी, सन्ध्या की ओर गृहस्थ लोगों में धर्मों तथा विचारों प्रारम्भ कर दो है, दक्षिण के प्रसिद्ध की ओर प्रवेश कर तो सिद्धि दो महीनों में तथा विचार प्रारम्भ नई है, जिससे कि सूर्य ग्रहण और नवरात्रि संयोग अवसर पर भगवती महालक्ष्मी की साधना सम्पन्न न जाय, और भगवती घटलता एवं पूर्णता प्राप्त की जा जायत में ही यह अवसर है, और ऐसे महत्वपूर्ण अवसर पर तो मैं प्रसन्नता के सभी पाठकों को साधकों का इन मन्त्रियों के माध्यम से आवाहन कर रहा हूँ कि वे हर हालत में ऐसे दुर्लभ अवसर और नवरात्रि वर्ष पर उपस्थित हो, यदि तुल्य जीवन जीते हुए, अपने जीवन के और अधिक सौभाग्य के सभी पाठों का लय करें तथा नवरात्रि शिबिर में भाग लेते हुए पूर्णता के साथ सिद्धि प्राप्त करें।

नवरात्रि का प्रत्येक दिन : एक महत्वपूर्ण साधना वर्ष

हो, इस बार नवरात्रि के प्रत्येक दिन को हमने एक साधना वर्ष के रूप में तैयार किया है, जिससे कि साधक इन दिनों का पूरा पूरा लाभ उठा सकें, वहाँ १५ भागों की सूर्य ग्रहण और नवरात्रि के प्रारम्भ के अवसर पर भगवती महालक्ष्मी की साधना सम्पन्न कर पूर्ण लक्ष्मी

सिद्धि प्राप्त करेंगे, वही १२ मार्च को दुःख भण्ड दहने एवं होने के कारण नाम "सिद्धि गुरु" बननेगी। दुर्गा के सत्त्वगुणी विद्यान की स्मरण करते ही यह बात, यज्ञाय मृग, दुग्ध और बरिदता की मिश्रण में समर्थ है, एक तरफ उच्च कोटि के सत्त्व सत्त्वगुणी पाठ करते हुए दिखाई देंगे, वही दूसरी ओर साधक पूर्ण ज्ञान बन कर यज्ञ में भागिताई देते हुए, अव्यवर्ती दुर्गा की प्रत्यक्ष सिद्धि करने का सफल प्रयास करेंगे।

२० मार्च को विशेष एवं होने के कारण इस महा-विद्या प्रयोग सम्पन्न करायेंगे, प्रायः स्वयं अनुमान लगा लें कि मुख्य गुरुदेव द्वारा इस महा-विद्या सिद्धि की का दुःख सर्वत्र और साधना सम्पन्न होगी जिसमें—(१) काली (२) तारा (३) घोडशी त्रिपुर सुन्दरी (४) मुक्तेश्वरी (५) किरुमरणा (६) त्रिपुर और (७) बुधकाली (८) कल्याणाम्बु (९) मातंगी-लया (१०) ज्योति महाविद्या साधना की सम्पन्न किया जायेगा।

२१ मार्च को दुर्लभ भोग होने के कारण "ब्रह्म सिद्धि प्रयोग" सम्पन्न कराय जायेगा, जिसमें कि करीब के सम्पन्न कराय जायेगी, इसमें कि मन्त्रोच्चारण से लगाकर साधना प्रयोग के निमित्त सभी जगह के जलमय से साधक स्वयं प्रकृत गुरु बन सकते हैं।

२२ मार्च को "विश्वेश्वरी" होने के कारण सूर्य साधना सम्पन्न कराय जायेगी, एक ऐसी साधना जिसके द्वारा दुर्गा प्रकृति, साधन के निमित्त में ही जाती है और वह प्रकृति में मनोहर दिव्य कार्य सम्पन्न कराने में समर्थ हो जाता है।

२३ मार्च को दुःख भोग एवं सुखभार होने की वजह से सत्त्व विनाशक भगवति प्रयोग के साथ साथ हरिदा गणपति सिद्धि सम्पन्न कराय जायेगी, इस प्रकार भगवती लक्ष्मी और गणपति की संयुक्त साधना जीवन का सौभाग्य कही जा सकती है।

२४ मार्च को "नक्षत्र सिद्धि प्रयोग" दिव्य मन्त्रावा जायेगा जिसमें देव दुर्लभ साधन-र सत्त्व, महिमा

आदि प्रयोग सम्पन्न होंगे कि सत्त्विका पाठकों और मन्त्र साधकों की दुःख गुरुदेव पहली बार सम्पन्न करायेंगे, ऐसा साक्ष्यीय कस्तर और ऐसी दुर्लभ साधना की पहली बार हो इस भगवति सिद्धि में सम्पन्न हो रही है।

२५ मार्च को दुर्गा प्रकृति एवं मनाने के साथ साथ मुख्य गुरुदेव प्रत्यक्ष सिद्धि प्राप्त करने हेतु साधकों के करीब में उस दिव्य तैज का प्रवाह प्रदान करेंगे जिसके माध्यम से प्रत्येक साधना पूर्ण हो सके, सिद्धिपद हो सके, और साधक भगवती दुर्गा के प्रत्यक्ष दर्शन करने में समर्थ हो सके।

मन्त्रादि के ये ती दिन धरने प्राय में दुर्लभ है, प्रत्येक दिन अपने प्राय में एक वर्ष है, साधना की उपायों में प्राप्त करने का प्रयोग है, एक-एक दिन पूर्ण रूप से सिद्धि-साधक एवं देव दुर्लभ बनाने का प्रयास हमने किया है।

अभी से स्थान सुरक्षित करा लें

स्नान की कमी की वजह से यह संभव नहीं है कि भारत में ये सभी साधकों को इस तिथि में प्रयोग दिया जा सके और सिद्धि सिद्धि में तो विदेशों में रहने वाले भारतीय भी भाग लेने के इच्छुक हैं तो उच्च कोटि के सत्त्वगुणी और भगवती, यज्ञः स्थान-भूतता स्वाभाविक है।

ऐसी स्थिति में आज अभी से पीछे खिंचा हुआ "साधना प्रवेश प्रदान" प्रारंभ हमें भेज दें जिससे कि साधका स्थान स्थित हो सकें।

कमाना और भाग्य-की लिये तो पूरी जिम्मेवारी पूरी है, देना दुर्लभ भगवती की सौभाग्य से ही प्राप्त होता है, और फिर साधकों में कहा गया है कि दुर्गा का भोग करके भी ब्रह्म लब्धगति में तो भाग लेना ही चाहिए क्योंकि यह दुर्लभ मन्त्रादि कही जाती है।

आज ही प्रदान करिये और हमें भेज दीजिये, हम साधकों बतायें कि यह मन्त्रादि का वर्ष साधकों लिये कितना अधिक महत्वपूर्ण, दुर्लभ और सौभाग्यशाली हो सकता है।

वर्ष—८

क्र०—१-२

जनवरी-फरवरी १९८८

सम्पादक
नवकिशोर

सं० सम्पादक
योगेन्द्र निमोही

सम्पर्क—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डा० धीमाली मार्व,
हार्डकोर्ट कोलोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राज०)

टेलीफोन: २२२०६

प्रान्तीय भद्राः कृतयो यन्तु विरवतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय युद्ध दिशाओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

ॐ वरे वर्धनु है वदाम्यहे सः श्रियं
स देवान् पुत्रो य कीर्तिरुच नै सहः

यह वर्ष हमारे शिव संवत्सर हो, बरदायक हो, सन्तोष भूक हो हमारे
पुत्र योग्य हो, हमारा परिवार कीर्तिमान् हो, स्वस्थ हो, सफल हो।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं पर अधिकार पत्रिका का है; पत्रिका का दो वर्ष का सदस्यता शुल्क (१३०) रु०, एक वर्ष का (७०) रु० तथा एक अंक का मूल्य (६) रु० है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का मतन होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुत्तों करने वाले पाठक, पत्रिका में प्रकाशित सामग्री को सत्य समझें, किसी स्वान, नाम या व्यक्तता का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई व्यक्तता, नाम या तथ्य मिल जाय तो इसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक सम्बद्ध साधु सम्बन्ध होते हैं अतः उनके पते या उनके बारे में कुछ अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में बाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा, और न इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेदार होंगे। किसी भी प्रकार के बाद-विवाद में जोधपुर आवालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी भावना में सफलता-प्रसन्नता, हानि-नाराज भाव किसी जिम्मेदारों या पाठक की स्वयं की होगी, तथा साधक कोई ऐसी उपासना नय या मन्त्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विरुद्ध हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विचारित सामग्री के संबंध में किसी भी प्रकार की सत्यता या धारितवना-स्वीकार नहीं होगी, पत्रिका में प्रकाशित धार्मिक-बौद्धिक-वैज्ञानिक-सांख्यिक-वैज्ञानिक-विज्ञान-वैज्ञानिक पर ही करें, योगी तन्त्रादी लेखकों के नाम विचार होते हैं, उन पर भाषा का आचरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पत्रिका में प्रकाशित लेख पुस्तकाधार में भी ग्राह्यपत्रक कीमती या सम्पादक के नाम से प्रकाशित किये जा सकते हैं, इन लेखों या प्रकाशित सामग्री पर सर्वाधिकार पत्रिका का या डॉ. नारायणदास कीमती का होगा।

मुद्रक-श्रीरविन्द्र प्रकाशन डा० धीमाली मार्व, हार्डकोर्ट कोलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

विषय-सूची

१-	सम्पादकीय	१
२-	प्रार्थना	५
३-	विषय सूची	३
४-	कृत्या सिद्धि	४
५-	हिमाचल-कुछ नवीन तथ्य	५
६-	कुल्लू शीर तीर्थिक	६
७-	सिद्धाधर्म	७
८-	दे इन्धे गविधारे हे	११
९-	स्वामी विष्णुदास-जिन्होंने नामों में कमल दल सिलाया	१२
१०-	सिद्धसुत्र-स्वर्ण प्रक्रिया का दुर्लभ ज्ञान	१५
११-	कल्पवृक्ष भारत में नहीं, राजस्थान में है	१६
१२-	मैंने अपने विगत जीवन से साक्षात्कार किया	१७
१३-	सामीप्य ! यहाँ बिजड़ा प्रकृति साधना कर रहे हैं	१८
१४-	इन्होंने धोना बनाया और कहाँ	२१
१५-	सीना भी बनाया जाता है	२२
१६-	स्वर्ण अवोगाद्रुसक-जिसमें स्वर्ण विधि अंकित है	२३
१७-	स्वर्ण निमेष	२४
१८-	गुरु साधना सिद्धि ही ब्रह्म सिद्धि है	२५
१९-	बगाल की जाह्नगरनी-जो समुद्र को दित में लेता और रात को मद बना देती है	२८
२०-	सीमा गमन सिद्धि	२९
२१-	देह परिवर्तन सिद्धि	३०
२२-	बहु सम्मोहन प्रयोग : जिसे चिरकुट की सुन्दरी ने मुझ पर किया	३१
२३-	अत्यन्त तीव्र वैशीकरण प्रयोग	३३
२४-	सिद्ध योगीश्वर	३५
२५-	प्रपञ्च-प्रपञ्च-प्रपञ्च ही मैं प्रपञ्च हूँ	३७
२६-	श्मशान शान्त प्रयोग	३८

२७-	इमशान जागरण प्रयोग	३९
२८-	भूतों का वश में करने का यकीन	४१
२९-	पुरुष को वश में परिवर्तित करने का प्रयोग	४३
३०-	प्रीति सिद्धि	४५
३१-	महद्वार भैरवी के अंत चमत्कार, सात साधनाएँ	४७
३२-	घोर साधना	४८
३३-	वःशु यति साधना सिद्धि	४९
३४-	रघुनाथ साधना	५०
३५-	शुद्ध साधना	५१
३६-	भैरव साधना	५२
३७-	उग्र तारा सिद्धि	५३
३८-	जल गमन प्रक्रिया साधना	५४
३९-	आखिर साधना: शिविर क्यों ?	५७
४०-	साधना: शिविर	५८
४१-	मातृसिद्धि: शक्ति	५९
४२-	साधना: सिद्धि	६०
४३-	प्रताप में श्रान्त	६१
४४-	सूर्य: सिद्धि	६२
४५-	बहकते अंगारों पर धिरकता: बुलाव	६३
४६-	मेरे बिटे मे वही करण सीता धीर.... धीर	६४
४७-	अंगारों पर नृत्य	६५
४८-	किसी भी क्षेत्र में सकलता के सात गुण	६६
४९-	आप में अपराजिता शक्ति है	६७
५०-	बहकते अंगारों पर नृत्य	७०
५१-	अब संसार में कोई भी स्त्री असुख नहीं रह सकती	७२
५२-	सौन्दर्य बली	७३
५३-	सौन्दर्य बलि	७५
५४-	तन्त्र द्वारा अद्वितीय योग प्राप्त	७६
५५-	इच्छित वशीय भैरवी हाथों-जिसके पास दुर्लभ तन्त्र है	७८
५६-	प्रिय धरदत्त यन्त्र	८०

विश्व की दुर्लभ

कृत्या साधना-सिद्धि

पत्रिका में पिछले सात वर्षों में सैकड़ों प्रयोग प्रकाशित हुए हैं, और उनमें से अग्रिम प्रयोगों की पत्रिका साठों और साठकों में प्रकाशा, उन्हें सिद्ध किया और समाज तथा देश के सम्मने हजारों लोगों का बीड़ा में उन प्रयोगों को सिद्ध करके दिखा दिया कि आज भी ये प्रयोग यथार्थ हैं, प्रायोगिक हैं और पूर्ण सिद्धि देने में सहायक हैं, इन प्रयोगों के माध्यम से उन्होंने अपने जीवन की समस्याओं को सुलझाया है, समाज के लोगों का दुख दूर कर दिया है, और इस वैज्ञानिक युग में भी विविध रोगों से ग्रस्त असाध्य रोगियों को रोग मुक्ति दिलाई है।

पर कृत्या प्रयोग जैसी उच्चकोटि की साधनाओं की पत्रिका में देने से मैं निरुत्तर बचता रहा हूँ, क्योंकि यह प्रयोग अत्यधिक तीव्र, और प्रभाव देने वाला और अपने आप में धनुर होता है, जिस प्रकार तोप का मोना सही निशाने पर लग कर विस्फोट कर देता है उसी प्रकार यह प्रयोग भी धनुर निशाने से आश्चर्यजनक प्रभाव उत्पन्न कर साधक के मनोरथ को पूर्ण कर देता है।

कृत्या

कृत्या उच्चकोटि का तांत्रिक-मांत्रिक प्रयोग है, जब भगवान् शिव ने दल का युद्ध विजय करने के लिए अपने गर्भों को भेजा और वीरमद जैतु बलशाली यण भी दल के संघों के प्रागे बैबल और असहाय हो गये तब भगवान् शिव ने अपनी बटा में से एक कृत्या का निर्माण किया जो कि अत्यंत विमल बरालनी, भयानक और

पूरी सृष्टि का प्रलय करने में समर्थ थी, जमीन पर पैर रखते ही पृथ्वी अपने भाग में लीने बलकने लगी, दलों दिखाएँ उसकी तुंकार से डोलने लगी और सम्पूर्ण विश्व में बलबली तो मच गई, वह शिव की आज्ञा पा कर दूबरे ही लाख दल की मज्जा जाला में जा पहुँची और सारे यज्ञ की लहलह-महल कर दिया, माय लोगों की तो बल गया, वहाँ बैठे सैकड़ों देवी देवताओं तक को उठा उठा कर फेंक दिया, और यज्ञ के प्रायोजन कर्ता दल का निर एक ही भटके से काट दिया, ऐसा लग रहा था कि मानो कृत्या के रूप में कोई प्रलय उपस्थित हो गया हो जिसके भावे व तो देवताओं की सिद्धि बन जा रही थी, और न दल के संघों का ही कोई प्रभाव व्याप्त हो रहा था, उस कृत्या के सारे शरीर से भाग की नपटे निकल रही थी, जिससे गुप्त संसार लुप्त हो गया, उसके श्रेष्ठ के भावे आकाश और पृथ्वी, पवन और सभी दिशाएं चरचर कंप रही थी और ऐसा लग रहा था कि इसकी शाल करती अत्यधिक कठिन ही गहीं, अतः प्रत्युत धर्मभव है।

तब सभी देवता भयमान शिव के प्रागे सिद्धिगिने लगे, हाथ जोड़ कर दावा मांगने लगे, तब नाकर शिव का श्रेष्ठ कुल वाला हुआ और उन्होंने कृत्या को पुनः शांत कर अपने पास बुला लिया।

बहुत ही कम, गाँवों कहा था कि गिने बुने साठकों या उच्चकोटि के सत्यासिद्धों को ही कृत्या प्रयोग के बारे में जानकारी है, मरुति नेरे पास हजारों सत्यासिद्धों ने तांत्रिकों और योगियों ने अनुभव किया कि उन्हें

कृत्या
टांग
बमत
निए
जीव
कृत

प्रयोग
साध
सक
को

साध
दिशा
लेन
शक
है, घ
है, ए

अपि
उच्च
शास्त्र
रहस्य
है, व

शिव
पुक्त
देना
पक्षी
प्राता

कृता प्रयोग समझा दिया जाय, परन्तु मैं हूँ ऐसा इसे टाकता रहा, पर एत विवेचक में मैं कोई ऐसा धर्मभूत प्रवर्तक प्रयोग देना चाहता था, जो कि पाठकों के लिए विरलप्रयोग रहे, और इसके माध्यम से वे अपने जीवन की सारी कामनाओं को पूर्ण कर सकें।

कृता प्रयोग के नियम

बैसा कि मैंने यह कहा यह सम्पत्ति का तांत्रिक प्रयोग है, परन्तु आप विवेक करी वर्षों से साधक हैं और आप मेरे कई मायकों ने जो मुक्त दीक्षा और बड़ा दीक्षा प्राप्त की है, अतः आप में से प्रत्येक साधक इस साधना को सिद्ध कर सकता है।

१- यह साधना १६ दिन की है, साक्षात्कार साधना है, और इसके मायों की पहिल कर दसिगु दिया की ओर मुंह कर खड़े साधन पर बैठ कर सामने तेल का दीपक जला कर 'कृता' माला से मन्त्र जप साधक करे; यह कृता माला धर्मभूत तरीके से गुंथी हुई होती है, और इसका प्रत्येक मनका अपने आप में मंत्र सिद्ध होता है, एक माता पर अन्य मात्र एक ही पञ्चाक्षर होते पाता है।

२- यह कृता माला केवल इस प्रयोग में ही नहीं बल्कि किसी भी प्रकार की महाविद्या साधना में और सम्पत्ति के तांत्रिक प्रयोगों में प्रयोग की जा सकती है, वास्तव में ही यह माला साधनात्मक संसार का धर्मभूत प्रयोग है, जिसके पते में भी मात्र यह माला पड़ी होती है, उसके द्वारा स्वतः धर्मभूत प्रवर्तक होते रहते हैं।

३- इसके मायों के महामन्त्रों से धर्मभूत निज शक्ति साधना से सिद्ध और सम्पत्तिप्रयोग मुक्त "कृता मन्त्र" किसी तन्त्र के पास में स्थापित कर देना चाहिए और उसकी पञ्चोत्तरा पूजा करने चाहिए, पञ्चोत्तरा में जल, कुङ्कुम, अक्षत, गुग्गुलु और तैल साधना है।

हिमाचल : कुछ नवीन तथ्य

१६-१७-१८ नवम्बर ८७। भूतार में पूरे हिमाचल के साधकों का धर्मभूत सम्मेलन। इन तीन दिनों में पूरव गुरुदेव ने कई नवीन तथ्य उजागर किये, उन्होंने बताया कि मैं इस घाटी में बार पाँच साल तक बिबरण कर चुका हूँ, और यहाँ के अपने अपने परिचित हूँ, इसी क्रम में अपने प्रवचनों में उन्होंने बड़ा अपने बाबा विश्व वनस्पतियों में उन्होंने बड़ा अपने बाबा विश्व वनस्पतियों से बताया, उन्होंने जानकारी दी कि मणि-कर्ण में जो घने पाना का सोता है, वह पीछे पहाड़ों से आता है, ऊपर पहाड़ों में "गन्धकेदवर महादेव" का प्राचीन मन्दिर है, उस गुफा में छत से पानी की एक एक बुन्द गिरती है, और नीचे गन्धक से निर्मित शिवलिंग का आकार बनता रहता है, यह गन्धक से बना शिवलिंग लगभग सात फीट लम्बा और दोनों बाधुओं में आगे लायक घरे से मुक्त धर्मभूत प्रभावकारी शिवलिंग है, जिस प्रकार काश्मीर में बर्फ से निर्मित शिवलिंग अमरनाथ का महत्व है, उसी प्रकार संसार में यह एक मात्र स्थान है, जहाँ पानी की बुन्द से गन्धकेदवर महादेव का निर्माण होता है।

उन्होंने आगे बताया कि मनाली से रोहतांग जाने वाली सड़क पर एक ऐसी गुफा है, जिसमें दो हजार सायक बैठ कर साधना कर सकते हैं, इसकी विशेषता यह है कि गुफा सदियों में अत्यन्त गर्म और गर्मियों में अत्यन्त शीतल रहती है, इसका द्वार बहुत छोटा सा है पर अन्दर से यह इसी विशाल गुफा होगी कि इसका पता हिमाचलवासियों को भी नहीं है।

इसके प्रस्ताव उन्होंने कई तांत्रिकों के नाम और पते बताये जो मनाली रोहतांग के पास-पास साधना सम्पन्न कर रहे हैं, और वे सायक अपने आप में ही प्रसिद्धि है।

इसके बाद बीसवस में बैठकर या सामान्य तरीके से बालबी मार कर निम्न मन्त्र की ११ मन्त्रा मंत्र अप धारणकर है।

४- इस साधना में पुनः प्रवृत्त करने का प्रयत्न करना, एक समय को जित्त कराना प्रयत्नकर है।

५- साधना में काल के बाद इस मन्त्र का हस्त पर गडग लगाया जाता है या मन्त्र में रहित लेना चाहिए यदि मन्त्र लेना तब ऐसा समझ ले हो मन्त्र को तीस विगो तक तो इस मन्त्र को धारण करना हो चाहिए जिसके कि तारे शरीर में कृपया तब तक धार साधक जिस प्रकार से भी चाहे, इसका प्रयोग कर ले।

कृपया प्रयोग सिद्धि

यह साधना सिद्ध होने पर साधक धर्म, समुच्चों पर पूर्ण विजय प्राप्त करने वाला और मन में कलौस बस

धारण करने वाला हो जाता है।

२- ऐसे साधक को कर्त्तव्य सिद्धि प्राप्त हो जाती है, और साधना सिद्धि के बाद वह मात्र एक बार कृपया मंत्र को उपचारण कर कानने बने को जो भी कहा देता है, वह सुनता ही जाता है, एक प्रकार से उसे "बचन सिद्धि" प्राप्त हो जाती है या ही कहा जाय कि उसमें श्राव या वरदान देने को धर्मभूत क्षमता प्राप्त हो जाती है।

३- वह कृपया मन्त्र का जिस व्यक्ति पर या किसी व्यक्ति के कोटो पर जित प्रचार या प्रयोग करे, वह प्रयोग तुरन्त सम्पन्न हो जाता है, उदाहरण के लिए कृपया प्रयोग के द्वारा मारण मोहन, उच्छातन, और बलीकरण तुरन्त सिद्ध होता है, यदि वह कभी भी कृपया प्रयोग का मन्त्र जब कर सामने चाहे व्यक्ति को मन ही मन करे, कि वह ब्रह्म से माफी मांगे या केरा कहा माने या भेरे सामने मिहिमिद्वि तो वह सख्त सम्पन्न हो जाता है, इसी

कुलू और तान्त्रिक

१७ नवम्बर २७। दोपहर का समय। पूज्य गुरुदेव एकान्त भाव से व्यास नदी के किनारे किनारे अपने विचारों में ही लीन बड़े चले जा रहे थे, कि सामने से तीस बालीस तान्त्रिकों का जम- धट था पहुंचा, यों भी हिमाचल में तान्त्रिकों की बहुतायत है और इनमें से कई तान्त्रिक तो मारण मोहन श्रादि साधनाओं में अद्भुत निपुण प्रमाण हैं, ये सभी तान्त्रिक विचित्र वेप भूषा में थे इनमें से कुछ शोध में तो कुछ कापालिक, कुछ मारण प्रयोग में सिद्ध थे, तो कुछ काली साधना के उपासक। सभी को धावें वाल थी, सभी क्रावित अवस्था में थे, इसलिए कि एक बाहर का व्यक्ति हिमाचल में श्रा कर केसे साधना निधि सम्पन्न कर सकता है।

घाते ही उन्होंने ऊन जलूस गालियां देनी शुरू की और बोस कर कहा कि भाज तुम्हारी मृत्यु निश्चित है, और इसी व्यास नदी के किनारे तुम्हारी दाह क्रिया होगी।

गुरुदेव चुप रहे, उन्होंने अपने जीवन में ऐसे संकटों तान्त्रिक देखे थे, उनके मन में कोई भय नहीं हुआ, वे बोले, तब तक तो उन तान्त्रिकों ने अपने अपने मारण प्रयोग, वीरभद्र प्रयोग और भस्म प्रयोग प्रारम्भ कर दिये।

उनमें से एक बड़े डील डोल का लपभग सात फुट का तान्त्रिक सबसे आगे था, और वह कुछ ज्यादा ही ओस में था, उसे कृपया सिद्ध थी, और वह गुरुदेव पर मूठ फेंक कर मारण प्रयोग करने को तैयारी कर रहा था।

प्रकार। इसके माध्यम से किसी पुरुष या स्त्री को सुपुत्र या सस में बना जा सकता है।

४- इस प्रयोग की सबसे बड़ी विशेषता है कि किसी भी प्रकार के रोगी व्यक्ति को देखकर भविष्य कृपा मंत्र से सिद्ध जल सिद्धि या पिता देवी रोग में सुपुत्र सन्तान प्राप्त हो जाती है, इस प्रयोग में जल के प्रत्यक्ष रोगी को चले को सामर्थ्य दी जा सकती है, प्रयोग की रोगी प्रदान की जा सकती है, कमबोरा और इसका रोगियों को उपाय प्रदान की जा सकती है, और छोटे बड़े रोग की दृष्टि बार कहने से भी समाप्त हो जाते हैं।

५- इसके माध्यम से पत्नी-पत्नी का पति पुत्र लिया जा सकता है, किसी को भी जलन कर के सिद्ध प्रयोग में किया जा सकता है, और मनीषाद्विज्ज्ञान कार्य समझ दिया जा सकता है।

६- यदि किसी शत्रु का सर्वनाश करना है तो साधक के लिए साधन साधन है, इस प्रयोग से एक एक करके शत्रु के पारिवारिक सदस्य मरते जाते हैं, यथाशक्त

घर में धान लग जाती है, या दूसरे शब्दों में कहा जाय तो उसका सर्वनाश हो जाता है।

७- इस साधना से साधक को ऐसी सिद्धि प्राप्त हो जाती है, कि वह किसी भी प्रकार के घटोत्तम कार्य को संभल कर सकता है, कहेला कहीं पर भी विचारण कर सकता है, उसे किसी प्रकार का कोई भय नहीं रहता, दूर पर मारण प्रयोग या तांत्रिक प्रयोग नहीं कर सकता और संसार का कोई व्यक्ति उसको टुकसान नहीं पहुँचा सकता।

ऊपर कृपा यन्त्र के बारे में वर्णन किया है, इस यंत्र का कोई भूत नहीं लिया जायेगा, यदि धान पत्रिका प्रत्यक्ष है, तो कपती सन्तानता मन्त्रा लिखें और फिर दो नये पत्रिका प्रत्यक्ष बना कर उनके पुरे नाम व पते लिखें और १४८/८८ का मनीषादेव या वैक दृष्ट कर दें, साधक इस साधन का पत्र प्राप्त होते ही उन दोनों पत्रों को तो पुरे वर्ष भर पत्रिका केजे जाते रहेगी और साधक को यह चदमत्त साधन्यजनक "कृपा यन्त्र" मुक्त है

सभी प्रमाणों एक घटना घटी, नदी के किनारे एक तरफ खड़ी बीस बार्ड साल की यौवन-मयी, कन्या ने धाने बड़ कर उस जन्मे चौड़े डील डील वाले तांत्रिकों के सरदार "रमजान बाबा" की दाढ़ी बाँधे हाथ से पकड़ ली और दाहिने हाथ से दो तमांचे जड़ दिये, बोली- जिस पर तुम प्रयोग कर रहे हो वे मेरे गुरु हैं वे तो जायद मुझे पहिचानते हैं, या नहीं, पर मैं उनसे सीखा है चुकी हूँ और साधना करती हूँ, उन पर प्रयोग करने से पूर्व हिम्मत हो तो पहले मुझ पर विजय पा ले तब धाने बढ़ना।

सरदार पर थपड़ पड़ते ही सब तांत्रिक सन्न भरे रह गये, वह रमजान बाबा कुछ प्रयोग करता उसने पड़ते ही उस धैरवी ने कृपा प्रयोग कर उसे मरणासन्न अवस्था में पटक दिया, सभी तांत्रिकों के क्रमशः विनय पर ही उसका क्रोध क्षान्त हुआ, और उस पर से कृपा प्रयोग हुआ।

बाद में दशा कला कि कृपा यन्त्र की (जिसे बारे में एक स्वतन्त्र लेख इसी संक में जा रहा है) और दो दिन से वह गुरुदेव से बात चला करने की उतावली से, पर उसकी हिम्मत नहीं गई रही थी, जब गुरुदेव को व्यास नदी पर विचारण करते हुए देखा तो उसने क्रमशः परिचय स्वीकृत दे दिया, नदी पर उपस्थित सैकड़ों स्त्री पुरुष, साधक साधिकाएँ घंटे भर तक घंटित यह दृश्य देख कर सन्न थे, बाद में सभी तांत्रिकों ने गुरुदेव के चरण छुए और नदी के किनारे ही उनसे दीक्षा प्राप्त की।

नव वर्ष की श्रेष्ठ स्वरूप प्रदान कर दिया जावेगा, पर वह यन्त्र १५ फरवरी १९८८ तक ही भेजने की व्यवस्था होगी, इसके बाद धनराशि भेजने पर वह यन्त्र प्रदान करना सम्भव नहीं हो सकेगा।

धनराशि भेजने समय ध्यान धरना नाम व मूला पत्रा भी लिख तथा पत्रिका सदस्यता संख्या लिखें तथा उन्हें यह स्पष्ट उल्लेख हो कि मुझे "कृत्या यन्त्र" प्रिजवाया जाय पत्र के साथ जो धरने की पत्रिका सदस्य बनाने है, उसकी रसीद जमाया आवश्यक है।

कृत्या सिद्धि

किसी भी मंगलवार की रात्रि को धासन पर बैठ जाय और यन्त्र की पूजा कर सबसे पहले दाहिने हाथ में जल ले कर, कहे कि मैं यह ११ दिन की साधना कृत्या सिद्धि के लिए कर रहा हूँ।

इसके बाद बाँये हाथ में जल ले कर निम्न मन्त्र से अपने शरीर को कष्ट की तरफ मजबूत बना ले जिससे आपके शरीर को कोई नुकसान न पहुँचे।

देह रक्षा मन्त्र

ॐ अहो सुख समस्त मम देह धावद्ध-धावद्ध बध्ना देह फट्।

इस प्रकार दस बार बोल कर अपने शरीर पर

जल छिड़के।

दस दिशा यन्त्र

फिर बाँये हाथ में चायस ले कर दसों दिशाओं की ओर फेंके जिनसे कि दिशा यन्त्र हो सके, और धार पूर्णता के साथ साधना सम्पन्न कर सके।

मन्त्र

ॐ शिवकृत्या प्रयोगार्थे दस दिशा यन्त्रनाथे कौ-श्रीं फट्।

इसके बाद त्रिव हाथ और यन्त्र का पूजन करें, और फिर कुछ मन्त्र जप करें।

कृत्या मूल मन्त्र

ॐ क्लीं-नलीं धाम्ना मोहये उन्नाटये मारये वचनसिद्धि मम प्राप्ता पालय-पालय कृत्या सिद्धि फट्।

इस प्रकार ११ दिन तक प्रयोग करें और उसके बाद उस यन्त्र को अपने गले में धारण कर ले या बाँह पर बांध ले तो साधक अद्भुत शक्ति और सामर्थ्य अतुल्य करने लगता है, उसके चेहरे पर अत्य तेजस्विता रहितोच्चर होने लगती है, और एक प्रकार से उसे दसों महाविद्याओं से भी श्रेष्ठ तन्त्र की अद्भुत शक्ति कृत्या सिद्धि हो जाती है।

★ महालक्ष्मी साधना शिविर ★

फाताबाद (प्रयोध्या) उ. प्र.

१२-१३-१४ फरवरी १९८८

एक अद्भुत शिविर, पुण्य पुरुषेश श्रीमाली जी के नेतृत्व में दीक्षा संस्कार व साधना-शिवरण हेतु संयोजक श्री मयमल कुमार बनर्जी से सम्पन्न करें।

प्रवासन कुमार बनर्जी १२६, मुनिजी रोड, रिकार्डन फाताबाद - २२४००१ उ. प्र. - टेलीफोन - २४९५

सिद्धाश्रम

सब सिद्धाश्रम सब गोपनीय नहीं रहा, भारतवर्ष का प्रत्येक धर्मपरायण व्यक्ति सिद्ध साधु सन्ध्यासी, योगी, धरि, इस शब्द से भरी भांति परिचित है, यह विषय का विश्वास्त प्राध्यात्मिक पुनीत, पुण्यस्मृत है जहाँ पर प्रत्येक साधक पहुँचने का स्वप्न अपने मन में संजोये रहता है और जो साधक अपने जीवन काल में इस दिव्य आश्रम में पहुँच जाता है, उसका जीवन धन्य हो जाता है, और उसके पूर्वज स्वर्ग में बैठे बैठे उस पर प्राणीवर्त्र की धर्मा करते रहते हैं।

सिद्धाश्रम वास्तव में ही धर्मगत ही महाधर्म आश्रम है, जो कि भारतीय सभ्यता के उदय काल से बसिणीत है, यह एक ऐसा स्थान है, जहाँ पर पहुँचना जीवन का जोधाप्य कहलाता है, यहाँ पर पहुँचने के लिए साधक अपने इन्द्र साक्षना और तपस्या करते रहते हैं, उनके मन की एक ही प्राकाशा रहती है कि किसी प्रकार से जीवन में एक द्वार सिद्धाश्रम पहुँच सकें, यहाँ की माटी की अपने तलाट पर चढ़ान की तरह संवा सके, यहाँ की निर्मल सिद्ध योगा भीत में स्नान कर पूर्ण रूप से रोग-मुक्त हो सकें, यहाँ पर विचरण करते हुए, छोटे छोटे विरुण-विशुभों और करबो-बातकों के साथ खेल सके और ईकड़ी हवाओं से प्राप्त मिठ योगियों के वादन करणों में बैठ कर उनके धर्मोपमा प्रकाश में, उनके दिव्य मंत्रों की हृदय में उकार सकें, और एक प्रकार से देवा जल की जीवन की पूर्णता, जीवन का सामान्य और जीवन का मोह्यन अपने आप में समेट सके।

सिद्धाश्रम

इसका वर्णन विवरण बेवों के प्रादि ग्रन्थ आखेद में पाया है, जहाँ आदि ने आकाशा प्रकट की है कि मैं उच्च

कोटि की साधना सम्पन्न कर अपने जीवन काल में सिद्धाश्रम पहुँच सकूँ और वहाँ प्रकृति के उन रहस्यों को जान सकूँ जो अपने प्राय में प्रसिद्धि प्रयोग और रहस्यमय है, इसके बाद पौराणिक काल में भी कई स्थानों पर सिद्धाश्रम का वर्णन प्राया है, यहाँ तक कि भगवान श्रीकृष्ण ने भी सिद्धाश्रम की दूरी दूरी प्रसंसा की है, भीष्म पितृमह ने भी मरते समय भगवान श्रीकृष्ण से हाथ जोड़ कर बद्गद कट से एक ही याचना की है कि मैं किसी भी प्रकार से सिद्धाश्रम पहुँच सकूँ और उन प्रातःपरायणीक आश्रमों के और अपने पूर्वजों के दर्शन कर सकूँ जो कि अपने जीवन काल में ही, साधना सम्पन्न कर सरीर सिद्धाश्रम पहुँच है।

धार्मिक काम में जो ऐसे कई सिद्ध योगी हुए हैं, जिन्होंने साधनाएं सम्पन्न कर इस महाय पुण्यवाक क्षेत्र में प्रवेश पाया है, और अपने जीवन को सफल बनाया है, स्वामी कृपाचार्य, योगी ज्ञानागद, स्वामी विठ्ठलानन्द वाहिनी महाराज और ऐसे अन्य कई सन्ध्यासी और महेश्वर दोनों ने ही अपने अपने ढंग से साधनाएं सम्पन्न की हैं और अपने जीवन काल में ही सिद्धाश्रम पहुँच कर अपने जीवन को सफल बनाया है।

मानवरोचि और होलाइ परंतु से उत्तर की ओर एक मूल्यपूर्ण स्थान पर यह सोनां सम्भा और बोधा मन्त्र प्रसिद्धि प्रकृति निर्मित आश्रम है, कहते हैं, कि श्री ब्रह्मा जी के आदेश से स्वयं चित्रकर्ता ने अपने हाथों से इस आश्रम की रचना की है, मनवान, विष्णु ने इसकी मूर्ति को प्रकृति की ओर बाधुमन्त्र को सजीव साधन चेतना मुक्त बनाया है और अत्यंत संकर की कृपा से यह आश्रम और धर्म है, इसका तात्पर्य यह है कि इस आश्रम में रहने वाले किसी भी योगी या सत्प्राणी को जरा धर्मात् ब्रह्मात्म्या स्थापना नहीं होती, बल्कि चिरन्तनी चिरन्तनदुःख और मोक्ष मय बना रहता है, साथ ही साव प्रमत्ता का बरतना होने से इस आश्रम में मृत्यु की कानी छाया व्याप्त नहीं होती, यहाँ किसी को मृत्यु हो ही नहीं सकती, इसीलिए इस आश्रम को देवार्थ के लिए कुल्ले और महिषीय बनाया गया है।

आश्रम का मुख्य द्वार अपने धाम में ध्वजिक है, यह सम्पूर्ण क्षेत्र कापाल में उड़ कर आ वायुमय में घूमता हुआ केवरी के माध्यम से नदी देवा जा सकता है, न इसी पोटी अस्मिन् की जा, सकृद्वि है क्योंकि यह अपने धाम में आध्यात्मिक ज्ञान पुत्र है, और अन्त कोटि की साधनाओं से प्रभाव है, ऐसी साधनाओं के धाम विज्ञान योगी ता बन कर रह गये हैं, उसमें यह क्षमता नहीं है कि वह अपने प्रयत्नों से इस आश्रम की देख रकें, न अस्मिन् कर सकें।

इस आश्रम की मनेत्र विवेचनाएँ है, जिसकी इच्छा में ब्रह्मा ही नहीं जा सकता, अस्मिन् ने कहा कि मैं अपने पूर्ण ज्ञान से इस सिद्धाश्रम के आश्रम का धर्म लेखनी के माध्यम से करूँ, यह संभव नहीं है, ब्रह्मा के माध्यम से उच्चरित करूँ तो ऐसा होना प्रथम है, क्योंकि यहाँ परमाणु परमाणु प्रकृति अपने मूल रूप में निश्चिन्त है और इस निश्चिन्त में एक आश्रम का नाम है प्रकाश विधरा हुआ रहता है, जो कि अपने धाम में प्रकृत एवं चान्द-मृत्यु है।

इस आश्रम का विस्तार हीनकी नीला सम्भा और

हीनकी नीला जोड़ा है, यहाँ पर न तो वर्षा पड़ती है, और न विशेष गर्मी, एक मधुर आनन्दबुद्धि मोक्ष बना रहता है, यहाँ पर न तेज हुए पड़ती है और न रात की थंधेरी छाया, मौसमी के पड़ने को मधुर प्रकाश विधरा हुआ होता है, ठीक ऐसा ही प्रकाश पूरे सिद्धाश्रम में विधरा हुआ सुख अनुभव होता है।

इस सिद्धाश्रम के मुख्य द्वार से लगभग बाधा नीला भग्दर जाने पर ही ऐसा लगता है कि जैसे साक्षात् स्वर्ग में ही आ रहे हों, बाँध और अत्यन्त विमान गहरी और निरन्तर प्रवृद्धि विद्व योगी भोजी बहती है, जिसका पानी स्वच्छ निर्मल और पवित्र है, इस पानी की यह विशेषता है कि इसमें लान करते ही तत्काल जीवन के सभी रोग स्वतः समाप्त हो जाते हैं, और व्यक्ति पूर्णतः रोग मुक्त और फिर दीर्घायु बन जाता है, इसकी ब्रह्मात्म्या बनाता हो जाती है, फिर के आने वाले और सुन्दर बन जाते हैं, सारे शरीर की पूर्णता और सुख के बिना बनाता हो जाते हैं, साँसों की रोनी अपने धाम में बर्द जाती है और एक प्रकार से देखा जान तो पूरे शरीर का कामाल कल्प ही जाता है, उसे सम्भा विधरा गहरी होता है, कि शरीर जहाँ रोग मुक्त और इतना स्वस्थ इतना योग्य भव और इतना वैभव बन गया है, उसके हृदय में उदय, उत्साह और आनन्द की हिलोरे उठने लगती है, और सभी धर्मों में यह धर्म कमर बन जाता है।

सिद्धयोगी नीला के किनारे स्फटिक की पारदर्शी गोकार और चम्पू बने हुए हैं, जिस में बैठ कर योगी सत्प्राणी सिद्धयोगी नीला में हर हर तक विचारण कर आनन्द उठाते हैं, प्रकृति के आश्रम को निहारते हैं, जो अपने जीवन को पूर्णता देने का प्रयत्न करते हैं, यहाँ पर सिद्धयोगी नीला के किनारे कुछ स्वस्थ जीवनवान सत्प्राणी साधनाएँ हैं तो यहाँ सिद्धयोगी नीला में समाज करते हुई सत्प्राणी सत्प्राणिनी एक दूसरे पर पानी उछालती हुई खिली करती हुई, हँसी के आवाजों में मग्न है, यहाँ पर नीला के किनारे ही कुछ सत्प्राणिनी सुन्दर

वस्तुओं में पुनर्जित पुनरुत्पन्न प्रयत्नों से वेन रही होती है जो कहीं कुछ सम्पत्ती प्राप्त करने में भी प्रयत्न के महत्त्वपूर्ण पहलुओं को पहचानने का प्रयत्न करते हुए, दिखाई देते हैं।

भीत के दूसरी तरफ ऊँचे ऊँचे देवदास के धने पैदा हो उनको लोभाने छाया घटने धार में धनीयता धन जनित करने है, ऐसा लगता है कि एक ही क्षण में

देवदास लोग कहे हुए इन सम्पत्तियों का अभिनन्दन कर रहे हैं, संसार में जितने तरह के पुण्य हैं, उनमें भी अधिक हमारी प्रकृति के पुण्य होने का चिह्नित रहते हैं, विद्वत्प्रम पर मृत्यु की छाया व्याप्त नहीं होती, इसलिए वे धर्म-धर्म धर्मों की मुक्ति प्राप्त करने लगे हुए रहते हैं, सम्पत्ति करने एक तरह के सिद्धयोगी भीत कह रही है, उनके अन्दर, किन्हीं करते हुए सम्पत्ती, सम्पत्तिनिधि मन्त्री से विचारण कर रही है, दूसरी धीर हरी भी

ये अन्धे गलियारे हैं, जिनमें आप जा रहे हैं।

हम अपने अन्तर्गत सत्य और पुनरुत्पन्न कह रहे हैं, पश्चिम की चकाचौंध में हम अपना अस्तित्व भुला बैठे हैं, हमें अपने आप पर भी भरोसा नहीं रहा है, गराय पीना, सिगरेट के छल्ले बनाना एक फन बन गया है, पूजा पाठ धर्म आदि दक्षिणादूरी माना जाने लगा है, और इन सब का परिणाम हुआ है मानसिक असंतोष, मानसिक तनाव, परिवार में मतभेद, पति पत्नी में लड़ाई भगई, स्वच्छन्द विचारण करने वाले पुत्रियाँ और अपनी इच्छा के अनुकूल कार्य करने वाले पुत्र।

और हम सब यह सब कुछ देख रहे हैं, एक प्रकार से आधुनिक सम्पत्ति का यह जहर पीने के लिए वैश्व है, पर हमें कोई रास्ता सूझ नहीं रहा है, हमको यह समझ नहीं आ रहा है कि घर में सब कुछ होते हुए भी हम अपने दुःखी और परेशान क्यों हैं, वक्तु सम्पदा होने पर भी इतना मानसिक तनाव क्यों है, सब कुछ होते हुए भी इस प्रकार का व्यर्थ प्रेसर और मानसिक दबाव क्यों सहन कर रहे हैं, इसका कारण यह है कि हम अपने पापों के नीचे की धरती को बँटते हैं, हमारी अँधेरी हिल गई है, पूर्वोक्त पर से हमारी आस्था समाप्त हो गई है, सत्य और मन्त्रों का मखौल उड़ाने में हमें वृत्ति अनुभव होने लगी है, और ये ही वे अन्धे गलियारे हैं जिनमें हम आगे बढ़ रहे हैं, अन्धेरे में भटक रहे हैं, बोझों से लिये फँसे रहते हैं, और हमें प्रकाश को कोई किरण दिखाई नहीं दे रही है।

और इन अन्धे गलियारों में लड़ने का परिणाम है, चिन्ता परेशानियाँ दुःख, अग्यासी और स्वास्व क्षीयता, हम ऊपर से बाँधे ऊँचे भी दिखाई दें पर अन्धरे से कोखे हो रहे हैं, और अपने आप में हम भली भाँति परिचित हैं, पर हम पर पश्चिम की सम्पत्ति का ऐसा भूत सवार है कि हम ऊँचों का अपना सब कुछ मान बैठे हैं, और यही हमारे जीवन को न्यूनता है।

आवश्यकता है, अपनी धरती को पहचानने की, अपने पूर्वजों को जानने की, अपने ज्ञान विज्ञान के चिन्तन करने की, और भारतीय संस्कृति और सम्पत्ति अपनाते की, सभी हम इन अन्धे गलियारों से बाहर आ सकेंगे, राक्षसों को पहचान सकेंगे, और मन में पूर्ण आस्था, विश्वास और जीवनन्तता अनुभव कर सकेंगे।

तन्त्रों में सुप्रसिद्ध जुहुनार मण्डली में देवता रही होती है जो कहीं कुछ सत्त्वों का रूप धारण में जोर अद्वितीय के महत्त्वपूर्ण रहस्यों को पहिचानने का प्रयत्न करते हुए, दिखाई देते हैं।

जीन के द्वारा रूप के अंशों में देवता के अनेक रूपों को एक ही रूप में धारण करने का प्रयत्न है, जो एक ही रूप में

देवता को एक ही रूप में धारण करने का प्रयत्न कर रहे हैं, तन्त्रों में जिनमें तरह के रूप हैं, उनमें भी अधिक हस्तों प्रकार के रूप होने का विवरण नहीं है, सिद्धांत पर मनुष्य की छाया व्याप्त नहीं होती, इसलिए वे धि-तोष बढ़ती मुक्ति का रूप लिये लिये हुए रहते हैं, लक्षणों के एक तरह के द्वितीयों को भी कह रहे हैं, उनके लिये, जिनमें लक्षणों का सत्त्व, सत्त्वानिधि मन्त्रों से विवरण कर रहे हैं, दूसरी धीर, हरी, भरी

ये ग्रन्थे गलियारे हैं, जिनमें श्राप जा रहे हैं।

हम अपने श्रापों को मन्त्र और सुसंस्कृत कह रहे हैं, पश्चिम की चकाचौंध में हम अपने अस्तित्व बना बैठे हैं, हमें अपने श्रापों पर भी भरोसा नहीं रहा है, कराव पीना, सिगरेट के धुल्ले बनाना एक फलन बन गया है, पूजा पाठ वर्म श्राप दक्षिणानुसंगी माना जाने लगा है, और इन सब का परिणाम हुआ है मानसिक अस्तित्व, मानसिक तनाव, परिवार में मतभेद, पति पत्नी में लड़ाई झगड़े, स्वच्छन्द विचरण करने वालों पुत्रियों और अपनी इच्छा के अनुकूल कार्य करने वाले पुत्र।

और हम सब यह सब कुछ देख रहे हैं, एक प्रकार से आधुनिक सभ्यता का यह अहं पीने के लिए श्राप है, पर हमें कोई रास्ता सूझ नहीं रहा है, हमको यह समझ नहीं आ रहा है कि घर में जब कुछ होते हुए भी हम अपने दुःखों और परेशानियों हैं, शत्रु सम्पदा होने पर भी इतना मानसिक तनाव क्यों है, सब कुछ होते हुए भी इस प्रकार का खल प्रसार और मानसिक दबाव क्यों सहन कर रहे हैं, इसका कारण यह है कि हम अपने पापों के नीचे की धरती को बैठे हैं, हमारी जड़ें हिल गई हैं, पूर्वजों पर से हमारी श्रापों का सत्त्व हां गई है, तन्त्र और मन्त्रों का मशीन उड़ाने में हमें तृप्ति अनुभव होने लगी है, और ये ही वे ग्रन्थे गलियारे हैं जिनमें हम घागे बढ़ रहे हैं, ग्रन्थों में अटक रहे हैं, दीवारों से तिर फाड़ रहे हैं, और हमें प्रकाश की कोई किरण दिखाई नहीं दे रही है।

और हम ग्रन्थे गलियारों में अपने का परिणाम है, बिना परेशानियों दुःख, अस्वस्थता और स्वास्थ की शोका, हम ऊपर से चारों ओर भी दिखाई दे पर अन्तर से खोखले हो रहे हैं, और अपने श्रापों में हम अन्तर्गत परिवर्तित हैं, पर हम पर पश्चिम की सभ्यता का ऐसा भूत तबारा है कि हम उधों का अपना सब कुछ मान बैठे हैं, और यही हमारे जीवन की न्यूनता है।

भाववचकता है, अपनी धरती को पहिचानने की, अपने पूर्वजों को जानने की, अपने ज्ञान विज्ञान के विस्तार करने की, और भारतीय संस्कृति और सभ्यता अपनाने की, तभी हम इन ग्रन्थे गलियारों से बाहर आ सकेंगे, रास्ते को पहिचान सकेंगे, और मन में पूर्ण श्रापों, विस्वास और जीवननता अनुभव कर सकेंगे।

प्रकृति का स्वरूप अपने आपमें धोखों की बाध होती है, और ऐसा लगता है कि इन 'ब्रह्म' किमती के बीच इन धोखों के पुष्पों के बीच बैठ जाऊँ, सोचों चिन्तनों, पारो सम्पत्तियों सारे हवाब बनने, धामि भुज जाऊँ और एक प्रकार से देवा जाँवों तो दुल्ला धोखों ध्यान हो जाऊँ कि मैं तो कुछ भूत जाऊँ, मुझे अपनी देह का भी भान नहीं रहे, और मेरे पास बुध्दार्थ धर्मज्ञान के छोटे छोटे बच्चे डकुर डकुर मुझे निहाले रहे, धिरन के छोटे छोटे हाथक अपनी शीर्षों से मेरी पीठ कुजाते रहे और मैं पुनः ब्रह्मानन्द में लीन हो जाऊँ, ऐसा स्वप्न प्रत्येक भारतीय प्रत्येक साधक का होता ही है, और यही जीवन का ध्यान है।

धोखा की ही भाँति बहने पर सुन्दर पत्तों और हरी चमकीले से धोखारहित बचते ही मनोहर आनन्द बने हुए हैं, ठीक वैसा ही, जैसे कि हमारे पुराणों में पढ़ें हैं। इस ध्यान में उच्च कोटि के सन्नाहों बैठे हुए, अपने सिमरनों-प्रकृति-तन्त्र-तत्त्वों की, समझ रहे होते हैं,

साधना की उच्च उचाइयों को बना रहे होते हैं, अपनी यष्टि कर कल्पना ही नहीं की जा सकती, हजारों वर्ष की प्रायु प्राप्त से योंही सन्नाहों अपने आपमें आन साधनाओं के सत्कार पुँज है, इनके जीवन का सौभाग्य कहना है इनके चरमों में बैठने से पुनः मानविक मानि प्राप्ति होती है और इनके द्वारा जो आन प्राप्त होता है, वहका वर्णन विषयी कर ही नहीं सकता।

ऐसे महापुरुष प्रकृति भिन्न ही साधे, सत्य मानि हैं, इनके हृदयों में कुशाग्र, और, भावपूर्ण, एक ही एक दिवार्द होती है और अपने धार में सारिकता का उदाहरण है, यहाँ किसी प्रकार की तड़क-पड़क नहीं है, धार भीति नहीं है, बस और सुन विधायक नहीं है, जो कुछ है अपने आप से स्पष्ट है, सही है, प्रामाणिक है।

कहते पर धन भुज से वातावरण बचते ही सुगन्धित हो रहा है, वैदिक मानों के माध्यम से यज्ञ सम्पन्न करते

स्वामी विशुद्धानन्द : जिन्होंने नाभि में कमल दल खिलाया

क्या शिष्यों ही मन्त्रान्तर करने में संलग्न हैं, क्या पुरुष चाहते पर भी अपनी कोख से मन्त्रान्तर उत्पन्न नहीं कर सकते, विज्ञान इन प्रश्नों को सोच रहा है, हमारे पुराणों में इस प्रकार की कई बातें गुनने की मिथित है कि भगवान् विष्णु ने अपनी नाभि में मृताधार को जगत् कर कमल दल निकाला जिस पर ब्रह्मा बैठे हुए थे, इस प्रकार ब्रह्माकिन्ती के गर्भ से उत्पन्न हो कर पुरुष-नाभि से उत्पन्न आकाश है, इसी प्रकार बलिष्ठ, विश्वासिन् धादि क्षुपि भी किसी गर्भ से उत्पन्न न हो कर ब्रह्मा की नाभि से उत्पन्न हुए हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि यदि कुछ विशेष साधनाएं सम्पन्न की जाय, तो तबिन से कमल दल विकसित कर उसे प्रकार दिया जा सकता है और मनोबोधित मन्त्रान्तर उत्पन्न की जा सकती है।

स्वामी विशुद्धानन्द भारत के मद्रितीय तत्त्वज्ञ और सिद्ध योगी थे उन्होंने अपने तात्त्विक चमत्कारों से सैकड़ों लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया था, अंग्रेज अधिकारी भी उनके तात्त्विक चमत्कारों से अभिभूत थे।

एक बार वे मसनद पर बैठे हुए थे पास में ही गोपीनाथ कबिराज, धादि उल्लेख शिष्य बैठे हुए थे, सबों के दोरान इसी प्रकार का प्रसंग उपस्थित हो गया और किसी एक शिष्य ने पुराणों में छपी हुई इन घटनाओं पर संदेह प्रकट किया।

हुए, हमारी मान्यताओं का क्या देखते हैं? मरता है, कहीं पर किसी बुद्ध के लोच, फलपत्र ही पुत्र, महत्त्वपूर्ण योगी प्रार्थी साधना में निमग्न है और उसके पास ही संकटों प्रकाश के पक्षी कलरव करते हुए सुनाई पड़ते हैं, कहीं पर स्कटिक पक्षियों से निर्मित कालीमान अन्ध भवन है, वहाँ पर कुछ महत्त्व साधक अपनी साधनाओं में मग्न है जिसकी कक्षा पर दृष्टि है वे कहीं पर निष्ठा का सबूत है विचरण कर सकते हैं, अवलोकन कर सकते हैं कहीं पर भी किसी प्रकार का दुःख क्षिप्त नहीं है, रोक टोक नहीं, सब प्रवृत्त नहीं है, पञ्चम, डेप वास्तविकता, जोध और प्रवृत्त से परे वे सभी साधक-साधिकाएँ एक शरीर की मस्ती में शरीर की सुभाषी, शरीर से बाह्य-बाह्य में मग्न हैं, मस्ती से भरे हैं मानव से सरोबार हैं।

पर यह ध्यान पूर्वक: मुख्यस्वित्त और नियमों से बाधक है, अनुमान दुष्ट है, इसके संचालक हज़ारों वर्षों की प्रायु प्राप्त महायोगी स्वामी तन्त्रिदानन्द जी हैं

जिनका नाम ही संगी की तरह गति और विद्यालय की तरह विराट है, जिनके दर्शन करने के लिए देवता लोग भी तड़के हैं, जो ज्ञान और तपस्या के साकार पुत्र हैं, जिनके रोम-रोम से ज्ञान और मानन्द की, त्याग और तपस्या की सहरियाँ दिखती रहती हैं, उनके अनुशासन में यह हज़ारों वर्षों के धार्मिक सुव्यवहित है, संघातित है।

यात्रा भी इन सभी कलाओं में वे दोनों और पुराणों में वर्णित उन उच्चकोटि के योगियों और श्रमियों की अपनी धार्मिकों से देख सकते हैं, वसिष्ठ, विश्वामित्र, कणाद, ऋषि, पुनस्तव, गौतम, भीष्म, मुनिवर और श्रीकृष्ण जैसे योगियों को आज भी अपनी धार्मिकों से देख सकते हैं, उनसे वातावरण कर सकते हैं, उनके पास बैठ कर उच्चकोटि की साधनाएँ सम्पन्न कर सकते हैं, इससे बड़ा औभाव और हज़ारों जीवन में क्या हो सकता है, इस धार्मिक में प्रवेश के भी अपने नियम हैं,

स्वामी विद्यादानन्द जी ने कहा-पुराणों में सभी हुई सारी घटनाएँ प्रामाणिक और सत्य हैं, हममें इतनी शक्ति और सामर्थ्य नहीं है कि इस प्रकार की साधनाएँ सम्पन्न करें और इनकी सत्यता परखें, यदि हम कहीं तो भी नाभि से कमल दल विकसित कर दिखा सकता हैं।

जिध्यों के हाँ मूर्ते पर उन्होंने लटे-लटे ही गेट को गड़दा बना दिया, और हाथों से नाभि को पकड़ कर चौड़ा किया, जिध्यों ने यह करने से देखा कि नाभि में से एक कमल ताल निकली और लगभग तीन घंटे तक ऊँचाई पर गई और ऊँचाई पर ही पूर्ण लाल रंग का ब्रह्म कमल विकसित हुआ।

सभी लोग आश्चर्य से देख रहे थे, स्वामी जी ने कहा कि यदि बाह्य तो अपने ही समान पुत्र निर्माण इस कमल दल पर कर सकता हूँ, पर फिर कुछ सोच कर उन्होंने धीरे धीरे ब्रह्म कमल और कमल ताल को नाभि के अन्दर धबाया और हाथों से पेट को समतल कर दिया, और वापिस वैसी ही अवस्था में जिध्यों के सामने बैठ गये जो पहले की अवस्था थी।

विज्ञान इसी दिशा की ओर बढ़ता है, और परख नली शिशु के बाव विज्ञान इस ओर प्रयत्नशील है, कि मानव को कल से ही पुत्र उत्पन्न किया जाय, और यदि वे पुराणों का आधार हैं तो अवश्य ही इसमें सफलता पा सकते हैं।

कींदों भी वायु कहें भी यो योवा वा कींदों भी
 संगीसी बरती चून्ना है इह पाथम मे, प्रदेन ज्यो, वा
 सकता, यवति उत अम का द्यव, उत प्रम का लक्ष्म एक
 ही है कि वे विराजत में प्रेये वा लक्ष्म । लक्ष्म प्रेये
 पावे के बाव उतमें प्रेये प्राप में ऐसी लक्ष्मा, प्रेये ही
 ज्यो है कि वह सङ्करी अथ भी ज्यो लक्ष्मा वा लक्ष्मा
 है, तसाम में लक्ष्म भी विराजत कर सकता है, सङ्करी
 वायव्य लक्ष्म में वा सकता है, मोर वा कहें, त वं वा
 लक्ष्म प्रेये है इह पाथम मे, भी वा लक्ष्म ।

इस अभिषेक में प्रवेश पाने के लिए दत्त महाविद्यालयों में दो महाविद्यालयों की भर्तीवा विद्यार्थ्या-त्रयी है, यह बुरी है कि यह अपने मुँह से कहा जान की दोषा है, या ही इन महा विद्यालयों की मान्यता प्राप्त करने पूर्ण उपनिषद् प्राप्त करे और समस्त जनों की भजन-धर, सुख-धर बन करे।

हल्के बाद भी यह आवश्यक है कि ऐसा साधक ने
साधनाओं को सम्यक् करने के बाद तभी विद्यालय में
प्रवेश को वाकफ़ोई जल्द करे। अपने साथ उसे विद्यालय में
गये, और यहाँ भी समर्थ है जब उसको एक छात्रों के
कोटि की साधनाओं से दृष्ट हो, जो उसको स्वयं का हस्त
नग्न हो, और यह विद्यालय में प्रवेश पात्र हो,
विद्यालय में प्रवेश पात्र हो, दृष्ट हो प्रवेश पात्र हो,
को विद्यालय में प्रवेश पात्र हो, दृष्ट हो प्रवेश पात्र हो,
विद्यालय में प्रवेश पात्र हो, दृष्ट हो प्रवेश पात्र हो,
विद्यालय में प्रवेश पात्र हो, दृष्ट हो प्रवेश पात्र हो,

आज भी पूरे भारतवर्ष में मानव जनति ऐसे योगी प्रौर
गृहस्थ मिश्रजन हैं जो सिद्धाधर्म में प्रवेक पा चुके हैं,
समर्पित रह जा चुके हैं उनसे लिए बहाना जाता प्रौर
यह पा प्रत्यक्ष सामान्य प्रौर सतत है। उन्होंने शास्त्रनों
की उन्नतता प्राप्त की है। प्रौर ऐसे हीने सिद्धाधर्म का
तात्पर्य मुझ अपने दिवसे का भवो अंतर में मानवजन

कर सकते हैं, उन्हें साधना विधियों में ध्यानाविवृत कर सकते हैं, साधना को बाधो किवाँ समझ सकते हैं, महाविद्याओं को सिद्ध करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं, प्रह्व शीघ्र देकर सर्वाँ के आनन्द को किना समझ सकते हैं, और उनका सर्वस्व जानूँ कर सिद्धाश्रम में प्रवेश दिलवा सकते हैं।

[illegible]

इस लेख के माध्यम से मैं समूची साक्षकों और मुक्त
भारतों के माध्यम करती हूँ कि वे इस लेख अप्रत्यक्ष
आपको अपने हृदय कर सकें मुक्त और जिम्मेदार के अपने
आपको विचार कर नए युद्धों साक्षकों के साथ वे अपने, पूर्णता
प्राप्त करें और अपने जीवन काट दें, ही मुक्त विचारों
में प्रवेश करें करें, विचारों के इसका प्रभाव है, इसकी
आपकी प्रकाश कोशों उनकी प्रतीति और उनकी प्रभावता
को समझ कर सकें, अपने युद्धों और युद्धों के दुर्जन
कर उनकी शक्ति में बंद बन्नी की आकाश समान सके,
परन्तु के, प्रभावों को मुक्त बन्नी, और जीवन की पूर्णता
दे सकें।



वि.
घना
इस

कन
र्यों
शा
धीर
देश।

राज
राज
की
गारे
है,
गोरी
मान
मान
से
प्रका
शोन
य है

तुल
मयी
एने
मना
दम
रकी
गता
होन
हक
गता

सिद्धसूत

स्वर्ण प्रक्रिया का दुर्लभ ज्ञान

आज भले ही स्वर्ण प्रत्यक्ष बहुमूल्य धातु दुर्लभ धातु बन गई हो पर इसके प्रति मोह धीरे धीरे काटकर निकले विषय में प्रारम्भ से ही रहा है, हमारे पूर्वजों धीरे विविध कर रसायनियों ने प्रारम्भ से ही इस बात के प्रथम करने प्रारम्भ कर दिये थे, कि वे लोहे, तांबे या पारे जैसी माधारण धातुओं से स्वर्ण जैसी बहुमूल्य धातु बनाई जाय इस माधारण धातुओं को परिशोधित कर स्वर्ण में बदलने के लिए उन्होंने सम्भोर प्रयोग किये और उसमें सफल भी हुए, ऐसे रसायनियों में धनवन्तरी धम्मक, गणार्जुन प्रादि रसायनविद्वत् सन्तुष्ट प्रसिद्ध रहे हैं और उन्होंने इन प्रक्रिया के रूप में सफलता प्राप्त कर यह प्रमाणित कर दिया कि वास्तव में स्वर्ण वास्तव में स्वर्ण में परिवर्तित किया जा सकता है।

गणार्जुन का प्रसिद्ध ग्रन्थ "स्वर्ण तन्त्रम्" कोमिया पाण्डु प्रसन्न रसायनियों के लिए सज्जन होता के समान रही है, उसमें लोहे, लोहे या लोहे से स्वर्ण बनाने की प्रक्रिया प्रतीति का निरूपण कई है, साधारणतया ४० विधियों की प्रायोगिकता के साथ स्पष्ट किया है, जिनके उम्मेद सफलता प्राप्त की थी।

गणार्जुन का सारा जीवन इस प्रकार के अध्ययन चिन्तन और परीक्षण में ही व्यतीत हुआ, वह प्रत्यक्ष जनार्दन और मन्मथनीय पिता का पुत्र था परन्तु उसने इस शक्तिशाली सीखने के लिए, समझने के लिए प्राचीन

ग्रन्थों का अध्ययन किया, सुदूर जंगलों और हिमालय में रहने वाले साधुओं से सम्पर्क किया और विभिन्न परीक्षण प्रयोग करता रहा, एक प्रकार से देखा जाय तो उसने धवनी सारी पूंजी इस प्रकार के कार्य में लगा दी, यहाँ तक कि अपना घर बेच दिया, एल्मी से मतभेद होने की वजह से प्रसन रहने लगा, और इस परीक्षणों पर निरन्तर खर्च होने रहने की वजह से वह दरिद्रतावस्था में आ गया, फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी, उसका यह पक्का विश्वास था कि मैं सफल ही इस कार्य में सफलता प्राप्त करूँगा और अन्त में जीवन काल में ही एक न एक दिन हास्यार्ण धातुओं की स्वर्ण में परिवर्तित करके दिखा दूँगा।

गणार्जुन के जीवन का अध्ययन करते हुए पता चलता है कि जब दृढावस्था तक की उसे समुपार्जित सफलता नहीं मिली तो एक दिन सफलता धाम और लुब्धो हृदय से अपने धातुधर्मों धीरे धीरे हुए परीक्षणों के पक्ष को लेकर नदी किनारे जा पहुँचे, धन उनके लिए घाते अर्थ की कमी के प्रत्यक्ष और परीक्षण करना संभव नहीं था, इसलिए वे हाता धीरे निराश हो कर उस दुष्प्रकार का एक-एक पल्लु नदी में बहाते रहे।

उन्ते कुछ ही दूरी पर धावे एक वैश्या स्नान कर रही थी, उसने उन बहने हुए हस्त विविध रत्नों को अपनी पीठ पीछे देखा और एक बाध करने की पक्का, उसे वे परीक्षण सफलता सुखदायक और अनुभवमय प्रतीत

हूय, यह स्थान बार मंदी के किनारे-किनारे घागे बड़ी तो देखा कि एक संजस्वी, पर बूढ़ जर्जर व्यक्ति अपनी हस्त लिखित पुस्तक के एक एक पन्ने को पानी में डीक रहा है, पणिका ने उसका हाथ पकड़ कर ऐसा करने के लिए उसे रोका तो उसने गिराफा मरे स्वर में कहा-मैंने इन पुरोसलों में अपने पिता की धीर स्वयं की सारी सम्पत्ति स्वाहा कर दी, अपना सारा जीवन दाव पर लगा दिया, पर घात में मुझे गिराफा के बलाबा धीर क्या मिला ?

गणिका ने कहा-मुझे आप में प्रतिभा और तेजस्विता

नजर आ रही है आप एक बार फिर मेरे घर चल कर परीक्षण करें, इसके लिए मैं आपको जितना माय चाहे धन प्रदान करूँगी।

ये मन से मागानु'न गणिका के साथ उसके घर की धीर चल पड़े धीर नहीं आ कर उसने पुनः "हिडबूत प्रक्रिया" का प्रयोग किया, संयोगवश कृष्णार्द्र में वह रत्ना-यन गर्म हो रहा था कि किसी कार्य से मागानु'न उठे, ऊपर लोहे की कील इन्टिमोथर 'न होने की वजह से उनके निर में यह कील घस गई धीर रक्त की कुछ बुन्दें

कल्पवृक्ष भारत में नहीं, राजस्थान में है

क्या वास्तव में ही भारतवर्ष में कल्पवृक्ष है, या यह केवल कल्पना ही है, क्याभी धीर पुराणों में पढ़ने को मिलता है कि कल्पवृक्ष अपने आप में देववृक्ष है जिसके नीचे बैठ कर जो भी इच्छा की जाय, वह पूरी होती है, तो क्या ऐसा कल्पवृक्ष भारतवर्ष में कहीं पर है।

वैज्ञानिकों ने इस संबंध में शोध किया है, धीर उन्होंने पाया है कि कल्पवृक्ष की जाति का ही एक नर और मादा पेड़ पूरे भारतवर्ष में केवल एक ही स्थान पर है जो राजस्थान में घाया हुआ है।

जयपुर से जोधपुर आते समय इस के रास्ते से मार्ग में मांगलियाबास एक गांव घाटा है, इस गांव से केवल पांच सौ गज की दूरी पर यह नर और मादा का प्राद्वितीय कल्पवृक्ष अपनी शान से खड़ा हुआ है, भारत सरकार के अधिकारियों ने भी इसको माना है और इससे संबंधित पत्थर पर लिखा हुआ है, वनस्पति विधेयकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि वास्तव में ही यह अपने आप में एक प्राद्वर्चजनक पेड़ है, जिसका जोड़ पूरे भारतवर्ष में अभ्यव कहीं पर भी नहीं है।

मैंने इस कल्पवृक्ष को कई बार देखा है, मैं यह तो नहीं कह सकता कि इसके नीचे बैठ कर जो भी इच्छा की जाय, वह इच्छा तुरन्त पूरी हो जाती है, परन्तु मैंने कल्पवृक्ष के नीचे बैठ कर हर बार कोई न कोई इच्छा व्यक्त की है, धीर साल छः महीने में वह इच्छा धवस्थ पूरी हुई है, इससे मेरा विश्वास और भी अधिक बढ़ गया है।

भारतवर्ष में ही यह एक प्राद्वितीय प्राचीन वृक्ष है, जिनके तने को देखने से ही पता चल जाता है कि यह असाधारण वृक्ष है, बारह साल में एक बार इस पर फल लगता है, जिसे कल्पवृक्ष फल कहते हैं धीर सोभाग्यवाली व्यक्ति को ही ऐसा फल देखने को या प्राप्त करने का सोभाग्य मिलता है, जिस घर में भी यह कल्पवृक्ष फल होता है, उसके घर में सभी इष्टियों में निरन्तर उत्पत्ति होती रहती है।

कड़ाई में गिर गई।

और गिरने ही मद्भुत बलाकार हुआ, ओ कड़ाई में
गिरने का दुःख उस साधन के साथ उभर उठा था
यह कुछ स्वर्ग में परिवर्तित हो गया, मन्त्राकुत की प्रस-
स्ता का कोई छिछोरा न रहने और वे पुरे दिव्य में सर्व-

श्रेष्ठ सम्माननीय रत्नगिरि के रूप में मिले जाने लगे,
और उनका अतिरिक्त रूप कल्पित हो रूप प्रस्था में
नम्रमाननीय रूप के व्यक्तित्व हुआ।

सिद्धसूत

आने बन कर यह विधान साधकिक विनियमित हुआ

मैंने अपने विगत जीवन से साक्षात्कार किया

जब तक अपने पूर्व जीवन को देख नहीं लेते तब तक वर्तमान जीवन को भली प्रकार से समझ भी नहीं आता, कई बार हम भगवान की लीला को विचित्र मान बैठते हैं, कुछ सदाचारी ध्यान, पूजा पाठ करने वाला व्यक्ति दरिद्र बना रहता है, और मांस मदिरा का सेवन करने वाला तथा पर रक्षी मायी साखों में केजरा है, जब कुछ सात्विक अन्नान स्त्री के पति की मृत्यु हो जाती है, जब बाप के सामने बेटे की अर्था निकलती है, तो मन विलुप्ता से भर जाता है, भगवान के सहो यह कैसा न्याय है, जब कि इसने अपने जीवन में चोटी को भी सजाया नहीं है फिर इसे इतना दायण दुःख क्यों ?

इसका उत्तर वर्तमान जीवन के कार्यकलापों से नहीं मिल सकता, इसके लिए व्यक्ति का विगत जीवन देखना आवश्यक होता है जो इस जीवन से पहले का जीवन था, उस जीवन में कार्यों के प्रवृत्ति और भुरे फलों का परिणाम की इस जीवन में भोगना पड़ता है और जब व्यक्ति का विगत जीवन देख लिया जाता है तो भगवान की लीला और उसका न्याय पूरी तरह से समझ में आ जाता है।

इसके लिए तन्त्र श्रेष्ठ में एक महत्त्वपूर्ण साधना बताई गई है, जिसे "पूर्व जन्म साधना" कहाँ गई है, यह २१ दिन की साधना है, और इसमें निम्न एक ही एक माना मन्त्र जब "पूर्व जन्म स्वयं धन्य" के सामने कमल गुरु को माला में सम्पन्न किया जाता है, इसके अलावा अन्य सभी के ही विधि विधान है, जो साधना के लिए आवश्यक होते हैं, यह साधना सिद्ध होती है व्यक्ति को जहाँ अपना विगत जीवन साफ-साफ दिखाई दे जाता है वहाँ उसे किसी भी सामने वाले व्यक्ति पुरुष या स्त्री का विगत जीवन भी देखने को मिल जाता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं परम परम विगत जीवनाय अमुकं मे दृश्यं कुरु ।

वास्तव में ही मैंने इस साधना को निश्चय किया है और मैं आश्चर्यचकित रह गया हूँ जब मैंने अपना विगत जीवन और दूसरों का विगत जीवन देखा है, तो मुझे विश्वास होने लगा है कि भगवान के घर में न तो अन्धेरे हैं और न अन्याय है, मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल उसे भोगने के लिए वाप्य होना पड़ता है।

धीरे धीरे स्वयं बनाना सिद्धमूल के माध्यम से अत्यन्त मानस प्रक्रिया बन गई। आज से बी सौ तीन सौ वर्षों से सिद्धमूल बनाना अधिकतर मन्त्राधिकारी और उपाध्यायों को ज्ञात था, कहते हैं कि वाराणसी में एकदा विष्णुनाथ महादेव के मन्दिर के दोनों प्रमुख द्वार को कि-०-३ भग्न करने लगे थे, एक सन्त ने सिद्धमूल के माध्यम से प्राकालीन धार्मिक अंग्रेज क्लैन्टन धीरे धीरे के माध्यम से परिशुद्धि लाया दिया जिसे वे, एक क्षण में ही लोह की डोल रॉके में परिवर्तित होकर देख कर वे आश्चर्यचकित रह गये, वन्धु ने हमारा यक्षत की वजह से वे द्वार वहाँ से विरुद्ध चले गये पर इस घटना का प्रामाणिक विवरण ध्याय की विरचना मन्दिर के चौबारे में जैसे हुएसंगमरमर पत्थर पर अंकित किया जेठ से स्पष्ट होता है।

कुल विशेष प्रक्रिया से सिद्धमूल बनाया जाता है, जो कि भूरे रंग के पाउडर की तरह होता है, पर वह अत्यन्त मूल्यवान और दुर्लभ पदार्थ माना जाता है, जैसे की पानी में मिलो कर यदि उस पर घुटकी भर सिद्धमूल

का पाउडर डाल दिया जाय तो एक विशेष प्रकार की रसायन प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है, धीरे धीरे लोहा धुल्ल स्पर्श में परिवर्तित हो जाता है, यही प्रक्रिया लोहे पर भी सम्पन्न की जा सकती है,

यह विद्या कभी तक भी खोप नहीं हुई है परन्तु बहुत ही कम अन्वेषकों के योगियों या सम्प्रदायों को ही इस विधि का ज्ञान है, विशेष से स्वयं सिद्धमूल प्रक्रिया का दुर्लभ ज्ञान पैदाय को प्रसिद्ध थापमती तबी के उस पार रहते धामे प्रसिद्ध योगी सम्प्रदायज जी महाराज से सीखी थी धीरे धीरे हाथों से कई बार सिद्धमूल बनाकर उसका परीक्षण लोहे पर धीरे लोहे पर करते यह अनुभव किया था कि यह विद्या ध्वने धाप में धातुसंयोजक परिणाम देने वाली है, इसके माध्यम से कुछ ही मिनटों में रसायनिक प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है धीरे लोहा धुल्ल ठोस धुल्ल की टन्य बने होने में परिवर्तित हो जाता है।

महात्मा गांधी के समय में भी पंजाब के प्रसिद्ध वैद्य हरी प्रसाद श्री ने बिड़ला भवन में बिड़ला जी, महात्माजी

खामोश ! यहां त्रिजटा अघोरी साधना कर रहा है

देहरादून से सहज धारा और सहज धारा से १५ मील दूर भैरव पहाड़ी जिसकी बड़ाई अत्यन्त कठिन और विजट मानो जाती है, सारा पहाड़ी क्षेत्र जंगली हिसक पशुओं से भरा पड़ा है और पहाड़ी की सकसे ऊंची चोटी पर स्थित है महाकाज रौंर भैरव का मन्दिर, जो अपने आप में सप्ताश, स्रक्षत है और यहीं पर साधना कर रहे हैं संसार के तांत्रिक शिरोमणी त्रिजटा अघोरी।

त्रिजटा अघोरी का नाम लेते ही शरीर में कंपकपी सी लूट जाती है, सम्बा बौड़ा डोल डोल भारी भरकम शरीर इस पर भी पुरी इतनी कि एक ही सांस में ऊबड़ खाबड़ पहाड़ी पर दोड़ते हुए चढ़ जाना, शरीर में यल इतनी कि दो मजबूत जवान सोडों को दोनों हाथों की मुठियों में पकड़ कर परस्पर भिड़ा देना, कहाबर जगली बकरे की एक ही हाथ में पकड़ संकड़ों फीट ऊपर उछाल देना और बोली ऐसी कि जैसे दो अवाक बाइल आपस में टकरा कर गर्जना कर रहे हों।

पर तन्त्र के क्षेत्र में यह व्यक्तित्व अपने आप में अपराजेय है, कठिन से कठिन तांत्रिक साधनाएं सिद्ध कर रही है, शोध साधनाओं से लगाकर दमजान साधनाओं तक में अपने आप में अपराजेय और अग्रजिन है यह सिद्धाधम का एक मात्र ऐसा सिद्ध योगी है जो केवल तन्त्र के बल

जो और गोरी जी के तानने वाले थे। सिद्धजन्म के माध्यम से तन्त्र को स्वर्ण में परिवर्तित करने के लिये ध्याना, शक्ति की विह्वला, मन्दिर में जिस वस्त्राश्रय धारणी ने प्रकटात्मा का चरणानुत्थान शुरू कर दिया था, वह वस्त्राश्रय को स्वर्ण में निहित है, जो गोरी जी के सामने बनाया गया था, गोरी जी ने उद्वेग को धरी धरी प्रकटा करके हुए कहा था कि हमें अपनी प्राचीन विद्याओं पर गर्व होना चाहिए, जब सारा विश्व व्यवस्था और संप्रदाय के प्रारम्भिक अवस्था में था, तब हम सम्पत्ति के उन स्तर तक पहुँच गये थे, जहाँ कि तन्त्र या तोहें को स्वर्ण में परिवर्तित करने की किंदा सोच की थी, तब तक ही थी, और प्रयोग की थी।

बाद में महमदाबाद के प्रसिद्ध वैद्य होराजी भाई ने १९११ में प्रसिद्ध वास्तविक और मंत्रियों के सम्मलेन सिद्धजन्म बना कर उसके द्वारा तांत्रिकों को स्वर्ण में परिवर्तित कर के दिखा दिया था। इसी प्रकार कुछ वर्षों पूर्व स्वामी विष्णुदासजी ने वास्तविकता में सबकुछी प्राप्ति में कई उपस्थित विद्वानों के सम्मलेन सिद्धजन्म को प्रकटा किया था।

कर्मों का ध्याना और अपने हाथों से सिद्धजन्म बनाकर उनके माध्यम से तोहें को, तथा तांत्रिकों को स्वर्ण में परिवर्तित कर के दिखा दिया था।

सन् १९१८ में जालन्धर के प्रसिद्ध वैद्य हितारामजी ने सम्पत्ति महत्त्वपूर्ण १० से अधिक उपस्थित सर्वस्वों के सामने सिद्धजन्म पर विस्तृत प्रवचन दे कर उनके धनुरोक्त पर कहीं पर खड़े-खड़े घबरे में ही सिद्धजन्म बना कर उनके माध्यम से तोहें को स्वर्ण में परिवर्तित कर के दिखा दिया था।

सन् १९१९ में कलकत्ता में भी वे ज्वादा गण्य गण्य उपस्थित व्यक्तियों के सामने योगीराज हरीन्द्र जी ने तानाबार के सिद्धजन्म के माध्यम से स्वर्ण प्रक्रिया का विस्तृत परिचय दिया था और तांत्रिकों को धैर्य की दृष्टि से परिचित कर यह सिद्ध कर दिया कि ध्यान के युग में भी यह सिद्ध प्रक्रिया के साथ जीवित है, और इसके माध्यम से सामान्य छात्रों को स्वर्ण में ही बहुमूल्य प्राप्त में परिवर्तित किया जा सकता है।

पर सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सका है, काया कल्प करना, वृद्धावस्था को मिटा कर पूर्ण यौवनमय बना देना, प्राणाश में विचरता करता और अपने प्राणों को शरीर से निकाल कर दूसरे मुद्रा शरीर में प्रत्यक्ष संपर्क कर परकाया प्रवेश सिद्ध कर देना इस तांत्रिक के लिए बड़े हाथ का खेल है, इतना होने पर भी तन्त्र इतना कि बालक सा सरल स्वभाव और प्रकृति मुस्कुराहट है।

पुरुष मुखदेव के शिष्य होने के बावजूद भी उन्होंने तन्त्र के क्षेत्र में कई कीर्तिमान कायम किये हैं, और एक बार जब साधना में बैठ जाता है तो बिना हिले हुले बिना कुछ लाये पीये, बिना ध्यासन से उठे बोल पच्चीस दिन तक एक ही ध्यासन पर बने रह कर साधना सिद्ध कर के ही अपने ध्यासन से उठते हैं, भूत प्रेत तो जैसे इसके लेक-लेविकाएँ हैं, यह उनकी बुद्धकता है, हाँडता है, फटकारता है और कभी कभी क्रोधावेश में उन पर सात प्रहार भी कर लेता है।

कौड़ी भी गुरु भाई विजडा के पास जा सकता है, उसके पास बैठ सकता है, यदि मन में बल और साहस है तो उनसे सीख सकता है, कई मायकों ने वहाँ से वापिस पा कर बताया है कि यह अद्भुत व्यक्तित्व है, वादान की तरह जो ऊपर से कठोर है, पर अन्दर से सत्यविक नरम, मधुर और ध्यानमयपुङ्गव है।

पिछले दिनों गरी मसूरी यात्रा से लौटते समय, देहरादून के पास सहज धारा स्थित योगी ज्ञानानन्द जी से भेंट हुई थी जिन्हें सिद्धयुत प्रक्रिया का मन्त्रपूर्ण ज्ञान है और उन्होंने मेरे समुद्रोद पर मेरे कुछ शिष्यों के सामने ही उन्होंने अपनी एक कोला से एक सोबी में भरे हुए, सिद्धयुत को बाहर निकाल कर दिखाया और वहीं पर एक तांबे का चुड़ड़ा बंधाया कर खड़े पानी में बिछो कर ज्यों ही उस पर बहुत माझी सा सिद्धयुत पाउडर डाला तो प्राक्खर्बजलक प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, पहले कांसी लपट और फिर भीसी लपट जो उठी और दूसरे ही क्षण वह तबि का हुकड़ा टोम होने में परिवर्तित हो गया था, बाद में तब स्वामी जी के किसी लिख को भेंट स्वरूप प्रदान कर दिया था ।

यद्यपि सिद्धयुत बनाना कठिन कार्य है, पर इसे प्रत्यक्ष नहीं कहा जा सकता, पात्रे को शिव बोध कहा जाता है, जो कि अपने धाप में ध्वस्त महत्वपूर्ण पदार्थ है और यह धारा या धारव बाजार में प्रसारी से उपलब्ध हो जाता है, इसके म्यारह संस्कार क्रमशः करने पर पाण्ड पूर्ण रूप से वृत्तुभित बन जाता है यद्यपि आनुवंद के कालेजो में धारद के बारे में सम्मान भी निश्चया जाता है, और यह भी बताया जाता है कि इसके क्रमशः १२ संस्कार सम्पन्न किये जाते हैं, परन्तु यह धारा ज्ञान केवल पौरिष्टिक हीता है, सिद्धांत वालों को स्वयं इसका वैकटोमस ज्ञान नहीं होता, यदि उन्हें कहा जाय कि वे धारद या धारे के क्रमशः १२ संस्कार कर के दिखा दें तो कोई बिरला ही व्यक्ति निकलेगा जो इन संस्कारों को प्रामाणिकता के साथ सम्पन्न कर पाता हो, और,

जब धारद के म्यारह संस्कार सम्पन्न हो जाते हैं, तो उस धारदको सबसे पीछे पानी में धीमी धाँध से पकाया जाता है, पकते-पकते जब लगभग धारा उड़ जाता है, तब उसमें कुछ बकरे के रक्त को शूदे शालते ही यह तस्कारित धारा दूरे पाउडर के रूप में परिवर्तित हो जाता है, जिसे काँच की सोबी में भर दिया जाता है,

इसी को "सिद्धयुत" कहते हैं ।

एक कोला लोहे या लोहे के टुकड़े पर माच धाखा कोला सिद्धयुत कोलते ही वह एक कोले का चुड़ड़ा तुरन्त टोम होने में परिवर्तित हो जाता है, चाटक स्वयं अनुमान लगा सकते हैं, कि मात्र '५० रुपयों से निर्मित सिद्धयुत तैसा रुपये में खरीदे गये तांबे के टुकड़े को बरतरी, रुपयों की लागत लगा कर लाखों रुपये की मूल्यवान बाजु स्वयं में परिवर्तित किया जा सकता है।

बाज भी इनके जाने वाले कई योगियों और सत्यातियों से मेरा परिचय रहा है, 'मसूरी के पास टीला स्थान पर रहने वाले योगी हरीतानन्द जी, जम्बू के पास देवस पठ के स्वामी विश्वानन्द जी, नैनीताल से पूर्ण काठमोदम से १८ कोलो मोटर दूर स्थित ज्ञान प्रोथम के संस्थापक स्वामी वैतानन्द जी मनाली के पास म्यास गुफा के पास रहने वाली शक्ति का हीट, कामाया मन्दिर के पास रहने वाले योगी धनरुतानन्द जी, नेपाल के दक्षिण कासी के मन्दिर के पास साधना करने वाले योगी महेशानन्द जी, और धाम में गुरु शिखर के पास रहने वाले दार्जिक वैतन्य धारि इसके पूर्ण प्रामाणिक जानकारी सिद्ध योगी हैं, उन्हें न तो किसी प्रकार का घमस्ह है और न झूझकार ।

इसके अलावा कई महत्त्व व्यक्ति भी सिद्धयुत प्रक्रिया के पूर्ण प्रामाणिक ज्ञानकार हैं, जिन्होंने समय-समय पर इसका महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सामने प्रामाणिकता के साथ ज्ञान को प्रस्तुत कर यह सिद्ध कर दिया है कि भारत की यह प्राचीन विद्या अपने आप में महान प्रद्युत, प्राक्खर्बजलक और जीवित है ।

प्राक्खर्बजलक है पूर्ण समर्पण करने वाले शिष्यों की योगाजुन की तरह जीवन को धार पर लगाने वाले अमला प्राप्त पुरुषों की, और साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करने वाले योग्य शिष्यों की, जो कि ऐसे जावकार गुरुओं के पास निरन्तर रह कर इनकी कृपा प्राप्त कर उनसे यह विद्या सीखने का प्रयास करें और पूर्णता के साथ इसको प्रस्तुत करते हुए, अपने जीवन को ऐक्यबंधन बना सकें । ★

इतिहास का एक गोपनीय पृष्ठ

इन्होंने सोना बनाया, और बहाया

“रुम विज्ञान” भारतवर्ष का प्राचीनतम विज्ञान रहा है, कश्मीर में भी स्वर्ण बनाने की क्रिया का ज्ञान मिलता है, इसके अर्थ के कई ग्रन्थों में तो स्वर्ण बनाने की विधियाँ लघु हई हैं परन्तु यह स्वर्ण बनाने की कला केवल भारतवर्ष में ही नहीं मिलती। भारतवर्ष के बाहर ईरान और कभी-कभी भी और इस विधि में वे इतने स्वर्ण बनाया भी ।

विद्वत् विनों एक फलस्त गोपनात पुनः प्राप्त हुई, जो विद्वत्ता काया में लितो की और विद्वत्ता काया यानी कर्मों की अनुवाद होकर प्रकाशित हुआ है, इस पुस्तक में बताया गया है कि सबहूँ विद्वत् तो एक, राजा के दरबारों में इतनी कला के द्वारा स्वर्ण बनाया और उडे शान्ति की तरह बहाया भी ।

यह पुस्तक सर्वथा प्रायोगिक है और विद्वत् के प्रायोगिक मठ “लुत्ता” में इसकी मूल प्रति सुरक्षित भी, कहा जाता है कि इस एक प्रति को धार करने के लिए ही विद्वत् ने विद्वत् पर आक्रमण किया फलस्वरूप शीर्ष लागो की वहाँ से भाग कर भारत में शरण लेनी पड़ी, चीनी तब तक नहीं केने जब तक वे लुत्ता तक पहुँच नहीं गये ।

लुत्ता मठ विद्वत् का प्राचीन, महत्वपूर्ण और दुर्लभ मन्त्रालय के संबंधित पुस्तकों का भद्र खजाना है, वहाँ से हजारों विद्वत् ग्रन्थों का नाम की खा

करते हुए गहरी हो गये, परन्तु इसी बीच मठ के एक लाना धामनिग वहाँ से इस “स्वर्ण विज्ञान” पुस्तक की मूल प्रति लेकर भाग गया, और जंगलों में आ छिपा ।

चीनी सेना के परिधम और सैनिकों सैनिकों की पाहुनि देने के बाद ही लुत्ता पर विजय प्राप्त कर सकी चीनी सैनिकों ने पूरे मठ को ध्वज मारा परन्तु वह दुर्लभ पुस्तक उनके हाथ न लगी ।

इसी बीच जंगलों में लुत्ता की कि मठ का ही एक बीड़ निज, धामनिग इस पुस्तक को लेकर भाग गया है और जंगलों में जा छिपा है ।

चीनी सैनिकों ने तोषा कि बहु भाग कर इस धन-धोर जंगल में कहीं तक जायेगा, जंगल तो हिलक पशुओं का विश्वधुमों से भरा पड़ा है, चीनी शासकों ने सैनिकों को धारित किया कि लुत्ता पर विजय करणा उतना आवश्यक नहीं है जिसना उस पुस्तक को प्राप्त करना; क्योंकि यह पूरे संसार में एक मात्र पुस्तक है जिसमें स्वर्ण बनाने की विज्ञान और सरल विधि समझाई गयी है और जिसके बल पर विद्वत्ता शासकों ने पानी की तरह स्वर्ण बहाया है ।

बात भी सही है, बीड़ विद्वत् की द्वारा और वहाँ के शासित ने पता चला है कि वहाँ के शासकों ने मोल्द रोटी एक एक ही विधि से स्वर्ण बनाते रहे और पूरे रूप से मनोरंजन करते रहे ।

बादही शताब्दी में विजय के राया द्विपिक ने एक बहुत बड़ा बगीचा बनाने पर के बाहर लगा रखा था जिसमें २१६ सोने के पीप, सोने मोलियों से ढूँ पूरे थे बगीचे के चारों ओर सोने की दीवार बनाई हुई थी, और बगीचे में बँटने के लिए राजा व राजी का विहासन को डोस बोने का था जिस पर बैठ कर वे रात्रि में भी निद्रा-मिताले हुए अपने स्वर्ण पर बनीये का आनन्द लिया करते थे।

इसके बाद उनको पोंडी में वह स्वर्ण निर्माण बिछा प्रकलित हुई और जबके वज्र "एमास" ने उस बगीचे में ही अपने दादा को ब्रह्म-डोस सोने की बतवाई और उसे प्रगदर से पूरी तरह से हारोते जड़ थी, फिर अपने दादा की लाश कब में से निकाल कर उसी सोने की बनी हुई बज ने रख की यह वज्र १८ फीट लम्बी १२ फीट चौड़ी और ५ फीट गहरी था।

इसके स्वर्ण विज्ञान निर्माण प्रक्रिया की बदौलत उसके एक बरख में चारों को कि उसके पूरे महल और उसकी पास पास की प्रती को सोने से भरे की जाय फलस्वरूप सोने की डोस ईंटों से पूरे किले की दीवार और उसके चारों ओर की जमीन की बनाई जिस पर राजा पूरा करता था।

मही नहीं घणित इसके बाद इसके ही वज्र भारीन ने यह दावा निकाल दी कि उसके पूरे महल और उसकी पास पास की प्रती को सोने से भरे की जाय फलस्वरूप सोने की डोस ईंटों से पूरे किले की दीवार और उसके चारों ओर की जमीन की बनाई जिस पर राजा पूरा करता था।

उसके ही एक बरख लारेजी ने इसी स्वर्ण विज्ञान के द्वारा स्वर्ण बनाने की कला सीखा और अपने बेटने के लिए राजा पोंडी की एक बगीचा बनाई जो डोस सोने की थी और पोंडी के ऊपर सोने की ही लाल धावी हुई थी उनके पैरों में भी सोने की ही भाँके लगी हुई थी

सोना यों भी बनाया जाता है

कल्पसर्पमेक गूँहीत्वा तस्य मुने शिववीर्यं पूरयित्वा सर्पस्यमुखं मुने च वक्ष्या ज्ञानं मुण्यये स्थालीमध्ये संस्थाप्य स्थालिभुल मुदादत्ता संक्षिप्य विजनेस्थाने प्रातरारम्भं पुनःप्रायश्चित् दद्यात् सोनां ज्वालां दद्यात् ततः शुभशयने स्थानीमुखं उदघाटय सर्पमस्म विहाय शिववीर्यं गूँहीष्यात् ततस्तोत्रकर्मितं ताञ्च रक्त-मार्जं नत्तु शिववीर्यं दद्यात् तत्क्षणादेव तत्सोन्न-सुखाणिभूतं।

अर्थात् एक बड़ा हुआ काठा सोप से कर उसके मुख में पारा भर दिया जाय और फिर मुँह को बिट्टी के पात्र में बन्द कर दिया जाय उस मिट्टी के पात्र की चौड़ी पन्डे धनिया दे कर जला दिया अपने घोर बाद में उस मिट्टी के पात्र को फोड़ कर उसमें से यह पारा निकाल ले। (सर्प को राजा को खूने दें)

इसके बाद पारे के बराबर तांबा मिलाकर उसमें निला दिया जाय तो यह तांबा और पारा मिल कर तुरन्त ही स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है, यह प्रयोग भी पूरी तरह से प्रामुख है।

इस मुँहरी बगीची पर बैठ कर के ही राजा लिय हुआ खोरी के लिए निकलता।

इसी बगीची में यहबिन तो स्वर्ण बनाने की कला में पर्ययल प्रसिद्ध हुआ, उसका यह शोक था कि यह मिले दत्त पुस्तक में जो हुई दिखि से स्वर्ण बनाना और पूर्ण ऐसा ही जीवन व्यतीत करता, एक बार अपनी प्रेमिका को उसने सोने के पत्रके तारों से बनी हुई पोशाक उसके जन्म दिन पर हीरों से जड़ कर बैठ की थी जिसका मूल उस बनाने में की लाखों में थाका जाँदा था

वास्तव में ही सोलह पीढ़ियों तक इस पुस्तक की बदौलत बड़ा के ब्रासक सोना बनाने रहे और पानी के

हाथ बढ़ाये रहे, वह पुस्तक पर चीखियों की प्रारम्भ हो
हो मगर भी और उन्होंने इसी पुस्तक को देन-नेन प्रका-
र्य हथियाने के लिए प्राचैतिक बवाल डालने शुरू किये,
जब हमने सफलता नहीं मिली तो आक्रमण कर दिया
पर आक्रमण के बाद भी जब वह पुस्तक उनके हाथ नहीं
गयी तो वहाँ के प्राचीन ने हुक्मला कर पूरे सैनिकों को
मण्डली में बिखर आने के लिए कहा और किसी भी प्रकार
हो-उंच बोर्ड भिक्षु को पकड़ कर उसके पास ले। वह प्रति
ज्ञाने की आत्मा हो।

उस एक बहुत देर हो चुकी थी, और वह बोर्ड
जिम्मे रोहतांग दरें तक जा पहुँचा था पर इस बीच उसका
हाथ बेहोश हो गया था। धूल से उनकी आँखों पर बाहर
पाने की थी, जहाँ जगह से शरीर कट पट गया था तभी
उसकी वहाँ एक भारतीय स्त्रियाँ ले गेट हुईं किन्तु उनके
बन्नी बुनिया में लिखा था, जेबदार किताबी चीजोंन
बाद बिनाया परसु यह बोर्ड भिक्षु, बार-सद मण्डली में
हो मर गया।

इसके के बाद मन्त्राली को उनके पास से एक प्राची-
नतम पुस्तक प्राप्त हुई, पर उसे उस पुस्तक का महत्व
भाव नहीं था, धनः उसने उस बोर्ड भिक्षु का बाँह संत-
कार सम्पन्न किया और उस पुस्तक को पढ़ने की कोशिश
की।

परन्तु वह सम्प्रदायी/कोई उच्च बोर्ड का स्त्रियाँ
वही था और न उसे इस पुस्तक का महत्व और श्रेष्ठ ही
ज्ञात था उसने एक समझदारी का कार्य किया कि वह
उसे लेकर रोहतांग दरें से होकर मन्त्राली की ओर पहुँच
गया और वहाँ पर उसने उस पूरी पुस्तक की फोटो स्टेट
करी करवा दी।

इसी बीच एक बड़े की पुरातन विवेकता को आभासक
उस फोटो स्टेटकारी की दुकान पर एक पन्ना हुआ
कमल का झुंडा देखने की मिश्रा को निम्न प्राचीन
पुस्तक की ही फोटो स्टेटकारी का अर्थ था, उसने उन
पन्ने को पढ़ कर खीन दिया कि यह कोई अत्यन्त दुर्लभ

स्वर्ण प्रयोग पुस्तक में प्रकाशित दुर्लभ
प्रयोग जिसके द्वारा तिब्बती शासकों ने
स्वर्ण बनाया।

तीन भागों का, सात भाग-कांसा, दो भाग
शुद्ध लोहा व पाँच भाग पीतल से कर इन पाँचों
को परस्पर मिलाकर एक पात्र का (बाहेर वह
कटोरे के आकार का हो या थाली के आकार का
हो) निर्माण करें।

इस पात्र को "स्वर्ण पात्र" कहते हैं और यह
बर्षों तक स्वर्ण बनाने के काम आता है, जब यह
पात्र बन जाय तो इसमें तीन भागें भरता, दो
भाग में सिल तथा एक भाग हिंदुल डाल कर
परस्पर मिलावे जब सब एक रस हो जावे तो
इसमें एक भाग शुद्ध पारा मिलावे और "खारपाटे"
(इस प्रकार पाठा भी कहते हैं) के रस में चौबीस
घण्टे तक बराबर घोटता रहे, घोटने के बाद इस
पात्र को पानी से भर दे और नौबे कीमी धाँच
लगा दे, लगभग एक घण्टे में पूरा पानी उड़ जाता
है और पात्र में स्वर्ण का ठोस पिण्ड बचा हुआ रह
जाता है, एक बार में एक किलो सोना बनाया जा
सकता है।

यह प्रयोग प्राच्यमाया हुआ है, और संसार का
सबसे आसान सरल एवं सस्ता प्रयोग है, इस की
विशेषता यह है कि इसमें गलती होने की संभावना नहीं
रहती और यदि पात्र बड़ा हो तो एक बार में पाँच
किलो, दस किलो या चारोंस किलो सोना बनाया
जा सकता है।

परीक्षण से यह भी स्पष्ट हुआ है कि यदि
इसमें थोड़ा बहुत कमी घोटने में या गर्म करने में
रह जाय तो सब भी सफलता हो हाथ लगता है,
इसीलिए इस विधि को महत्वपूर्ण माना है।

धीर महत्त्वपूर्ण पुस्तक है जिसमें स्वर्ण प्रक्रिया का विवेचन मान है। उसने उस बुकानदार से इस संबंध में पूछा तो उसने बताया कि आज सुबह ही एक सन्ध्याली ने एक प्राचीन पुस्तक की फोटो स्टेट काफ़ी सम्पन्न करवाई है, तब तक यह सन्ध्याली निम्नो पृष्ठ पर था।

बोध-बोध करता हुआ वह अंतर्गत पुरातत्व विशेषज्ञ विषया का पढ़ा और उस सन्ध्याली को कुछ निष्कर्षों को उसने कीर्तियों के मोल वह पुस्तक खरीद ली और अपने देस भेजा गया। वहीं से उसने बहुत ही ऊँचे काम पर वह स्थल संयुक्त पुस्तक एक क्षैतिगी बन चुके को बेच दी, जिसने उस पुस्तक को कुछ अंतर्गत अर्थों में प्रकाशित करवाया और उसकी गुणवत्ता के बदले में लोगों को और प्राप्त किये।

यह प्रश्न हुआ कि उस सन्ध्याली के पास प्रमाणिक फोटो स्टेट काफ़ी विवृण्वान की और निम्न उस पुस्तक को अपने को कोटिबध्ना परन्तु उसे कुछ भी समझ में नहीं आता पर इतना उसे जान ही गया था कि यह पुस्तक बहुत महत्व की होगी या उसमें बहुत कीमती सामग्री होगी हुई होगी सभी तो यह प्रश्न यह था कि उसे पुस्तक खरीद कर ले गया है।

इसी बीच पत्रिका के एक सदस्य को उस सन्ध्याली के पास वह पुस्तक देखने को मिली और उसने पहली बार अनुमान लगाया कि यह पुस्तक किमती अधिक मूल्यवान और प्राथमिक है, सन्ध्याली ने वह पुस्तक तो उसे वहीं दी परन्तु उसके कुछ अंतर्गत लिखने के लिए दे दिये, एक महीने तक मेहनत कर उस युवक ने जो कि प्राचीन भारतीय लिपियों का विवेक है, उस पुस्तक के महत्त्वपूर्ण अंतर्गत लिख दिये।

इसी बीच पत्रिका के एक सदस्य को उस सन्ध्याली के बारे में पता चला और तत्पश्चात् वह महीने तक सन्ध्याली के पास ही रहा उसने उस पुस्तक से काफी कुछ सामग्री प्राप्त की और अब उसने पुस्तक में बख़्त विधि से स्वर्ण

स्वर्ण निर्माण

पारद पलमेक व पलमेक तालक तथा तत्सम गंधक शिफ़ा तद्विदुष्येन सदैव तत्सर्व गोलक कृत्वा स्वात्मिकायां विनिरूपितं तन्मुखे मुद्रिकां दत्वा दीपाम्नि च प्रदीपयेत् कांचन जायते विष्व देवानामपि दुर्लभम्।

अर्थात् एक साथ पारा, एक साथ इस्ताल व एक साथ शुद्ध गन्धक से कर बाद के रूप में दो घंटे खरक करके घोट कर एक रस बना दे और इस का गोला बना कर पानी में रख दें तथा उसके ऊपर एक कटोरा उल्टा डक दें।

इसके बाद सोचे मन्त्र मन्त्र पांच जलावे तो एक घंटे भर में पानी में रखी हुई सामग्री पूर्णतः स्वर्ण में परिवर्तित हो जाती है, यह प्रयोग कई बार आजमाया हुआ है और अपने प्राय में प्रामाणिक है।

बनाया तो वह प्राश्नार्थकित रूढ़ गया, पट्टी ही बार में उसे सफलता मिल गयी, इसके बाद उसने इसी प्रयोग को पांच छः बार परीक्षण किया और हर बार उसे सफलता मिली, तब तक सन्ध्याली को भी उस पुस्तक में बख़्त विधि और प्रयोग का ज्ञान हो गया था और सन्ध्याली ने जो उसी विधि से स्वर्ण बनाया तो पहली ही बार में उसे आनंद प्राप्त सफलता मिल गयी।

उस सुप्रसिद्ध सन्ध्याली ने ही इस पूरे इतिहास को और उस विधि को प्रामाणिकता के साथ लिख भेजा जिसे हम प्रकाशित कर रहे हैं, उस अर्थों पुस्तक को पढ़ने के बाद भी वह विस्वास हो गया कि वास्तव में ही सन्ध्याली ने जो प्रयोग भेजा है और पुस्तक में बख़्त जो इतिहास लिख भेजा है, वह सब का प्रामाणिक और ही टंच खरा है।

भा ।
 ईवेत्
 भू ।
 रवेत्
 भू ॥
 एक
 हरन
 बना
 भन्ना
 चन्दे
 रि-
 हृषा
 —
 र में
 योग
 एक-
 श
 और
 हूँ
 को
 जा
 को
 हो
 जो
 हो

गुरु साधना सिद्धि ही ब्रह्म सिद्धि है

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वरः
 गुरु साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुभ्य नमः ॥

गुरु शरणों में सभी लोगों के पावन तीर्थ, चरित
 पावनों बना का निर्मल मीर, सागर महासागर भी रत्न
 सभी पावो, दिन स्फटिक उत्तम ब्रह्मण्य की मयल रूपकी
 क भार, मनुष्य धरा पृथ्वी का कर्णधार बन कर पंजी
 करने नृप, क्या कुछ नहीं स्वाक्षित है, आकाश में करते
 हो गुरु साध संयुक्त में सभी देवी देवता पीड़ कर समर्पित
 होने के लिये बाहुल रहते हैं, उर्वर, मेघना, रुक्मा
 उनकी भुक्ति चरित पर नृप्य करते नहीं अभावी, ब्रह्मा
 विष्णु महेश्वर स्वयं स्वका रूप पर अपने समर्पित हो
 गौरावित धनुष्य, करी है, भक्ति रूप में भगवती
 अग्रदत्त उनके भाव, पर चक्षुषा रूप में स्थापित हो
 मोक्षता प्रदान करती है, कर्मदेव स्वयं भगुर हाम
 विनाम के साथ धार, मूलमंडल, अंगः प्रत्यंग में सीम्य
 बन बोध मुचरित हो साक्षात् हो उठता है, साधक और
 विष्णो के प्राण, उनकी प्राणवैतन, धनः ऊर्जा, जीवन-
 रानी समारोहों का पूर्ण निष्कल वरदान क्या कुछ नहीं
 है, उनके शरणों में? ऐसे विम्व, शरणों की अतीतिक
 बात विश्वरूप रूप धर, जिनके, अ, ब्रह्म प्रवर्तित हो
 जाती है, धन्य है ऐसे सिद्ध साधक-मागव, जीवन तपन
 है उनका ही इक्षीविये साधक कवीर, का कहना पड़ा —
 गुरु मोविन्द, दोऊ खड़े काने पाय ।
 बलिहारी गुरु प्रापकी जो गोविन्द दिदी बताय ।

यों कहा जाय कि गुरु स्वयं ही तो ब्रह्म रूप में साधक के सम्मुख
 अवस्थित हो करने बाध में धननामा और विमुक्त होता
 व साहम बन जाता है, गुरु और गोविन्द दोनों यदि एक
 ही निरंके के दो स्वरूप बने जायें तो कोई प्रतिस्पर्धिता
 नहीं होगी, लौकिक नेत्र दृष्टि से यदि दोनों में भेद माना
 भी जाय तो भी कबीर के उपरोक्त कथन के अनुसार गुरु
 का अस्तित्व गोविन्द से महान ही प्रांका गया है पक्ष
 बताने वाला, निश्चय ही मण्डल तक पहुँचने वाले से
 महान है ही, लौकिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टि से
 कहीं भी काय देख सकते हैं ।

गुरु को कैसे प्रसन्न और सिद्ध करें

भावना के वन भगवान होते हैं, मुझे और पहले
 धार है — "मनस्सधीना देवता" यत्र, मोरं, वंश और
 मुख में पूर्ण आस्था हो, सिद्धिपद कहीं गई है, हृष्य पक्ष
 अंतस्य और जाग्रत कर, कुछा एवं तर्क रहित हो कभी
 आत्माओं से ही गई त्रेत्र और आराधना के द्वारा गुरु
 को मोह लिया जाता है, यह ऐसी मुस्मीहन क्रिया है, जिसके
 द्वारा गुरु स्वयं ही भववर्ती होता है, सेवक, साधक या
 शिष्य की गुरु से संवाद करने की आवश्यकता ही नहीं
 रहती, यत्कथुं भी मान सेवा साधना-आराधना मुख हृष्य
 पक्ष पर अंकित होती रहती है, हर पक्ष हर क्षण गुरु की
 धीकी दृष्टि ऐसे सेराभासी साधक पर टिकी रहती है,
 गुरु एक क्षण की मफलात बरदास्त नहीं करता, कुम्हार के

चाक को तरल कच्ची माटी रूप ऐसे शिष्य को गुरु हर पल अपने समुच्च स्वरूप देने में लगा रहता है, ठोस-नीट कर उसके पापों का नाश करता रहता है और उस दिन की कल्पना करता रहता है जब उसका ऐसा शिष्य शुद्ध परिकृत हो भाव विभीरु रोम-रोम से गहंन कर उठे, ब्रह्मानंद को प्राप्त हो सभी श्रद्धा सिद्धियों को गुरु के हृदय में धरना स्वान बना स्वतः प्राप्त करके और ऐसा हो जाता है जब गुरु अपने शिष्य पर अपने सेवक पर प्रभुकी कृपा दृष्टि करता है, सारे चर्कों को अतिपात से एक भटके में ही बाधत कर सहभार भेदन कर देता है — दुरीयावत्या को प्राप्त हो शिष्य निर्बिषय समाधि में पहुँच जाता है, ब्रह्म साक्षात्कार हो उच्छान्द उद्गमन में सराबोर शिष्य गुरु परधीमे धीरे-धीरे अपने प्राण को सराबोर नहीं बचता, इच्छा उठता है गुरु कृपा को सोम दुधा पी ।



प्राप कहेंगे ऐसा कैसे संभव है ?

ऐसा संभव है और संभव होता प्राया है, इतिहास इस बात का साक्षी है, एक गद्दी भ्रमेक उदाहरण अपनी राजोत्था से शिष्यों को प्रेरित करते आ रहे हैं, राम कृष्ण परम हंस के शिष्य स्वामी विवेकानन्द, दंडी स्वामी विरजानन्द के शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती, पूज्यपाद शंकराचार्य के शिष्य पाद वदम, मरस्वंगराय, मुक्तानन्द आदि के नाम प्राज भी साक्षी भूत हो इसी तथ्य को प्रतिपादित कर रहे हैं, सद्गुरु बनना सम्पूर्ण ज्ञान, चिन्तन, तपस्या, जीवन् का सारभूत तथ्य अपने शिष्य में उगार देता है, समाहित कर देता है, नेत्र और प्राणीबन्ध एवं प्रमथुष्टा के माध्यम के, सभी सिद्धियों का दाता गुरु यदि अपने प्राणों पूर्ण है तो निश्चय ही बहु निम्नजत धरने में एकाकार होने वाले नर का शिष्य को विभु बना ही देता है,

दिव्य पथ के पथिक बन पथ प्रशस्त कर लो

तो प्राप्ति प्राणीय भाई और बहनों आप भी इस

पथ के पथिक बन अपना पथ प्रशस्त कर लो, आप भी गुरु घरणी में आ ऐसी ली लगाओ जो कभी दुष्टे नहीं जायवत् हो मुझे मुझारे सत्यपथ तक पहुँचा कर ही रहे दोषा प्राप्त कर उनका पाहोवाँव लो, गुरु मंत्र से अपने प्रापको जन्मव्यमान कर, प्राणवैतना जागत कर मुँह से उठो, रोम रोम समर्पण भाव ला सब कुछ समर्पित कर दो अपने सद् गुरु के पावन घरणी में, जो दो जन्मे घरणी को अपनी दोनों प्रांकों के, भर-भर भरती बधु-धार से तुम्हारा भस्तर कस्तुर दल जायेगा, कर्माधीन पापों का सप हो जायेगा, तिर पर प्यार भर गुरु का बरदहस्त फिले ही जाऊँ सा हो जायेगा, लगेवा जीवन् की तपती दुपहरी में कहीं किसी निर्मल शीतल भरने में धववाहन किया है, कुछ भी अपना बचा कर रखना नहीं है, रखना चाहेंगे भी तो रख नहीं सकते प्राबिर तुम्हारा यहाँ है क्या ? किसी पर भी तो तुम्हारा अधिकार नहीं जाता—पिता, बाला-परदाया कोई भी किसी के अधिकार से बके नहीं पत्नी, भाई, बहू, बेटा बेटा सभी तो इस क्रम में हैं, धन बोलत साध जाती नहीं जले को बेला है कोनू साथ निभायेगा ? कोई भी तो साथ नहीं जायेगा

घोर कोई हमारे रोके रहेगा भी हो फिर इस मूल मयी-
बिका में फंसा मत क्यों प्रमित करता है, क्यों नहीं सन्त-
वाई की बाज ही जान लेता, बिडम्बना का जीवन जीने
ले क्या लाभ ? हाथ लगे जब जाना ही है तो क्यों न गुरु
के बताये रास्ते पर चलते हुए उसे ही निद्रा बिद्या आये,
यही न ब्रह्मजन्म प्राप्त करके ब्रह्म साक्षात्कार बिद्या जाये
यही वह धनमोक्ष धन है जो हमारी प्रायस्की फलसी पूँजी
है, वास्तविक कनाई है जो साथ प्रायेणी जित पर कबिकार
बना बकते हो, क्योंकि यह तुम्हारी शक्ति सिद्धि है, देखा
है, साधना है, गुरु की विशेष दिव्य कृपा है ।

**पहिलानों गुरु के त्रिगुणात्मक सिध शिवा
रूप को—**

ब्रह्म, विष्णु, महेश्वर, साक्षात् शक्ति, शिव की स्वयं में
स्वाधित जित महात्मान साम साधनों को दीखने वाला
शक्तिमय चरित्रम विनयधन कीटाधारण है, मेधा में रत
वेदक, साधक घोर निश्चित सिधियों की की सम्य समय
पर प्रशंसा करता है, नापा का पदा उनकी क्षुधो शोको
पर भी शान्ता रहता है घोर वह सब करते हुए विस्तृत
अनयन, कभी कभी दूधो अन्नानी की भूमिना निजाने हुए
शिव से जो निचले स्तर पर स्वयं की प्रतिष्ठित कर
गुरुकरता रहता है अन्तर ही अन्तर, कभी मदमत्त भावा
है दुरु की जो महज ही जानी नहीं जा सकती, चर्च
बलुओं से गुरु जैसा दिखता है, बैसा है नहीं, अन्तर्बधु
धन पर ही कभी कभी उसका दिव्य रूप परिलक्षित
होता है, साक्षात्कार होता है उसके ब्रह्म रूप से, भगव
हर पत गुरु का प्रयास रहता है शिव्य उसे समझे नहीं,
समझ न सके, शिव्य का प्रयास रहना चाहिए गुरु की
शिव्य प्रकीर्णने को उसे पहिचानने का, इस घोर में
जित दिन गुरु धनानी हार स्वोभक्त का जित है, शिव्य
का सीमाय उदय होता है उसके जीवना के दुष्को का
जल उनके समझ होता है, गुरु शिव्य की शक्ति से समा
देता है वह निद्रा जिते ब्रह्म निद्रा कहा जाता है, पूर्णता
जितने ही शिव्य शिव्य नहीं रहता गुरुत्व बल गुरु की ही
माला का पूर्ण चेतन अंग हो जाता है, तिन विचाररूप में गुरु

का बरदहन शिव्य के प्राप्त पर भावीबाँध की बर्षाकरता
है घोर वह बरदानमयी बैसा ही शिव्य का भूगार घोर
जोखन की गुथता है ।

**गुरु सिद्धि संजो कर ही ब्रह्म सिद्धि संभव
है—**

गुरु बरहों में स्वयं की इस शक्तिमता की स्थिति
में पहुँचा कर ही वेदक, साधक घोर शिव्य साँच साँस में
गुरु नाम जपता हुआ उसके एकाकार हो जाता है, खाते
हूँ भी वह नहीं खाता, सोते हूँ भी वह नहीं सोता,
बकते हूँ भी वह नहीं बगता, कर्म करते हूँ भी वह
नहीं करता, यह भाव उसमें जान अता है, कर्ता, स्वयं
उलके गुरु हीने है घोर वह मान निमित्त बन गुरु संकेत
पर केशुगाली का मूव करता रहता है, कर्ता भाव बिकीन
होते ही वह समर्थन काय में डूब जाता है, उसके प्रसिध
घोर गुरु के प्रसिध में कहीं कोई अन्तर नहीं रहता,
एक दूसरे का मुक्त-गुरु एक दूसरे को मानता है, प्राणी से
प्राणी का स्पन्दन एक साथ होता है, बाहर से प्रत्य
दिखने पर भी ईश्वर ब्रह्म रूप बन जाते हैं, शिव्य
से एक, प्राणी से एक स्थिति जब बन जाती है तो गुरु
सिद्धि की स्थिति शिव्य की प्राप्त हो जाती है, प्रेम घोर
भावातिरेक में शिव्य को हृदय से लगा सबकुछ स्वीकार
कर देता है, धनना चित्तन, धनना जान, धननी तपस्या,
साधना सिद्धि सब कुछ प्रवाहित कर देता है शिव्य में,
तिर पर हाथ केर ब्रह्म रत्न खोल देता है, वे देता है वह
ब्रह्म सिद्धि, बिजे योगी, श्चि, मुनि, तपस्वी, देवी देवता
भी जाने की साधु घोर बाकुल रहते हैं, ब्रह्म से साक्षा-
त्कार की यही निष्काय सिद्धि गुरु का भावीबाँध घोर
बरदान बन फल जाती है शिव्य में, सेवक में, साधक में,
भोष घोर मोक्ष दोनों को केकर पूर्णता देने वाली गुरु
सिद्धि ही ब्रह्म सिद्धि कही गई है, जब शिव नमन है गुरु
की यहैदुकी कृपा को—

ध्यान मूलं गुरु मूर्ति पूजा मूलं गुरु पंथं
वेद मूलं गुरु वाक्यं मोक्ष मूलं गुरु कृपा ।

योगेश्वर निधोही

1 श्री
नही
रही,
धनने
गुरु
नमित्त
उनके
धन-
विनि-
न का
जोखन
स्ते में
नही
महारा
नही
उकार
इसी
ना में
पिया,

बंगाल की जादूगरनी

जो मनुष्य को दिन में तोता और रात को मद बना देती है

मुझे प्राण्य से ही मैं जब मोरे धाँध के द्वारे में खोफ
रहा है और जब से मैंने घोड़ा बहुत ही बल संभाला है तब
के मेरे मन में यहो भावना की कि मैं जब के क्षण में
बहुत बड़ा नाम बनाऊँ धीरे-धीरे ऐसा कार्य करूँ जो अपने
प्राण के बचोखो और बचोखि हो ।

मेरा करीरे भयवृत कद-काठी का, गुबार और हूँट
पुष्ट है, मुझे अपने करीरे पर गर्व है, परन्तु करीट से
की ज्यादा मुझे उन योगियों और तन्त्राचारियों से मिलने में
भाग्य बाता की पाँच या साढ़र के साढ़र सुनसान स्थानों
पर निवास करते हैं जो किन और गुजि का दम करते
हैं और जिसके पास कुछ ऐसी विचार है जो अपने प्राणों
बलौकिक और क्षत्रिय हैं किन की बीकरी समायुक्त कर
में जंगल की घोर निकल जाती और ऐसे शोनों की सलाह
में रहता ।

इस बीच मैं बोड़ी बहुत-तब पिछा, सीधी भी, बनी-
करण करना, सम्मोहन करने-जिन्ही को की अपने मनुष्य
बना लेना, हुआ मैंने-कोई संवाय प्राप्त कर लेनी-चारि
विचार में सीधे धुका वा-इत बीच मेरी भेट एक सीधे
से हो गयी और वह सीधे के, लाभ, समान-में भी तीन
बार महीने-खा, उसके पास जातब में ही कुछ अकीकिक
सिद्धिों की परन्तु वह बोड़ा रूप और क्षत्रिय लम्बा
का वा उसके मुझे कुछ ज्यादा प्राप्त नहीं है ।

फिर भी उस सीधे में मैंने की तीन भूत साधनाएं भवस
सिद्ध की और मुझ में इस योग्य बन गया था कि भूतों
से मन चाहा कार्य सम्पन्न करवा दूँ, कभी मैं उनसे वेदों
की मानिष करवाता, कभी उन्हें चेतों में पानी देने का
कार्य करवाता और कभी कभी तो मन्त्र के मुख में कई
ऐसे कार्य सीधे देना जिनकी कोई जरूरत ही नहीं थी
परन्तु मैं यह देखकर आश्चर्य-चंचित रह जाता कि मेरी
भाता का ये गुण्य प्राप्त करने है, और सच्चे सेवक की
तब कार्य सम्पन्न करते हैं ।

बावर्षीय के क्रम में एक दिन घोड़ा से पता चला
कि तंत्र विद्या अगर सीखनी है, तो इसका यह बंगाल में
है, बंगाल के भी कुछ दुद्धर दत्ताकों में तंत्र की गोपनीय
कीर महारुचि-विचार, ध्यान की नीकिय है और यन्त्र
वास्तविक रूप से-तंत्र की सीधना है और समझना है तो
बंगाल के चिरकुट करने में जाना होगा, चिरकुट अपने
धार में मलय प्रविष्ट स्थान है, जहाँ प्राविशानियों की
संख्या बहुतायत से है, बंगाल में चिरकुट की तंत्र का यह
कहेते हैं, चिरकुट वहाँ-तंत्र के देवता हुए है और उनके
नाम पर ही उस स्थान का नाम चिरकुट पड़ा है ।

मैंने भी कई पुस्तकों में बंगाल के वहाँ की तंत्र विद्या
और चिरकुट करने के बारे में पढ़ा था पर जाने का सबब

नहीं मिला था, मैंने उन बीचड़ क्वालनाथ जी से निवेदन किया कि मेरी दृष्टि बगल जाने की और कुछ दिन थिरकुट में रहने की है।

मेरी बात सुनकर क्वालनाथ जीने मे भट्टहास कर उठे घोले पू पागल हो गया है, वहाँ की जीर्तें बड़ी मर्द-फोर होती है, पोर सुन्दर पुरुषों को या साकयक बुबकी को देखकर उन्हे भग्न हो जाती है, लोक भाव के मन से ये एक मनुष्य को दिन में तोला या कोई पशु गधन बना कर रख देती है परन्तु भक्त को उन्हे गुनं पुरुष बना देती है।

अपराध
श्री
न पर्वी
ने का
ई कई
हो भी
क मेरी
इक की

यह मेरे लिए सबेबा, कप्रशक्ति या हनु संकट में मैंने किन्ने कटुकितां मुनी ने अवश्य भी पर यह निश्चय नहीं था कि पार बोमभी जलाखी में भी ऐसी कीर्तमें है जो तन्त्र विद्या की बालकार है और मनुष्य को लोक या मंता बना देती है और बाद में जब चाहें उसे पुरुष के रूप में बखल देती हैं।

मैंने क्वालनाथ जी से निवेदन किया कि मैं क्वाले जीवन में एक बार बिहुट जाना अवश्य चाहता हूँ और जाना ही नहीं यदिनु कहा चार छः नहीने रहना चाहता हूँ, मैं देवता चाहता हूँ कि आपकी बाते में कितनी लम्बाई है।

कोई उनको लतकार दें यह उनके लिए सबेबा धम-ल्यारिता था, एक वम से उनकी स्पोरिमें कब कभी होते हुये भुक्त पर प्ररोमा नहीं है तभी तो ऐसी बातें कर रहा है, मैं थिरकुट में मौल साव रहा हूँ और इस प्रकार के हावों से तुम्हरे बुझा हूँ, अगर मैंने जग इन विद्याओं की मोषा भी है और मैं को इस प्रकार का प्रयोग करने लिसा सकता हूँ।

मैं मौल रहा, बाव को धामे बढ़ाने हुये क्वालनाथ ने कहा मेरा पिचार इसी महीने बंगान, की तरफ जाने का है अगर मेरी दृष्टि है तो मेरे साथ चल सकता है, पर बड़ी दुम्हारे हाथ किसी प्रकार का कोई हाकपा हो क्या तो उसका जिम्मेवार मैं नहीं हूँ।

विद्या
कबकर

श्रीधर गमन सिद्धि

यह एक प्रदुभुत प्रयोग है और इस प्रयोग के द्वारा व्यक्ति बहुत तेजी से चल सकता है, तथा एक घण्टे में कई सो मील की यात्रा पदचर कर सकता है, इस प्रयोग की यात्रा करने पर भी न तो उसे किसी प्रकार की थकावट आती है और न किसी प्रकार की कोई तकलीफ ही होती है।

यह साधना किसी भी प्रष्टमी से प्रारम्भ करनी चाहिए, रात्रि को स्नान कर पीली घोसी पहिन कर, पीली घोडी घोड ले और सामने एक तेल का दीपक लगा ले फिर जाल धासन बिछा कर उस पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय तथा हकीक माला से निम्न मन्त्र को एक सो माला फेरे—

मन्त्र

ॐ वीरयेतालाय श्रीधर गमनाये गच्छ गच्छ वेतास
हूँ हूँ फट्।

यह ३१ दिन की साधना है और नियमित रूप से करने पर यह साधना सिद्ध होती है, यह प्रयोग भी मुझे उस प्राणदाता सुन्दरी ने ही बताया था और मैंने इसको संकटों बार आजमाया है तथा हर बार इस मन्त्र की क्षमता अनुभव कर, आश्चर्य चकित रह गया हूँ।

इस मन्त्र के प्रभाव से व्यक्ति एक दिन में चाहे जितने मील पदचर कर सकता है, उन्हे न भुख-प्यास सताती है और न उस पर सर्दी गर्मी का ही कोई प्रभाव व्याप्त होता है, सबसे बड़ी बात यह है कि किसी प्रकार की कोई थकावट भी नहीं आती।

मुझे मन में प्रमत्तता थी कि एक बार वही मने तो मही, प्राद में जेह दुखे होगा देखा जायेगा, एक बार इस विषय को अपनी भावों से देख लेना चाहता था और संभव हो तो सीधे लेना चाहता था।

जल्दी ही ऐसा अवसर भी उपस्थित हो गया एक दिन श्रीमद् ने कहा वच्चे! मात्र मैं यहाँ से अपने बेरे स्थले उठा रहा हूँ, और तबराबि निवृत्त है, इसलिए बंगाल या रहा हूँ, तुमने एक बार बिचछुट चलने के लिए कहा था।

देह परिवर्तन सिद्धि

यह साधना थोड़ी कठिन अवसर है परन्तु यदि एक बार साधक परिश्रम कर इस साधना को सम्पन्न कर लेता है तो वह कुछ ही क्षणों में सामने वाले पुरुष या स्त्री का देह परिवर्तन कर मनोवाञ्छित आकार ले सकता है, इस मन्त्र के प्रभाव से पुरुष या स्त्री को तोता, मैना, भेड़ा, तकरी या अन्य किसी भी पशु के स्वरूप में डाला जा सकता है और जब चाहे तब वापिस उसका असली रूप में लाया जा सकता है।

यह प्रयोग प्रभावस्था से प्रारम्भ किया जाता है और ६० दिन का प्रयोग है, इसमें ठीक बाधो रात्र का सवधा नमन हो कर नदी तट पर तालाब पर या कुएँ पर जा कर स्नान करे और वापिस बिना वस्त्र पहिने ही घर आ कर पहिले से ही निछे हुए मृग भूम पर दक्षिण की ओर मुह कर बैठ जाय, अपने ललाटे पर सिन्दूर का त्रिक लगाये और सामने दीवार पर सिन्दूर से ही धूर्जटा देवी का चित्र बनाये जिसके बाल बखरे हुए हों जिसके हाथ में खप्पर तथा दूसरे हाथ में मुन्ड माला हो।

फिर धूर्जटा देवी की पूजा करे और सर्प प्रस्थियों की माला से मंत्र जप करे, एक रात में एक सौ इक्कीस माला मंत्र जप होना अनिवार्य है।

मन्त्र

ॐ धूर्जटे देहं स्थाय परिवर्तनायै धूम धूम कार्ये सिद्धये हूँ अन्नं पालाये धूर्जटे कद्।

जब ६० दिन का प्रयोग समाप्त हो जाय तब उस धूर्जटा देवी पर खने हुए सिन्दूर को अपनी ललाटे पर लगाये इस पूरी अवधि एक सप्तम भोजन करे भूमि शयन करे और ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करे।

पूर्ण त्रिचि बिबान के साथ जब साधना सम्पन्न हो जाय तब जिस पुरुष या स्त्री को किसी अन्य शरीर में परिवर्तन करना है तो पहले यह मुह के बाल दे कि अणुक धाकृति में यह बदल जाय और फिर तीन बार मन्त्र उच्चारण कर और से फूँक मार दें तो तुरन्त ही वह दूसरी धाकृति में परिवर्तित हो जाता है और ज़िन्दा रहता है।

यह प्रयोग भेरा आजमाया हुआ है और कोई भी साधक इस को सीख कर इसकी सत्यता और प्रामाणिकता परख सकता है।

नहीं हुई, एक दिन सुबह जब मैं सो कर उठा तो घोपड़ का कोई भाग पता नहीं था, न तो उसका चिसड़ा पड़ा पड़ा था और न कपड़े लपेटे होने में थे तील चटे उसका इस्तजार भी किया परन्तु घोपड़-कायल नहीं आया।

जब लगभग आठ इन्च लम्बी और पैट में पूँछ को यात्रा करने लगी तो मैंने कपड़े में खाना ही उचित समझा जिससे कहीं वे भय प्राप्त कर पैट की पूँछ को शांत कर सके।

पूरे बंगाल में चिरकुट कच्चा प्रसिद्ध है, और जेदनी-पुर से बहुत दूर भीड़ी बन जाती है, स्मर यह पटना बहुत दुरानी नहीं है, बेमन दो मील दूर रहने को ही बात है, छोटा नखवा या और घाम बंगाली गृहस्थ लोगों के जैसे घर होते हैं जैसे ही घर में, सूर्य लगभग अस्त होने को आ रहा था, मैं एक बरखा के घर आ पहुँचा और दरवाजे को धोड़ा सा धक्का दिया तो दरवाजा खुल गया, सोचने ही में लियी बेंटी हुई, रोहिया बना रही थी और एक पुरुष मछली से बात आ रहा था।

मुझे आधा देबकर उस पुरुष ने स्मर धाने के लिए कहा और एक तरफ बैठ जाने के लिए, वह दिना, मैं चुपचाप बैठ गया, उन्होंने बंगाली भाषा में कुछ पूछा परन्तु मैं पूरी तरह से समक नहीं था, भाषा, कोड़ी देर में एक स्त्री ने संकेत में कुछ पूछा, क्या पूछ लगी है? मेरे हाँ कहने पर उसने मेरी हजेरी पर बार रोहिया और बोली तो सखी रख दी मैं बड़ी बेंटी बैठे भोजन कर पाली, पिना और बापिल जाने के लिए मुझ को स्त्री ने जवाब दिया रात को गरी रक जाये, रात फिर गई है।

यद्यपि मैं उसकी भाषा समक नहीं आ रहा था पर उसका संकेत समक रहा था, मैं बिना उसकी परवाह किये घर से बाहर निकल गया।

मैं पाँच के बाहर बापिल उताँ स्थान पर आ गया जहाँ घर में जो दिन से टिका हुआ था, मेरे अंत में बिचार था कि शायद घोपड़ बापिल आ गया हो, घोपड़ के रहने



मेरे कमरे आपकी सुरक्षित रहूँगा कर रहा था पर मुझसे बहुत घोपड़ का कुछ बात पता नहीं चला और निराश हो कर वहीं बैठ गया।

रात के लगभग साढ़े बजे होने कि एक सुन्दर स्त्री को पास में धाकर खड़ी हो गई, चांदनी रात थी, मुँह और हाथों की चोरी चोरी मैं उसे पास में खड़ी ला हाफ देख रहा था, मुझे पता चला कि वह दो बहो स्त्री है जिसके घर में खाना आने गया था और दो मित्र और कमरे से यह लड़की बाहर आई थी, शायद उस घर की बहू बेंटी थी।

उठने मुझे बठने के लिए कहा और साथ में बन के चिते बोली पर मैं घोपड़ को तरह ही वीर पड़ रखे हुए देखा, रहा और कि मैंने उसको देखा ही नहीं था मेरे चित पर उसका कोई प्रभाव पड़ा ही न हो।

इसमें कोई दो राय नहीं कि वह लड़की अत्यन्त सुन्दर थी और आश्चर्य की भी मैं वह भी सम्भव रहा था कि रात को बारह बजे किसी लड़की का फलेले आवाज आये रखता है, परन्तु मैं अपने घरा में सोवत रहता था। रात का धीरे धीरे सुखीय में रचना नहीं चाहता था।

उस सुखी ने बताया था कि कुछ वहाँ पर मैं समझ नहीं पाया, वह पांच बात निम्न ही मेरा हस्तक्षार करती रही और फिर अटक से मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपने स्थान से उड़ा कर दिया।

वह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी कि एक सुन्दर लड़की लड़की में इतनी ताकत हो कि मुझ जैसे धीमे लड़के को ऐसा अटक में लीज कर उड़ा कर दे और अपने हाथ पकड़ के लिए बिकस कर दे, उसने मुझे अपने दो ज्ञात मित्र से भी बताया कि मैं जाना होगा, और मुझे ऐसा करा कि मैंने उसने मेरी बुद्धि, मेरी मानसिक और मेरे विचारों को नष्ट दिया है, वह एक तरफ को रचना हो गई और मैं अत्यन्त और से बंधा हुआ उत्तरे, पीछे पीछे पड़ूँगी तरह चल रहा था।

इसमें कोई दो राय नहीं कि मैं अपने दूरे होकर इलाक में मैं वहीं प्रकाश के विस्तार कर रहा था कि मैंने जो कुछ देखा था मैंने प्रकाश के विस्तार के लिए मैंने मुझे भी समझा कि इस उत्तरे की शक्ति मेरी ही होती है और मुझे के मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवा लेती है परन्तु मैं सब बातें सोचते विचारते सम्भलते हुए भी मैं उनके पीछे पीछे चल रहा था, एक दो बार मेरे मन में निश्चय किया मैं अपने पाँच लीट जाऊँ परन्तु मैं चाहती हूँ कि लौट नहीं सका, और मैं बराबर उनके पीछे पीछे चल रहा था।

अब मैंने बाद यह एक मकान में मुझे से गये जहाँ उसकी दो गोन सहित थी और भी देखी हुई थी और बाद में मेरी मेरा हस्तक्षार हो कर रही थी, मैं एक

अत्यन्त तीव्र वशीकरण प्रयोग

यों तो तन्त्र विद्या में संकेतों सम्मोहन प्रयोग और वशीकरण प्रयोग है पर यह प्रयोग अपने आप में आश्चर्य ही होता है और तुरन्त प्रभाव पैदा करने वाला है, यह मुझे उस ग्रीष्म कपालनाथ से ही प्राप्त हुआ था, इसके माध्यम से कठोर से कठोर हृदय वाले पुरुष स्त्री को पूर्ण रूप से सम्मोहित किया जा सकता है और उसे जीवन भर मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाया जा सकता है।

यद्यपि यह प्रयोग दुर्लभ और गोपनीय है, पर पत्रिका पाठकों के लिए मैं यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ—

अमावस्या की रात्रि को दगीचे या घर के किसी कोने में बैठ जाय और अपने आसन के नीचे समान से लाकर बोड़ी सी राख रख दें आसन ताल रंग का होना चाहिए फिर दक्षिण दिशा की ओर मुड़कर सामने उसका चित्र रख दें जिसे पूर्ण वशीकरण या सम्मोहन करना है।

इसके बाद उस चित्र के सामने मान इच्छावान माला मन्त्र आप करना है और ऐसा करने पर आश्चर्यजनक रूप से कमकार देखने को मिलता है और जो याग का संबंध धिरोशी होता है, वह भी आपके समुत्पन्न हो कर आपके कहे अनुसार कार्य सम्पन्न करने लग जाता है।

मन्त्र

ॐ ऐं ऐं श्रुतक वक्ष्यमानाय मम आज्ञां परिपालय ऐं ऐं फट् ।

यह प्रयोग दिलने में अत्यन्त सरल है परन्तु इसका प्रभाव अचूक होता है और तुरन्त ही हम जिसे सम्मोहित करना चाहें उसे अपने वश में करने में समर्थ हो पाते हैं।

तब कह छाड़ा हो गया उसमें से एक सुन्दर स्त्री जयपद बोझा बहुत हिम्मी आलो भी उतने मुँ में घरेलू किया कि मैं स्नान कर लूँ और जो सुन्दर वस्त्र पड़े हूँ उसको धारण कर लूँ ।

मैं बिरौह भाग से उन पाँचों की देखता रहा वे स्त्रियाँ सुन्दर थी थीर सभी लगभग बीच बाईत वर्ष की साधु की थी, उनकी छाँचों की कामुकता मुझे साफ साफ दिखाई दे रही थी उनके कहने के अनुसार मैंने स्नान किया, एक तरफ सुन्दर वस्त्र पड़े हुए थे उन वस्त्रों को धारण किया और उनके बाद जब मैं इन सब कामों में निवृत्त हुआ तो लगभग रात के तीस बजे बचे थे ।

मेरी आँखों में नींद आ रही थी । मैं उनको सोचता हूँ वेदव्याली करीबी थी और के पास मुझ ने बहुत कर रही थी वेदव्याली कर रही थी, उलझित कर रही थी और मैं बाथें तब के चित्त हुआ कुछ भी निश्चय नहीं कर पा रहा था ।

कुछ ही समय बाद उसमें से एक स्त्री ने मुझ पर कुछ नम्र मन्त्र, पद्य कि बोझे बहुत लगाने का आनन्द था परन्तु मुझे जान नहीं कि उसने किन्हीं मन्त्र का उपयोग किया भी अकस्मात् से बसावा उलझित हो उठा और उन पाँचों स्त्रियों ने उस रात मेरे साथ जो कुछ भी किया उनको लिखते हुए या कहते हुए भी जाने ली आ रही है ।

सुबह उठना होते से पूर्व उसमें से एक स्त्री ने प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरा और हवा में से कुछ तरंगों के शक्ति निकाले और पड़ कर मेरे तबीयत पर बँक दिये ।

सायद प्रायः विस्मय नहीं करे और यह विस्मय करने लायक बात भी नहीं है परन्तु यह भी समय जारी और लग बात है कि उसी क्षण ऐसा मन्त्र जारी एक छोटे से तौले में परिवर्तित हो गया, उस स्त्री ने मुझे उठा कर प्यार से एक तौले के पीछे मेरे रख दिया और बाहर से दरवाजा बन्द कर दिया, यही नहीं भविष्य उसने



पीछे के अन्दर हो एक कठोरी बने की शाल भी रख के और छत पर लट कर दरवाजे को बाला लगा कर बन्द कर ली गई ।

मैं अपने साथ पर आश्चर्य कर रहा था, मुझे अपने साथ पर विचार आ रहा था मेरी बुद्धि और सोचने की शक्ति में किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं आया था परन्तु मेरा तबीयत थोड़ा फीट का, पुरुष शक्ति का महसूस कर एक छोटे से तौले के रूप में परिवर्तित हो गया था और उस लोहे के पीछे मेरे सँद चौक मार मार कर अपने साथ लगे मुहान कर रहा था ।

मुझे यह यह कर चौक की बातें याद आ रही थी कि यह विद्या बंगाल में मान भी जोड़ित है और मान भी वे इस विद्या के सहारे किसी पुरुष को बकरा, भेड़ या तोता बना कर रख देती है तथा रात को उसे पुरुष बना कर अपना मनोरंजन करती है ।

मुझे यह यह कर चौक पर मुला आ रहा था कि वह अचानक कहाँ चला गया कुछ कह कर तो जाने

उसने भी ज्यादा मुँह बपने काज पर कोशिश रहा था यहाँ तो इस तरह काया और कभी बपने कापको इस मुताबिक मैं बाबा वर जब हो भी क्या सकता था, राज भर के उन्होंने मेरे हाथ को जो रीखा था, वह तो मैं ही जानता हूँ।

अधमन राज के नीचा उन बने अपने घरवाले का कया कहेता हुआ अनुभव हुआ, कोछे देर में के बाबा निरास मनर को यहाँ अपने से काज एक स्त्री नहीं छोड़े

जी, उनमें से एक स्त्री ने मुझे बाहर निकाला और हाथ में से सरसों के दाने प्राप्त किये और कुछ मन्य बुरबुरा कर मेरी ओर ऐसे तो आसक्त हो बात यह है कि इनके ही क्षण में अपने प्रसन्न शरीर में था गया था, कभी मैं अपने जात्रको देख रहा था और कभी मैं उस क्षात्री पर हुए चीन्हे को देख रहा था जिसमें कुछ क्षण पहले मैं बैठा था।

इस अपने साथ उत्तम जीवन से कर बाई थी उन्होंने

सिद्ध योगीश्वर

मेरे पूर्व जन्म के घोर इस जन्म के पुण्यों का उदय है कि मैं सिद्धाश्रम तक पहुँच सका हूँ, इसे जीवन में सोचा भी नहीं था, कि मुझे कभी सिद्धाश्रम पहुँचने का अवसर भी प्राप्त हो सकेगा, पर आज इस धरती पर आकर मैं अपने आपकी रोमांचित अनुभव कर रहा हूँ, यहाँ का कया-कया पवित्र त्रिय और मनोहारी है, यहाँ की वस्ती पर लोटने की जी चाहता है, यहाँ के एक कल के बदले यदि पूरा जीवन भी व्योछावर हो जाय तो घाटे की बात नहीं।

मैं समता सामता सिद्ध योगीश्वर के किनारे पहुँच जाता हूँ, इतना स्वच्छ और पारदर्शी जब मैंने अपने जीवन में पहली बार देखा है, मैं देख रहा हूँ कि यहाँ साधु सन्यासी विचररर कर रहे हैं, मुवा सन्यासी सन्यास वंश अधर्म, जप, तप, ध्यान में लीन है, देवागनाएँ पास-पास विचररर कर रही हैं और माया बातावररर मनोहारी मुख और स्पर्शिल सा है, सभी में सिद्ध योगीश्वर के किनारे एक स्वच्छ स्फटिक जिला में सेठे हुए सन्यासी को देखकर पहचान लेता हूँ कि यह तो बड़ी सम्पत्ती है। जिनमें मैंने कमलज में देखा है, गांगुज पर साधनारत पाया है, हहरीली नदी में छलांग लगाते हुए देखा है, यहाँ इनके स्वरूप को देखकर जीवन धन्य हो उठा, इतना दिव्य और तेजस्वी स्वरूप पहली बार देख रहा हूँ, जीवन और तपस्या की व्योत्सना से प्राप्तिरत यह शरीर अपने आप में अद्वैतीय है।

देख रहा हूँ कि सामने सन्यासी और सन्यासिनियाँ बैठे हुई हैं, और उस योगी निखिलेश्वरानन्द जी के मुँह से निकले हुए एक एक शब्द को ध्यान से सुन रही हैं, उनकी बाणी में लोच है, एक एक शब्द ने आत्म विश्वास और शब्दों का प्रवाह ऐसा है, कि जी चाहता है, वहीं उसी स्थान पर हजार-हजार वर्षों तक बैठे रहूँ, वे बोलते रहें, हम सुनते रहें।

कई-कई विनेयताओं, मुखों और व्यक्तियों से सम्पन्न ऐसे योगीराज निखिलेश्वरानन्द जी को मेरा शब्द शब्द प्रणाम।

एक दो
बड़ी

उपने
मे की
श था
न जो
श था
श था

ही थी
आज
, मेरा
से पूर्व

श कि
आता

मुझे खाना खिलाया पास में ही गर्म पानी रखने की व्यवस्था की मुझे स्नान करने के लिए कहा। धीरे धीरे बदल देने की कृपाया हो।

मैं यन्त्र वासित हा हावें कर रहा था मुझे ज्ञान नहीं था कि मैं क्या कर रहा हूँ यंत्र क्षमता ही ज्ञान था कि जो कुछ वह कह रही है, वह सब कुछ करने के लिए मैं बाध्य हूँ।

बहुत दूरी रात उठेनि मेरे साथ बिताई, सुबह जब प्रभात होने लगे था मैं थक कर दूरी तरह से बुर हो गया था, शरीर में शक्ति का संचयन भी नहीं रहा था धीरे धीरे इसी प्रकार के बाधित होता बना कर पीछे में कंध कर कमरे का ताला लगाकर चली गई।

यह कम समयम मुझे एक बला एक दिन जब मैं पूर्ण सुख रूप में था तो एक सुन्दरी की मेरी अपनी व्यथा कह मुझसे, दायाद उसे मुझ पर दया भा गयी उसने कहा मैं तो अब तक तुम्हारे शरीर में तानक है, तुम्हें यहाँ से जाने यहाँ देखे परन्तु मैं तेरी व्यथा से भावुक हो उठी हूँ मैं तुम्हें एक भयना बता देती हूँ जिसको दबोचत तुम जब दिन में यह होता बना कर चली जाय तो उस मन्त्र को पढ़ कर वापिस अपने प्रतली स्वरूप में आ जाता धीरे धीरे साथ ही साथ मैं दूसरा मन्त्र भी बता देती हूँ जिससे कि रात होते होते तुम थिरकुट करने से लगभग सौ मील दूर जा सकी, जिससे कि मैं वापिस तुम्हें पकड़ कर ले सकूँ।

यद्यपि वह ऐसा कहते हुए धीरे करते हुए घरभीत की, परन्तु उसने मुझे दोनो दिने पहला मन्त्र दो देह स्थापित मन्त्र था जिसके द्वारा मानव देह में भा तोंडा की देह में स्थापित किया जा सकता है धीरे वापिस उससे मानव देह में बसता जा सकता है तथा दूसरा मन्त्र हो प्रयामी मन्त्र था जिसके माध्यम से व्यक्ति एक द्रष्टे

में सीधा हमसे व्यथा मील दूरी पार कर सकता है।

दूसरे दिन सुबह जब वे मुझे बन्द करके चली गई मैंने इन दोनों मन्त्रों का प्रयोग कर पहले तो घ भाग को तोंड को पीछे से अपने प्रतली मानव स्वरूप लाया धीरे धीरे से चक्का दे कर बन्द दिखाई को स दिया।

मैं चारों तरफ संशकित नजर से देख रहा था कोई मुझे देख न ले या पहिचान न ले धीरे धीरे दोप समय जब सभी लोग भोजन खादि से विवृत हो कर भ्रम विचित्र के लिए उठते होगे तब मैंने दूसरे मन्त्र प्रयोग कर उस थिरकुट करने से बाहर निकल आ धीरे कुछ ही घंटों में मैं सी मील से भी ज्यादा की निकल आया।

धीरे जब मैं काफी दूर निकल आया तब मुझे उनका श्रय नहीं रहा था तो बाधवर्ष की बात यह सामने ही बहो धीरे धीरे कपातनाम बंद हुए दिखाई दि एक बार तो मुझे उन पर मुझा भी माया परन्तु उन मुझा करता व्यर्थ था।

मैं ध्यान भी उस क्षणात नामा सुन्दरी के प्र क्षमता धीरे धीरे हूँ कि उसने मेरी मन्त्र की उन दो मन्त्रों को सिसया धीरे वहाँ से भाग जाने में सहाय की।

इसके बाद मैंने इन प्रयोगों को दिल्ली, बनारस कई स्थानों पर वैज्ञानिकों के सामने प्रदर्शित कर सिद्ध कर चुका हूँ कि हमारे तन्त्र ध्यान की उलने प्रामाणिक धीरे सत्य है तथा उनके द्वारा देह स्थापन किया जा सकता है, माय भी जब मैं उन बीते दिनों को याद करता हूँ तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं



औघड़...औघड़...औघड़....!

हां मैं औघड़ हूं

औ

घड़ का नाम उच्चारण करते हो आधी के समान एक भयानक लम्बीर उभर कर आ जाती है, निकटतम रूप दमक आने के पक्षपात उभरने विषयी उन मज्जु वादी, बड़ी बड़ी आंखें, हाथ में छतार, सारे सरीर पर राख लगी हुई, लम्बा बीटा बील भील और मुंह से पापितों की भयानक धमकी बरसती आती...कतलब मैं ही औघड़ तो औघड़ ही होता है, यह न किसी की परवाह करता है और न किसी पर इसे क्या आती है, जो कुछ मन में घाया, उसे कर मुकरता है, इस बात की भी परवाह नहीं करता कि हत्या, वक़्तान क्या निकलेगा, मर्जी ही धुन में मल्ल रहने वाले ये औघड़ सारादर्श में भारों और लिखने हुए देखने की निता जायेगे

औघड़ सम्प्रदाय अपने धाम में घातक सम्प्रदाय है, लम्बी लम्बा पदलि चलना क्रिया कलाप, इनका आधार विचार और इनका जीवन दर्शन सब कुछ भयानक होता है, बसला सिव के ये उपरसक होते हैं परन्तु लम्ब की इनके पास कुछ विशेष शिवाएँ होती हैं जिनके माध्यम से ये प्रत्येक की संभव कर दिखाते हैं, इनके पास कुछ ऐसी दूत विचारों होती हैं, जिनका प्रयोग करने पर आत्ममात्र की परी उठता है यदि ये प्रस्तुत होने हैं तो सामने वाले को दल में निशान कर देते हैं और यदि किसी पर फोड़ित हो जाते हैं तो उसका तथा उसके बंधु का सत्यानाज करने से भी नहीं बचते, इसीलिए लोग औघड़ों से बधा संभव हुए ही रहते हैं।

कुछ लोग मनुष्य के बने या कुछ के बने वाले इनके पास बहुर जाते रहते हैं, और नाजा, मुलफा, ज़रव

यादि केले रहते हैं, कभी कभी ये उस गले की पीनक में लट्टु या कोई अंक बना देते हैं या कोदरी का कोई नम्यर बना देते हैं और अधिकतर इनकी बात सत्य ही निकलती है।

ऐसे औघड़ पांच हैं। हर के बाहर जंगल में या अधिकतर भयानक के किनारे ही रहते हैं, कई बार तो इन्हें मुर्दा जलाने के बाद बचे हुए लंगरों पर रोटी डेकते हुए और खाने हुए देखा जाता है, कई औघड़ रात को मनवान में दूत प्रेतों के साथ विचरना करते हुए देखे गये हैं, ऐसे घटना पाँचों से औघड़ों को कब में तो सास निकाल कर उसकी आत्मा पर बैठ कर साधना करते देखा है, यह बात तो निश्चय है कि इनकी साधनाएँ तीक्ष्ण और भयानक होती हैं तथा प्रत्येक के बन्ध की बात नहीं होती, परन्तु ये साधनाएँ अपने धाम में महत्वपूर्ण कही जाती हैं।

मुझे बचपन से ही लम्ब खींचने का शौक था और मैं चाहता था कि इन लम्ब साधनाओं के माध्यम से उन विविध मर्जा की लीधों को अपने आप में मद्धापूर्ण है, कठिन है और भाव के युग में बचनेदार है यह बात भी निश्चित है कि आज के युग के लोग बचनेदार की भी बचनेदार करते हैं जब तक आपके पास कोई महान सिद्धि नहीं होती, जब तक आपके पास कोई तीक्ष्ण मारण प्रयोग नहीं होता, जब तक आपके पास में कुछ बचनेदार करने के विधान की विद्या नहीं होती तब तक लोग भागते पड़ी, और ऐसी साधनाएँ औघड़ साधनाओं में ही प्राप्त हो सकती हैं।

घोषत्र अपने आप में एक सम्प्रदाय है, और तंत्र की विभिन्न क्रियाओं के माध्यम से इसका प्रभाव है, कहते हैं कि जब भगवान शिव स्वर्ग के विद्योग में पतल हो कर दमरु उबर बिखरने कर रहे हैं, और जब किसी भी प्रकार से उनके मल को वापस नहीं मिली तो क्रोध से उनका सारा शरीर अंधारे की तरह जलने लगा और उन्होंने भयानक तापवन भूल्य श्रारत्र कर दिया, इस तापवन नृत्य से ही श्रीषष्ठ सम्प्रदाय की उत्पत्ति हुई, भगवान शिव के श्रीरुद्र, पुण्यदत्त, और श्रीषष्ठ ने तीन विभिन्न गण से श्रोत्र की गे के डारु हो तीन विशेष प्रकार के सम्प्रदाय प्रवर्तित हुए जिनके नाम पर ही ये सम्प्रदाय कहलाते हैं, इन सब में श्रीषष्ठ सम्प्रदाय ज्यादा लोकप्रिय हुआ, क्योंकि इसके माध्यम से तंत्र का प्रभाव दूरस्त और प्रबल होता है

श्रीषष्ठ साधना के पांच विशेष नियम होते हैं (१) वह रमजान में हो रहता है और वही पर नुब में को छाती पर बैठ कर माथे पर सम्प्रदाय चमक है, (२) वह चिता के अंधारो पर ही भोजन करता है, और जीवन खाता है (३) उसके लंबे लाम्बी भूत होते हैं उनके माथे पर से ही कार्य सम्पन्न करता है, (४) ये साधक भगवान पर ही अपने इच्छा मानते हैं और श्रीषष्ठताप को अपना गुप्त मानकर कार्य सम्पन्न करते हैं, (५) तंत्र की विभिन्न क्रियाओं में हमेशा रत्न रहते हैं, और ऐसी विभिन्न सिद्धियां प्राप्त कर लेते हैं जो बाज के मुख में लगभग असंभव है, या अविश्वसनीय है।

यै शारम से हो तंत्र के प्रति आकर्षित था और कुछ तांत्रिकों के शास्त्र गया भी, उन्होंने कुछ मार्ग भोजन वयोकरण यात्रि क्रियाएं विधानों की कोविश को पर इसके मेरा मन नहीं प्रश, मैं तो कोई ऐसी साधना करना चाहता था जो अपने आप में प्रायोगिक हो, मैं दुनियां को दिखा देना चाहता था कि मेरी भी कुछ हस्ती है और मैं भी बहुत कुछ कर के दिखा सकता हूँ, मा-बात मेरे चम-पन में ही भर मेरे ये श्री-वैश्वारा जीवन बाढ़ कर मैं बहुत हुआ था, इसलिए मेरे मन में शास्त्र के प्रति आकर्षण ऐसी विशेषता साधनाओं के प्रति अदृष्ट से ज्यादा रुचि थी

श्मशान शान्त प्रयोग

मह श्मशान जागृत करने तो आ जाय और आप उसे जागृत भी कर दें नर यदि उसे समाप्त करने की क्रियां ज्ञात नहीं हो तो बड़ी भारी भुवीवत का सामना करना पड़ सकता है श्रवत जब साधक को श्मशान जागरण करने की सिद्धि प्राप्त करती हो तो साथ ही साथ उसे चाहिए कि श्मशान शान्त करने की विधि भी ज्ञात हो।

यह भी तीन दिन का प्रयोग है, त्रयोदशी की रात्रि को श्मशान में जा कर बिता की मस्म अपने शरीर पर लगा ले और सर्वथा न हो कर पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और फिर भगवान भूतनाथ का नाम उच्चारित कर अपने चारों ओर बिमटे से रक्षात्मक घेरा बना लें।

इसके बाद निम्न मन्त्र को छः घण्टे तक जपे इसमें किसी भी प्रकार की मातापिता मन्त्र उपकरण आदि की जरूरत नहीं होती केवल तीन दिन यह मन्त्र जप करने पर श्मशान शांति सिद्धि प्राप्त हो जाती है और फिर वह जब भी चाहे जागृत श्मशान को शान्त कर सकता है, यही नहीं अपितु इस साधना को सिद्ध करने के बाद यदि किसी को भूत प्रेत परेशान कर रहे हो या उपद्रव कर रहे हो तो उसे बांध सकते हैं, तथा उसका प्रभाव समाप्त कर सकते हैं।

मन्त्र

ॐ भं भं भूतनाथाय शान्त रूपाने श्मशान शान्तायै भूतनाथाय नमः

यह तीन दिन का प्रयोग सम्पन्न करने पर उसे वह सिद्धि प्राप्त हो जाती है और इसके द्वारा वह किसी भी प्रकार के उपद्रवी भूत को अपने वश में कर सकता है या जागृत श्मशान को शान्त कर सकता है उसे किसी प्रकार का कोई भय या डर जीवन में व्याप्त नहीं होता।

१००
 १०१
 १०२
 १०३
 १०४
 १०५
 १०६
 १०७
 १०८
 १०९
 ११०
 १११
 ११२
 ११३
 ११४
 ११५
 ११६
 ११७
 ११८
 ११९
 १२०
 १२१
 १२२
 १२३
 १२४
 १२५
 १२६
 १२७
 १२८
 १२९
 १३०
 १३१
 १३२
 १३३
 १३४
 १३५
 १३६
 १३७
 १३८
 १३९
 १४०
 १४१
 १४२
 १४३
 १४४
 १४५
 १४६
 १४७
 १४८
 १४९
 १५०
 १५१
 १५२
 १५३
 १५४
 १५५
 १५६
 १५७
 १५८
 १५९
 १६०
 १६१
 १६२
 १६३
 १६४
 १६५
 १६६
 १६७
 १६८
 १६९
 १७०
 १७१
 १७२
 १७३
 १७४
 १७५
 १७६
 १७७
 १७८
 १७९
 १८०
 १८१
 १८२
 १८३
 १८४
 १८५
 १८६
 १८७
 १८८
 १८९
 १९०
 १९१
 १९२
 १९३
 १९४
 १९५
 १९६
 १९७
 १९८
 १९९
 २००

मृत्त में गन्ध की ताकत है और वास्तव में ही इनके
आश्रय से प्राणियों को जमीन पर उतारा जा सकता है,
हवा को बांधा जा सकता है और नृंह में शब्द उत्पन्न
होती ही सामने आने की सुनास किया जा सकता है।

यहाँ दिनों में समाचार मिला कि बुतागढ़ में एक गोबर इन दिनों माना हुआ है जो कि पहले तो ग्रन्थ प्रदेश के जंगलों में शाखाएँ करता था परन्तु कुछ कारणों से वह बुतागढ़ आया हुआ है और यहाँ पर शाखा समझ कर रहता है।

नूतन
मिनु
रहे
माथ

में राजधानी का रहने वाला हुआ और गुजरात में प्रान्त
के निजाम ही है, गुजरात गुजरात का प्रसिद्ध शहर है, श्री
रत्ने पास ही एक काकोई बड़ा भवना है, जिसमें योगी
रत्ने, जयलाल विवरकर रहते हैं, रहते हैं, गुजरात के
पास ही एक बहुत बड़ा शहर है, जिसको निज पहाड़
का नाम है, और कहते हैं कि आज भी वहाँ पर रुई
उत्पन्न के साथ जयलाल विवरकर रहते रहते हैं,
और बड़ा-बड़ा देशमें जो भी मिल जाते हैं।

मनः
उने
बह
त में
कर
डर

मैंने बस का टिकट कटवाया और रहमवाण से होता
हूँ, सुनाइ आ पहुँचा, जूतागद के बाजार में हूँ। ता
मुझे क्या कि यह घाघ गुनराही बहर है और प्राचीन
रहोके के बता दूँ। है, बहर में मुँ की कोई विशेषता नजर
यही आती, जूतागद बहर से लगनम पाँच हात किलो
मोटर दूर प्रसिद्ध पहाड़ है, और इन्हीं के एक किनारे
एक मकान में जिसके बारे में मैंने हवा का कि कोई

इमशान जागरण प्रयोग

श्रीधर सावना के लिए कई बार इमजान में जाकर इमजान जागृत करना होता है, जागृत करने पर पूरा इमजान जाग जाता है, और जितने भी भूत प्रेत होते हैं वे चारों तरफ से मान्धा कर एकत्र होते रहते हैं, और भयानक दृश्य उपस्थित करते हैं, नृत्य करते रहते हैं।

यह गोपनीय प्रयोग है पर फिर भी जो इस साधना में विशेष सफलता प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें समान सिद्धि तो प्राप्त करनी ही पड़ती है।

नीचे मैं उस आँख के बताये हुए, बिनिष्ट
द्रव्य को बता रहा हूँ जिससे कुछ ही क्षणों में
पूरा श्मशान जागृत हो जाता है और जागृत हो
जाने के बाद किसी भी भूत को कोई भी कार्य है
तो वह तुरन्त सम्पन्न कर लेता है।

यह प्रयोग कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से अग्रभास्या
प्रभातुं तीन दिन करना चाहिए, माघी रात को
अग्रभाण के मध्य में पश्चिम दिशा की ओर मुंह
कर बैठ जाय अपने बाएं और दाहिने को के बिमते से
अग्रभाण रक्ष का नाम ले कर रक्षात्मक घेरा बना
दे और फिर निम्न मन्त्र का करावर उच्चारण
करता रहे कुछ ही क्षणों में अग्रभाण आगत हो
जाता है और आगत अग्रभाण को देखने का तो
अग्रभाण ही एक बात है ।

३. महान जगदण मन्त्र

क्रीं क्रीं कालिके भूतनायाय रौद्र स्वर्याय भूत प्रेत
पिशाच जाग्रय इमं ज्ञान उत्थापय क्रीं क्रीं कालिके
५८।

वास्तव में ही यह थोड़ा तीव्र प्रयोग है पर
जिन साधकों में हौसला हिम्मत हो उन्हें यह प्रयोग
अवश्य सन्निभ करना चाहिए।

धीवद भावा हुआ है और साधना समाप्त कर रहा है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि तन्त्र साधना अपने आप को मिटा करके ही प्राप्त की जा सकती है, यदि प्राप्त में त्याग करने की इच्छा है, यदि अपने प्राणों विवर्जित करने की भावना प्राप्त में है, यदि प्राप्त करने जीवन को बाध पर लगाने की हिम्मत रखते हैं, तो यथसंभव ही साधना के क्षेत्र में उतर सकते हैं, और जो अपने जीवन को पूरी तरह से भूलने की हिम्मत रखता है, जो अपने आप को मरिचा में डाल देने की क्षमता रखता है, वही तन्त्र के क्षेत्र में बहुत कुछ प्राप्त करने की अवसर रखता है।

मैं मूढ़ता सामता पहाड़ के आठ पास जा पहुँचा और पहले तो पहाड़ की चोटी की ओर बढ़ा, चोटी पर पहुँचने के लिए ठेठ तक सीढ़ियाँ बनी हुई हैं और सबसे ऊपर जगदम्बा की मूर्ति स्थापित है, वहाँ अत्यन्त कठिन और मुश्किल है परन्तु मैंने निश्चय किया कि मगदाल विज की धाराधना करने और उनका बरदान प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है कि मैं भगवती जगदम्बा के दर्शन करूँ।

जब तक मैं पहाड़ से नीचे उतरा तब तक सपनाम साँके ही गई थी मैं पूछ ले सका हूँ या पहाड़ के नीचे दुकान की ओर मैं दुकान के सामने ही चढ़ा हो गया, मेरा शरीर और डील डौल देख कर दुकानदार कंप सा गया, सन्धी शब्दों अटायें, मुझे वहीं घोंबें और ताँदे शरीर पर मसी राखें मेरे आश्चर्य कि मैं कोई पहुँचा हूँ या साधू हूँ उलने, मुझे दुकान के किनारे पर बैठने के लिए कहा और पास के ही कुछ पृष्ठियाँ, मिठाई और सब्जी खरीद कर ले आया मेरे सामने रख दी।

मैंने बिना छपर उधर देखे डट कर भोजन किया फिर वहाँ से उठ कर बिना उसकी कुछ कहें श्मशान की ओर बढ़ गया, मुझे श्मशान के कितो प्रकार का भय अब नहीं रहा था क्योंकि मेरा शक्तिशाल, सत्य श्मशान में ही व्यतीत हुआ है, और छोटी मोटी साधनाएँ सम्पन्न करने से श्मशान से एक प्रकार का सुखाव सा हो गया है। अब



तो यदि हकीकत में कहा जाय तो बाहर या गाँव के धाराम ही नहीं मिलता, श्मशान में धाराम से सम्मान कर सो जाता है और एक दो मिनट में ही खरिद भरते लग जाता है।

मैं जब उस विज्ञान श्मशान में गया तो रात फिर भाई थी, अगर अभी तक रोगनी समझ नहीं हुई थी मैंने उधर उधर घूँककर लगाया तो मुझे वहाँ कोई सीढ़ी नजर नहीं आयी, मैंने श्मशान में रहने वाले लोग से इस संबंध में पूछा तो उसने जबाब दिया कि पिछले महीने से एक मजानक अचोरी यथसंभव इस तरह भाया हुआ है, पर अभी तो पाव हास बिना श्मशान में हो पड़ जाता है और कभी यथसंभव हो जाता है तो उता ही नहीं बनता कि कहा गया है उसके भाते का शरीर जाने का कोई निश्चय और ठिकाना नहीं है इसके धलाया उसने क्रोध की भाषा बरकत से जबाबा है और प्रायेण मैं यह कुछ भी कर बैठता है, उसने अपनी भटना सुनाते हुए कहा कि मैंने एक दिन उनसे चिन्ता उठनी होने तक रुक जाते

एक घड़ का नेत्र श्मशान के किनारे ही है वही पर यह शक्ति बँट गया, मैंने देखा कि चारों तरफ पादह बीस पर मुक्त बिन्दु हुए हैं, कुछ शराब भी बोतले में छपर उधर बिन्दु ही है और मोत के हुक्यों पर कुत्ते लोच-लचो कर भड़े थे, भयानक होते इन सब के प्रति निश्चिन्त और निश्चित था, यह वरचस्व की उपरोक्त हुई जटायों पर

एक तरफ बँट गया और मेरे चारों में पुष्पों लगा, मैंने अपनी बात कह गुनाई, उसने कहा तुम दिन भर यही रहोगे, हिमोष्ण होगे नहीं, छपर उधर भटकोये नहीं, मैं जान भी यही पर तुम से मिलूँगा और ऐसा कहने कड़ते वह जंगल की ओर निकल गया

दो दिन भर वहाँ बैठा रहा हुने तो उनकी भावना

पुरुष को स्त्री में परिवर्तित करने का प्रयोग

जिस श्रौच के पास मैं रहा था वह उनकी बहुत बड़ी कृपा है कि उन्होंने इस श्रद्धा भक्त-साधक प्रयोग को भी मुझे पुरी तरह से सिखा दिया था और मैं पाठशाला के हित के लिए इस प्रयोग को भी प्रयोग नहीं रखना चाहता।

यह १८ दिन का प्रयोग है, श्रमावस्था से इस साधना का प्रारम्भ करना चाहिए, श्मशान में ठोक यात्री रात को किसी मुर की छत्र में निवास कर उसके नीचे पर बैठ कर पश्चिम दिशा की ओर मुख कर रहा मानवा से दिग्गन्तव्य को ५१ माला मंत्र जप करना चाहिए।

मंत्र जप से पूर्व मुँह को पानी से महला कर पवित्र करना चाहिए और स्वयं के शरीर पर लाल मुख की भस्म का लगा लेना चाहिए मन में किसी प्रकार की चंचलाहट न रहे और प्रविचलित भाव से बराबर मंत्र जप करता रहे, मंत्र जप करते समय कई प्रकार के दृश्य या विषय दिखाई दे सकते हैं पर इन्हें मत तो बचाना चाहिए और न विचलित होना चाहिए, साधना करते समय अपने साथ गुरु के अनावा और किसी को ले जाना बजित है।

मन्त्र

ॐ क्रो क्रो क्रो क्रो क्रो देह परिवर्तनायै क्रो क्रो क्रो हुं हुं फट्।

इस प्रकार १८ दिन इसका नियमित रूप से अपने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है, इसके लिए अन्य किसी भी प्रकार के उपकरण आदि की जरूरत नहीं होती और पहली बार में ही साधना सिद्ध हो जाती है।

जब इसका प्रयोग करना हा तो इस मंत्र को एक या दो बार उच्चारण कर सामने वाले पर जाँरों से धुक दे तो सामने वाला यदि पुरुष होता है तो वह पुरुष स्त्री हो जाता है और यदि वह कोई स्त्री होती है तो पुरुष पुरुष रूप में बदल जाती है।

यह प्रयोग मेरा आज्ञायार हुआ है और सैकड़ों बार मैंने इस प्रयोग को सिद्ध किया है, उस श्रौच का ही यह प्रसाद स्वरूप प्रयोग मुझे प्राप्त हुआ है जो कि वास्तव में ही एक लोप होती हुई भक्तसाधक विद्या और प्रयोग है।

हृदय
स्थान
हृदय
मा
मंत्र
मन्त्र
यह

पर
मंत्र
की
और
पुत्र
स्त्री
हृदय
हृदय
हृदय

पालन करना ही था, जब लगभग रात होने की घड़ी तो वह नींद सोया, इस बीच श्मशान में कई लोग अपने संबंधियों को जलाने के लिए आगे की ओर जागृत जगह बिजाए जा रहे थे। भी, मैं निर्जित प्राय से इन जगहों हुई बिजाई को देख रहा था, सोच रहा था मनुष्य का जीवन बारा भंगुर है और आखिर मनुष्य को इसी रास्ते से जाना होता है।

जब चौबड़ बासिल लौटा और मुझे वहीं बैठे हुए देखा तो बोड़ा प्रसन्न हुआ बोला तुमने कुछ पूछ लगी है तो कुछ पूछा कर का के, मुझे भी लगी है और ऐसा कहते कहते वह मुझे लेकर एक पिला के पास ले गया, पिला भाभी से ज्यादा जल चुकी थी और संवंधी अपने घरों की नींद बूने थे, उसने एक मुई को धोपही ली जो दरवाजे के नीचे पड़ी हुई थी उसमें पानी डाल कर पिला पर रख दिया और उसमें कहीं से चावल ला कर डाल दिये, थोड़ी देर में चावल पक गये तो उसने एक दूसरी चोपही में चावल चावल डाल कर मुझे खाने के लिए दे दिये और बाकी उस चोपही में ही उगदे चावल ला कर उसी में पानी भर कर पिला और डकार ले कर बासिल वरध के वेद के नीचे धाकर रीत गया।

यह तब रात्रि के लगभग दस बजे थे, उसने मुझे खाने पास बैठने के लिए कहा और मैंने देखा कि उसने हम दोनों के चारों ओर एक चिमटे से पैरा बनाया है और फिर वह कुछ मन्त्र बुझावने लगा मैंने अनुमान लगाया कि यह श्मशान जगाने का मन्त्र है लगभग पांच मिनट बीते होने के प्रमाण के चारों ओर से भूत-प्रेतों के ठंड के ठंड माते हुए हिलाई दिये चारों तरफ से हो हल्ला करते हुए प्रभु-प्रेत, पिशाच, राक्षस या रहे थे और मैंने देखा कि कई भूत प्रेत लोक को तरह उस चौपड़ से व्यवहार कर रहे थे चावल इन्में से अधिकतर भूत चौपड़ ने मिट्ट कर रहे थे, मुझे कोई विशेष डर नहीं लगा क्योंकि इससे पहले मैं श्मशान जागरण किया और भूतों को मिट्ट करने की क्रिया सीख चुका था।

थोड़ी ही बेर के बाद चौपड़ ने मुझे उठाने में ही

बैठने के लिए कह कर मुझे ले के बाहर दूध गया और उन दूध प्रेतों के साथ दूध किन्ना करने लगा, ऐसा लग रहा था कि वे कोई विशेष तार्किक क्रिया सम्पन्न कर रहे थे, यह मेरे लिए सर्वथा आश्चर्यजनक था, भूतों के साथ मानव कोई साधना सिद्ध करे, यह एक क्षमता थी और भी पर मैं पहली बार देख रहा था।

इस प्रकार पूरी रात बीत गई, सुबह लगभग चार बजे वह बासिल अपने रीरे में धा गया और मन्त्र पढ़ कर श्मशान को गालत कर दिया, थोड़ी देर में चारों ओर शांति सी हो गई वहां पर भूत प्रेतों का कोई प्रस्तित्व बाकी नहीं बचा था।

जब वहाँ से उठकर तलाब के वेद की ओर हम बढ़ रहे थे तो चौपड़ ने कहा वे सभी मेरे प्रीयक भाई बहिन है और इन्में से कुछ ही बहुत ही उच्छ कोटि के साधक है इन्में से कुछ को मैं चौपड़ साधनाएँ सिखा रहा था और एक दो से सीधे रहा था।

बादतब मैं ही यह चौपड़ साधनाएँ तो वास्तव विलम्ब सारा और तेजस्वी दिखाई देती है, अधिकतर साधक या चौपड़ को वे रीरे से बाहर निकलने को हिम्मत नहीं करते जब कि यह तो उन भूतों के साथ ही ठंड बैठ रहा था, नाच रहा था, गाराब में स्नान कर रहा था और मन्त्र पढ़ता हुआ, कुछ विशेष क्रियाएँ सम्पन्न कर रहा था, मैंने मन में सोचा कि यह कोई साधारण चौपड़ नहीं है बहुत ही पढ़ाया हुआ है और कुछ ऐसी साधनाएँ सम्पन्न करने की कोशिश कर रहा है, जो, अब तक प्रयात है प्रत्यक्ष से या श्रुत्य से इन प्राचीन चौपड़ साधनाओं की मन्त्रों के बल से इतने जहां एकत्र किया होगा और उनके साधनाएँ सिखा रहा होगा या उनके साधनाएँ सीख रहा होगा, दोनों ही स्थितियों में यह प्रीयक प्रतिभाव है जो वास्तव में ही इसके पास उच्छकोटि की साधनाएँ होना संभव है।

पर दूसरे ही दिन एक प्रजीव बटना घट गई, जिसे मैं खुशामा चाहते हुए भी नहीं मना था रहा है, जगमग

घोर
लग
कर
ने के
बात

घोर

कर

घोर

रख

इस

है

अक

बा

अ-

वा

हो

हा

पर

हा

ही

प्र

है

ने

ने

ग

र

र

र

र

र

र

र

र

र

र

र

र

र

र

र

र

र

र

र

र

र

के ही सेठ हरीभाई जोबाजी भाई पटेल फलान्त हो धना-
इस व्यक्ति है घोर-घुरा मुखरात उन्हे जानता है पर उन्हें
गुप्त खेलने का घोर लड़ा लगाने का दुष्प्रसन्न धानिमकी
रबहु से यह ऐसे माधु फलीरों के चक्कर में लगा रहता
था, उसके एक ही लड़का था जिसका नाम हरीभाई था,
इन्कीता सड़का होने के कारण यह लड़का प्यार में पला
हुमा था इसके चलाना सेठ जी के कोई हस्तान नहीं थी।

पहले के पाल में सेठजी ने मेरे बारे में उस दुकान-
दार में सुना होया घोर मुझे खोजते हुए संयोगवश उस
दिन हमलाभ में आ गया दिन लगभग ग्यारह बजे थे घोर

में घोर घोषड़ कोनों बरसाद के नीचे पतते हुए बैठे थे,
घोषड़ कुछ बक गया था तभी सेठजी घोर उसके गुप्त ने
आकर प्रणाम किया वह अपने साथ कुछ मिठाई घोर
कुछ फल भी लाये थे, जो कि लायने रख दिये, फिर
कोला में सज्जक सेठ हैं घोर मेरा नाम पूरे जूपागढ़ में
मशहूर है।

पुनते ही घोषड़ उठ बढ़ा हुआ घोर बाप बैठे कोनों
को घुरने लगा, एक दो मिनट तक तो बाप बैठे को बुरला
रहा घोर फिर कहा क्या जा यहाँ के जाने, हराजी, कुत्ते
.....रुपयों के लालच में यहाँ साया है।

घोषड़ सिद्धि

घोषड़ साधना के लिए पहले, घोषड़ सिद्धि प्राप्त करनी जरूरी होती है यह प्रयोग-गोपनीय
प्रयोग उस घोषड़ से ही मुझे प्राप्त हुआ था उसने बताया था कि लोग घोषड़ साधना करते हैं घोर
सकलता प्राप्त नहीं कर पाते इसका कारण घोषड़ सिद्धि प्राप्त करना नहीं होता है, जब तक साधक
इस घोषड़ सिद्धि को प्राप्त नहीं करता तब तक घोषड़ साधनाओं में से किसी भी साधना में सिद्धि
नहीं मिलती।

इसका प्रयोग बताते हुए, उसने बताया था कि शमावस्था की रात्रि को किसी ताजे मुँद की
अमला का उसका अधिलिग-बनाये घोर अपने सामने उसको स्थापित कर दें, फिर पश्चिम की
घोर मुँह कर अपने सामने वह अधिलिग रख कर उसे रोद्र रूप से स्मरण करते हुए, लगभग छः
घण्टे निम्न मन्त्र जप करें, ऐसा करने पर घोषड़ सिद्धि प्राप्त हो जाती है घोर उसे कई सिद्धियाँ तो
स्वतः प्राप्त होने लग जाती है, इस घोषड़ सिद्धि को सिद्ध करने के बाद कोई भी घोषड़ साधना की
बाय तो उसे सफलता मिलती ही है।

मन्त्र

ॐ वीर भूतनाथाय घोषड़ महेश्वराय स्वा स्वा हुं हूं फट् ।

यह प्रयोग केवल वर्ष में एक दिन समावस्था की रात्रि को ही करना चाहिए इससे घोषड़
का शरीर सुरक्षित रहता है उस पर किसी तांत्रिक क्रिया का असर नहीं होता, घोर उसके शरीर
में अनुलनीय मल साहस घोर पराक्रम आ जाता है, इसके चलाना उसे छोटी मोटी कई सिद्धियाँ स्वतः
प्राप्त हो जाती है।

सेठजी की तन्त्र करने रहे बोलें । उनके पास क्षमा है धर्मको कौन पुछ रहा है और उसने मेरो और संकेत कर दिया, 'सा, यह रहा था कि वह बायब पुछ मे ही मिलने के लिए थाया था, क्योंकि दुकानदार ने उसने मेरी ही उल्ट कर काठी तन्त्राई जोईई के बारे में जानकारी प्राप्त की होगी ।

मुझे ही धीमे-धीमे विचार गया और बिमटा उठा कर सेठजी की पीठ पर से मारा कहाँ सारे जब मुझे कह दिया कि मुझे से चला जा फिर मुझे तेरे बाप का राज है जिसकी वजह से मुझे समझ कर रक्का हुआ है ।

सेठजी के बेटे को गुस्सा था गया और उसने बिमटा धपने दोनों हाथों से पकड़ लिया, धीमे-धीमे के लिए तो यह अपमानाजनक था कि कोई उसे बेलेन्ज कर दे, उसने जोरो से बिमटे की बाँधों और दो तीन बिमटे उस सेठ पुत्र की पीठ पर से मारा, बोले सारे में मुझे प्रभा पछला है, जा तुं कभी भीरु बन जा हींथि कहीं के ।

बाप बेटे दोनों घरवा में बर्बाद करने ही था बेटे को जबल में बदलाव माना दुःख हो गया था, उसका चेहरा पीरत की तरह बनने लग गया था और पांच मिनट के बाद घर पर सेठ पुत्र की तरफ से पीरत बन चुका था, इतना होने पर भी प्रोफेसर का गुस्सा शांत नहीं हुआ था और उसने सेठ पुत्र के गले को पकड़ कर उसके सारे शरीर के कपड़े उतार कर फेंक दिये ।

मैं बंग था बासत में ही साधा चन्दा पहने जो घर-दूर दूरा कड़ा बजाल मुक था, वह बिल्कुल बुजनी की पीरत बन कर रहे गया था, दाजी कुछ साफ हो गयी थी बक्षस्वत पूरी तरह से कमर आया था और किसी भी छिंट से नहीं होने में कोई शक मुझ नहीं रहा था ।

बाप ने अपने तन बेटे की पीरत के रूप में देखा तो बाधा बेहोश सा हो कर धीमे-धीमे के घरों में गिर पड़ा उसने कहा मुझे से गर्वता ही गई मुझे मानुस नहीं था, इतना बड़ा मजबूत हो जायिगा सब मरा इकलौता पुत्र है,

है, इसके मनाया मेरे और कोई सलाह नहीं है, और सेठ और जहाँ के गले लगा ।

बीमटे ने कहा सारे मुझे पहने ही कहा था पर मुझे अपने धन के गले में डूब था प्रथम तो माया सेरा यह बेटा एक महीने भर तक ऐसे ही जूनापुत्र में घुसेया, एक महीने भर बाद था जाना मैं इसे वापिस पुत्र बनाना हुआ पर तब तक तुं जितने भी डाक्टर बंध, हकीम ही उन सब से ईलाज कराया गया, मेरे प्रवाधा इतनी कोई ठीक नहीं कर सका और कहने कहते-उत्तरे हाथ में बिमटा उठा लिया ।

पिता पुत्र दोनों भागे जेलन को कोई नु जाईल नहीं थी, पर मैं इस तरी पटना को देखकर बायब में बलिब या कुछ ही निमटों में धीमे-धीमे ने उस सेठ पुत्र को पूरी तरह पीरत बना दिया था ।

बाद में जब धीमे-धीमे का कुछ कुछ ज्ञान हुआ तो मैंने उसने निवेदन किया वह सेठ का इकलौता बेटा है, बाप उसे वापिस ठीक कर दे क्षमाया उसके घर का जीवन बुझ जायेगा, धीमे-धीमे ने कहा ज्ञाना पापबुझी मत कर, एक महीने भर तक तो उस नेठ में भटकेने ही है तभी सारे को पता चलेगा कि धीमे-धीमे से टकराने का क्या हुआ होता है ।

बाद में मुझे धीमे-धीमे से कई साक्षात्कार मिले, बासत में ही उसका दिल बहुत ही शीघ्र और भावुक था कुछ ऐसी उलझकोटि की मियाएँ और विचारों की मुझे मिली, जो कि मजबूत हैं और प्राप्त होनी कठिन थी मुझे, वह भी स्मरण है कि महीने भर बाद सेठ अपने उस पीरत बनी हुई बेटे को ले कर अपने परिवार के साथ और मुझ-एतल के पास दल मजबूत व्यक्तियों को ले कर धीमे-धीमे के घरों में आया था और सारी ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि प्राण छूटा कर इसे वापिस पुत्र बनने में और मेरे देखने देखते ही प्रोफेसर ने कुछ मजबूत पढ़ा और सेठ पुत्र के चेहरे पर मुक बिबा, हसरे ही आए सेठ पुत्र अपनी पुत्र प्रवस्था में आ गया था, इसके कई जूनापुत्र के प्रतिष्ठित व्यक्ति साक्षी हैं, और वह सेठ पुत्र हरीप्राई बाप की जीवित है ।

100
 101
 102
 103
 104
 105
 106
 107
 108
 109
 110
 111
 112
 113
 114
 115
 116
 117
 118
 119
 120
 121
 122
 123
 124
 125
 126
 127
 128
 129
 130
 131
 132
 133
 134
 135
 136
 137
 138
 139
 140
 141
 142
 143
 144
 145
 146
 147
 148
 149
 150
 151
 152
 153
 154
 155
 156
 157
 158
 159
 160
 161
 162
 163
 164
 165
 166
 167
 168
 169
 170
 171
 172
 173
 174
 175
 176
 177
 178
 179
 180
 181
 182
 183
 184
 185
 186
 187
 188
 189
 190
 191
 192
 193
 194
 195
 196
 197
 198
 199
 200

अल्हड़ भैरवी के सात चमत्कार, सात साधनाएं

तब मैं प्रत्येक साधक को "भैरव और प्रत्येक साधिका को भैरवी" कहें जाता हूँ, भगवन् सत्य सत्य ही तुमों को संवेधना सत्य के क्षेत्र में सन्धिकारों ने कुछ किं गहन दायें हैं, कुछ ऐसी साधनाएं हैं कि उन्हें देखकर दाहिनी तरफें अंगुली दबानी पड़े जाती हैं, अल्हड़ भैरवी भी ऐसी ही एक सर्वोच्च साधिका थी ।

जब मैं तब के क्षेत्र में काफी कुछ साधनाएं होच चुका था, और काममायी साधना सम्पन्न करने के बाद अपना साधना को पार कर प्रोचस् साधनाओं में प्रवेश कर चुका था; उस समय मैं नेपाल के दक्षिणी भाग में नेपाली भाषी भवन के पास ही एक अल्हड़ में रहता था एक साधिका होने के नाते मैं तो मैं अपने पास किसी प्रकार की कोई सम्पत्ति रखता था और मैं किसी प्रकार की आवश्यकता को अनुभव कर रहा था भैरव सात ही पुराणों में प्रचलित और सात ही साधनाएं भैरवी थी, जो साधना के क्षेत्र में अल्हड़ भैरवी की और बढ़ रही थी ।

यह स्थान नेपाल का पूर्वतः साधिका स्थान कहा जाता है, यहां के चर्चक में तब बिजरा हुआ है और उच्चकोटि के साधिका वहीं था तब साधिका साधनाएं सम्पन्न करते हैं, बागमती, श्रीधारा, नेपाली भैरव साधिका उच्चकोटि के साधिका मुझे वहीं पार बिचरण करते हुए और साधना करते हुए मिले थे, तब के क्षेत्र में प्रविष्टी मां योग माया को मैंने वहीं पार देखा था, और यह बात सोभाव्य था कि मैंने तीन दिन तक उनके पास रह कर साधिका साधना सम्पन्न की थी, अपना साधना

उल्टी ही मुझे बिजरा की और तब मैं मुझे सीधा प्रदान की थी ।

भारत में हिमालय, गंगोत्री, मलय प्रदेश के जंगल बंगाल का बंगाला गंगोत्री और बंगाल का बंगाला सात ही भैरव क्षेत्र है वहीं पार देखा मैं पुरुषोत्तम का भवन और दक्षिण काली का क्षेत्र भैरव विष्णु सत्माननीय रहा है, यहां पार बिचरण करते हुए मुझे कई उच्चकोटि के साधिका योगी मिल पाया, भैरव साधिका साधिकाएं मिल जती हैं और जिनके द्वारा मुझे काफी कुछ सीखने का अवसर मिला है ।

जब तक तब के क्षेत्र में मेरा नाम बहुत काफी सात बड़ दया था और उच्चकोटि के साधिका भी मुझे मिलने और मिलने का अवसर पाने की अवसर करते थे इस क्षेत्र में साधुमन विद्या और सुगंध विद्या की साधनाएं भी सिद्ध कर चुका था, और दंगल भी बड़ी बात, यह है कि जब से मुझे स्वामी विद्विषयकालक की का साधिका विष्णु बनने का सोभाव्य प्राप्त हुआ है तब से मेरा सम्मान तब के क्षेत्र में हजार गुना बढ़ गया है, दलका विष्णु होता ही अपने मां में प्रचलित है, और बड़ी कठिनाई से पूरी परीक्षा लेने के बाद ही मैं किसी की अपना विष्णु बनाते हैं, जब उन्होंने मुझे सीखा था तो मैं उस समय संसार का सबसे अधिक सोभाव्यशाली अनुभव कर रहा था, वहीं नहीं मरिचु मेरे से पहले जो इस क्षेत्र में थे, वे भी कुछ से ईर्ष्या करने लगे थे कि मुझे ऐसा प्रचलित प्राप्त हुआ है ।

और, उस दिन मैं दक्षिणकोटि के दक्षिण कर साधिका

माध्यम की ओर लौट रहा था प्रातः लगभग नी दस बजे थे, सूर्य आकाश में काफी कुछ डब गया था, गुलाबी लकीं थीं, और बालवर्णन कल्पित सम्मोहक सा था, तभी मुझे एक अत्यन्त ही सुन्दर तेजस्वी तश्तरी मेरे सामने खड़ी हुई दिखाई दी, अगले वक़्त पहुँचे हुए, नीचे का परिवान

मात्र झटनों की सुझा हुआ, तन्त्रे और बिखरे हुए बात सुन्दर आकर्षक तेजस्वी घाँसे, बेहरे पर एक भजीब से सम्मोहन कि भित्ति देखते ही आदमी उगा सा रह जाय एक हाकी सी मुक्काहट और मारा करीर सोचें में डर हुआ... ऐसा लगा कि जैसे विद्याता ने सभी सभी को

वीर साधना

यह साधना अत्यन्त कठिन और तीव्र है, मेरी राय में बिना किसी उच्च गुरु के सानिध्य यह साधना सम्पन्न नहीं करनी चाहिए, इस साधना के माध्यम से वीर वेताल स्वयं सिद्ध हो जाता है और वह अकेला ही हजार भूतों के समस्तुल्य होता है, उसके माध्यम से प्रसंभय कार्य भी सम्भव किये जा सकते हैं।

यह ३१ दिन की साधना है, समाधस्या की रात्रि को श्मशान में जा कर ठीक ब्रह्म रात्रि के समय कदम में से एक ताजा मुर्दा निकाले और उसे स्नान करावे फिर उसका शिर दक्षिण की ओर तथा पैर पश्चिम की ओर रख कर लेटा दें और सोने पर श्मशान की रात्रि को पानी में धोल कर स्वाही बना कर उसमें "श्रीं फट्" शब्द लिखे और फिर सोने पर ही पालवी मार कर स्वयं के सिन्दूर का तिलक करे और उस मुर्दे के भी खलाट पर सिन्दूर का तिलक करे फिर उसका पुजन करे और प्राण चेतना क्रिया सम्पन्न करें।

इसके बाद उस मुर्दे को वीर वेताल भ्रमीयेंक मन्त्र आपूरित करें और सर्व प्रस्थियों की माला में उसके सोने पर ही बैठे बैठे एक सो एक निम्न मंत्र जप करें।

मन्त्र

श्रीं श्रीं वीर वेतालये ऐं ऐं श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं वेताल सिद्धि ह्रीं ह्रीं फट्।

मन्त्र साधना करने से पूर्व श्मशान जागरण क्रिया सम्पन्न कर लेनी चाहिए और अपने चारों ओर रक्षा कवच करते हुए दसों दिशाओं को बांध कर फिर यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए, साधना समाप्ति के बाद श्मशान शान्त क्रिया कर लेनी चाहिए।

वास्तव में ही यह संसार का अत्यन्त तेजस्वी और कठिन मन्त्र है, परन्तु जो साधक इस मंत्र को सिद्ध कर लेता है, वह अपने घाप में अजेय और अद्वितीय बन जाता है, उसके समान इस पृथ्वी पर दूसरा कोई नहीं होता, यह साधनाओं में सर्व श्रेष्ठ साधना कही जाती है।

इस साधना को सिद्ध करने के बाद पूरे मकान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना नोटों की या पत्थरों की निरक्षर बर्षा कर देना तथा संसार का कोई भी कठिन कार्य सम्पन्न कर देना साधक के बाये हाथ का खेल होता है।

आस,
क सा,
जाय,
उला,
कोई

बकीन कीर्ति बना कर आकाश से जमीन पर उतारी हो। ऐसा सोचकर कि जो देखने में उत्सवत सुगन्धित आकर्षक और अद्वितीय लगे, महान होना था कि कहीं उन्नी-काने पर वह लोहर्ष मिला न हो जाय, प्रत्येक वह पट्टी जिसे मेरे जैसे कठोर दार्ष्टिक्य भी एक बारभी देखना ही न हो गया, मन में ध्यानात्मा के लोहर्ष की भाँति मेरी भाँति राजकुमारी हो। और तन्त्र का सम्मोहन इसे दस धर्म में खींच लाया है, पर तन्त्र अपने एक ही लक्ष्य की ओर जाता है, जिसमें बहुत कठोर साधनाएँ सम्पन्न करनी पड़ती हैं और वह कालिका प्रभो अत्यन्त दूरत मुकुटा और नाभ की हो है, तन्त्र का इतना प्राचीन लोक यह आशय नहीं उठा सकती, मैं ऐसा सोच ही रहा था कि उसने मुझे तत्त्विक विद्या से प्रभुत्व किया।

मैं ध्यानात्मा कर साधना हुआ, और प्रकान्त पर उत्तर देते हुए पूछा कहा कि काई हो जाने का क्या रहस्य है ?

उत्तरे उत्तर दिया मेरे मन की अन्तर्गत दृष्टिवादात्मक योगीश्वर स्वामी निश्चितेश्वरानन्द की को शिष्या करने का है, इसके लिए बाहे मुझे प्राणों की प्राप्ति भी होती वह बाव से भी कम है, परन्तु जब तक इनके सम्पर्क नहीं हो जाता या उनका संतुलित प्राप्त नहीं हो पाता, तब तब तक के किन्हीं सर्वज्ञ आशयों का यह कुछ माध्याम्य शैली का प्रारम्भ है। मुझे ठाढ़ हुआ है कि अपने स्वामी निश्चितेश्वरानन्द की से काशी ऊँची और महामूर्ति सिद्धि प्राप्त की है मैं काशी कभी भी पर धरे उनका ही और यदि आप मुझे अपने साधन में रहने से आज्ञा दे और कुछ साधनाएँ सिद्ध कराएँ तो मैं प्रत्यक्ष ही इन साधनाओं की सिद्ध कर रहा हूँ की कि मैं आपके अन्य शिष्य सिद्धाद्यों की होड़ में सबसे आगे ही और इतिहास से इतिहास साधनाएँ भी सिद्ध कर सकूँगा हूँ।

उत्तरे एक ही सास में यह सब कुछ कह दिया जो वह कहना चाहती थी, उसकी दो ठूक केजान बातचीत होती धरल और स्पष्ट थी, ऐसा लग रहा था कि उसके मन में किसी प्रकार का दल-काट नहीं है, उसके मन में

वायु नति साधना सिद्धि

यह साधना भी उच्च कोटि की कही जाती है, ग्रामावस्था की रात्रि को समयान में बैठ जाय अपने नीचे हाथे मुँह की भस्म बिछा दें ऐसा नित्य करना प्रायः एक ही फिर किसी कष्ट में से दूसरा मुर्दा निकाल कर सहारा दे कर अपने सामने बिठा दें और उसे आज से स्थान करावे, सत्राट पर सिन्दूर का निलक लगावे और स्वयं दक्षिण दिशा की ओर मुह कर बैठ जाय तथा हकीक मासा से १०१ मासा मन्त्र जप करें, मंत्र जप करते समय मुँह की आँखों में निरन्तर ताकते रहना जरूरी है, आगे चलकर वह मुर्दा ही वायु साधना का आधार बनता है।

मन्त्र

ॐ अचेतन चेतन वायु न्य धृतामै मन वश्य सिद्धाये वायुगमन सिद्धि देहि देहि कृद ।

यह ५१ दिन की साधना है, इसमें नित्य उसी मुँह की पूजा होती है और रात को उसे पुनः कक्ष में लिटा दिया जाता है दूसरे दिन उसे फिर निकाल कर पूजा कर मंत्र जप किया जाता है इस बात का ध्यान रहे कि अपने नीचे ताजे मुँह की भस्म बिछा कर उस आसन पर ही साधना सिद्ध करें।

यह अपने आप में महत्वपूर्ण प्रयोग है, और कठोर हृदय वाले अपने गुरु की आज्ञा से ऐसी साधना को सिद्ध कर पूर्ण सफलता पा सकता है।

इसकी पहचान यह है कि ५१ वें दिन मन्त्र जप सम्पन्न होते ही वह मुर्दा सखीर आकाश में यत्न हो जाता है और फिर साधक जब भी चाहे पूरे संसार में एक स्थान में दूसरे स्थान पर आकाश मार्ग से गतिशील होता हुआ, कुछ ही संकल्पों में कहीं पर भी पहुँच सकता है।

किसी प्रकार की होन भावना भी नहीं है, वह जो कुछ करना मुना वा सोचना चाहती है, स्वयं स्वयं में कह देती है।

मैंने उसके चेहरे को ध्यानपूर्वक देखा, निश्चय ही फलस्त उच्चकोटि की कोई राजकुमारी है, चेहरे पर पूर्ण योग्य और हठाली या जल के वाक्पुत्र भी नहीं लगे, मालावन मिट नहीं गया है, मैंने उसे अपने आश्रम में

रहने सोचने और साधना सम्पन्न करने की आज्ञा दे दी।

थोड़े ही दिनों में वह आश्रम में रहने वाले उन प्रायः सब साधकों के दिलों दिनाप पर छा गई, छा गया पा उनके दिलों पर भासन करने लगी, जैसे सारंगी की धुर पर तान गुरु करता है, ठीक उसी प्रकार सभी उसने दशरों पर काम करते थे, एक विचित्र प्रकार का शत्रुवाहन साधना में छा गया था, आश्रम में कहीं किसी प्रजा

श्यामा साधना

उच्चकोटि की साधनाओं को सम्पन्न करने के लिए श्यामा साधना आवश्यक मानी गयी है, चाहे पुरुष साधक हो या स्त्री साधिका हो, वह साधना दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी है, इससे मन पर कठोर नियन्त्रण होता है और उसका सारा शरीर श्रवण हो जाता है, पाँचों कर्मेन्द्रियों और पाँचों ज्ञानेन्द्रियों पर उसका पूरा पूरा नियन्त्रण होता है, और आगे चलकर वह किसी भी साधना में तुल्यत सफलता प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है।

यह साधना रविश्वर के दिन सोपट्टर को समशान में जाकर अपने गुरु की आज्ञा से दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सर्वथा नग्न हो बैठ जाय और सामने किसी साधक की सर्वथा नग्न बिटा में जो कि उससे सर्वथा विपरीत हो, जो सामने साधक बैठा हुआ हो, उसके लिए यह आवश्यक है कि श्यामा साधना में सिद्ध हो, इस प्रकार से एक दूसरे के सर्वथा विपरीत योगि में बैठे हुए भी मन पर पूर्णतः नियन्त्रण रखने में समर्थ होता तथा निरन्तर मन्त्र जाप करना ही श्यामा साधना की श्रेष्ठता और सफलता मानी गयी है।

इसमें ऐसे सुतसान स्थान को चुने जहाँ पर लोगों का आवागमन नहीं के बराबर हो, और फिर हकीक माता से भर्त्स लुकी रखते हुए निम्न मंत्र की ११ माला करे, इस गुरु का कर्त्तव्य है कि वह बराबर साधकों के ऊपर कान- कठोर दृष्टि बनाये रखे।

साधना मन्त्र

ॐ सोऽहं मणिभद्रे ॥

यह मंत्र अपने आप साम्भ केतना मंत्र है, मन पर नियन्त्रण प्राप्त करने का मंत्र है, कठोर साधनाओं को सिद्ध करने का मंत्र है, और संसार में कहीं पर भी निद्रा विकरण करने का मन्त्र है, महाशरीर स्वामी ने इसी साधना को सिद्ध कर केवल्य ज्ञान प्राप्त किया था, ऐसी अनश्रुति है।

आज भी एक कोटि की साधनाओं में प्रवेश देने से पूर्व साधक को ऐसा साधनाएं सम्पन्न करवा कर उसकी परीक्षा ली जाती है ॥

शून्य साधना सिद्धि

यह साधना सरल है और कई साधकों ने इस साधना की सिद्धि कर पूर्ण सफलता पाई है।

यह समझान साधना है, अमावस्या की मध्य रात्रि को दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर साधक बैठ जाय और सामने सवा किनो जौ के घाटे से एक मातृ-आकृति बना दें और उसे सिन्दूर से पाल दें फिर उसमें प्राण संजीवन क्रिया सम्पन्न कर अपने चारों ओर सुरक्षा घेरा बना कर दसों दिशाओं की बांध दें और हकीक माया से निम्न मन्त्र का जप करें।

मन्त्र

ॐ शून्य पिण्डाद् मनोवाञ्छित कार्यं सिद्धयै क्रीं क्रीं
अमरान् कालिके भूत बाह्यायै सिद्धयै फट् ।

इस प्रकार निश्चय की के घाटे का गुत्ता बनाये और फिर उसे मन्त्र जप पुरा होने पर दक्षिण दिशा की ओर जा कर रख दें, यह २१ दिन की साधना है और साधना समाप्त होने पर निश्चय ही शून्य साधना सिद्ध हो जाती है इसके द्वारा यह शून्य में से कुछ भी प्राप्त कर सकता है, मोटों की दुर्घा, मनोवर्धित वस्तु प्राप्त करना, ताजी भोग्य सामग्री उपलब्ध करना, और अन्य किसी भी प्रकार के कार्य सम्पन्न करने की वह सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है।

वास्तव में ही यह सहजपूर्ण साधना है और साधक इसे सिद्ध कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

की कोई दृष्टि लगाता बिनाई नहीं दे रही थी, सब नाम लुप्त होकर तब डी से धन्य रहा था, वह समझा एक सत्ता तब मेरे पाधन में पहुँच गई थी तब तब प्रकार से देखा जाय तो समझे मेरे मरे तब की वसति था, जो साधना के मेरे को होन तब पश्चिम कर लीची थी, तब साधनाओं की सोचने में मुझे दूखी मोटी का ओर लगाना पड़ा था तब साधनाओं की भी बहुत शक्ति आता थी तो दूखी रही थी और उसमें सफल हो रही थी कि कई बार पाधन होना था कि वास्तव में वह कोई पूर्व जन्म की साधना है और इस जन्म में किसी राज घराने में जन्म ले लिया है, मोटे ही दिनों में वह तब के क्षेत्र में एक आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कर चुकी थी।

एक दिन सुबह सुबह मैं परम्परा की स्तुति में लगा हुआ था कि मैं लीची मेरे सामने आकर खड़ी हो गई, मैंने दूखी पाधिर दुम्परा नाम रखा है, उसने सहज संश्लेषन के जवाब दिया धर्म तक तो मां बाप ने जो नाम दिया था मुझे मुझा देती हूँ, मोक्ष मुझे ब्रह्म दे, लीची कहते हैं, बर्तों कहते हैं देवता मुझे स्वर्ग भी पहा नहीं मेरा नाम करता तो शून्य मुनेव विकल्पवाचन जो ही लेने लगे मेरा सही धर्मों ने नामकरण सम्पन्न हो सकैन, या गनी मुझे ब्रह्म दे लीची कहते हैं तो धर्म भी मुझे दान नाम से गुकार सकते हैं।

एक दिन उमरो ब्रह्म मैं आज के और साधना सम्पन्न करना चाहती हूँ, और मैं जल्दी से जल्दी इस साधना की सम्पन्न कर लूँगी।

मैं लीची आत्मज्ञान से मोचे फिर गया, और साधना अव्यक्त कठिन और दुर्बोध है, तब के महारथी भी और साधना करते हुए धकपाते हैं, वे स्वासंस्व द्रव्य सभी साधनाएँ सिद्ध करते हैं, परन्तु और साधना का नाम लेते ही उन्हें चक्कर सा जाने लगता है।

और साधना अव्यक्त कठिन किया है, और समझान में मुझे को छाती पर बैठ कर काली पत्र का आवाहन कर दसों दिशाओं की बांध कर और का आवाहन करना

पड़ता है, यह साधना मायानी साधना नहीं है, पुरुष वर्ग भी इस को सम्पन्न करते हुए हिचकिचाते हैं, किञ्चित्त हो जाते हैं, और कई लोग तो इस साधना के बीच में ही समाप्त हो जाते हैं।

मेने उत्तर दिया, तब कुछ समझ भी रही हो कि मुन बर्ग कह रही हो, पहले अपने शरीर को देखो और

उसके बाद और साधना का नाव को।

उसने कहा जब आपने और साधना सिद्ध कर ली तो मैं और साधना क्यों नहीं सिद्ध कर सकती, मुक्ति अनुभवशी है और मैं इसी समावरण से इस साधना को प्राप्त कर लेना चाहती हूँ, आप मुझे आशा है और इसका विधि विधान बता दें उससे बाद

भैरव साधना

अन्त साधनाएं तो सरल कही जा सकती हैं और उधने साधक को किसी प्रकार का नुकसान नहीं होता पर कुछ साधनाएं इतनी अधिक तीव्र कठोर और तलवार की धार के समान होती हैं कि जरा सी चूक होते ही मृत्यु का वरण करने के लिए बाध्य होना पड़ता है, भैरव साधना भी ऐसी ही साधना है।

इसमें "बावन भैरव" को पूर्णतः सिद्ध किया जाता है जिसमें काल भैरव, रुद्र भैरव, और सौ भैरव जैसे भी हैं, इसलिए इस साधना को भी वेताल साधना के समान ही कठिन मानी गयी है। उच्चकोटि के साधक ऐसी साधनाएं सम्पन्न कर संसार में अजेयता प्राप्त करने में सक्षम हो पाते हैं।

किसी भी अवस्था को धृष्ट रात्रि के समय स्वप्नान में जाकर किसी एक स्थान पर बैठ जाय और अपने चारों ओर सुरक्षा मन्त्र पढ़कर लोहे के धिमे से भरा बना दें और बकरे की कुछ मांस कोटियां किसी एक पात्र में भर कर अपने पास रख दें, दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठते हुए, वहाँ बिसाघो को बाबद्ध कर महा श्मशान जागरण क्रिया सम्पन्न करें।

जब पूरा श्मशान जागरण हो जाय और चारों तरफ से भूत प्रेत पिशाच यक्ष, तथा ब्रह्म राक्षस घिर जाय तब बलि देते हुए एक एक बोटी उनकी ओर फेंकता चला जाय, इसमें नित्य ५१ मोला मन्त्र जब सप्रेम अस्मियों की माला से फरनो जरूरी होतो है और प्रत्येक माला के बाद भूतों को बली देना आवश्यक होता है।

इस प्रकार जब ५१ माला सम्पन्न हो जाय तब श्मशान जागरण समाप्त कर दे और उठ कर अपने घर आकर स्नान कर लें।

मन्त्र

ॐ ब्रह्म भूतायै भैरवायै बलि ग्रहण ग्रहण मम वक्ष्ये साधयै त्रीं त्रीं हुं हुं फट् ।

यह २१ दिन की साधना है, पर धूपने आप में काफी दिलेरी और हिम्मत की साधना है, अतः किसी गुरु के निर्देशन में ही इस साधना को सम्पन्न किया जाय तो ज्यादा उचित रहता है।

निश्चित रहे, मैं इस कठिन साधना को भी सिद्ध कर दूँगी।

मैं कुछ क्षणों के लिए हिचकिचाया मैंने सोचा यह इसकी तीव्र साधना सम्पन्न कर ही नहीं सकती, अभी एक सप्ताह हो नहीं है, परन्तु उसने भक्त की बात तात्पर्य को ध्यान में रखकर नहीं रहीं हैं, जब मुझे अपने प्रार्थनों का फल नहीं है, तब फिर प्रायः वेककर ही परिश्रान हो रहे हैं, प्रायः यदि मुझे यह साधना नहीं निश्चयित हो मैं यह ध्यान छोड़ कर किसी और स्थान पर चली जाऊँगी और ऐसे कुछ को कुछ क्षणों को कुछ यह साधना सिद्ध करवा सकें।

मन्त्र में उसके दृढ़ निश्चय और धारक दृष्टिकोण से पूर्ण कष्ट से प्रभावित था मुझे विश्वास था कि वह जिस साधना को प्रारम्भ करायें उसे पूर्ण फलप्राप्ति कर लें, परन्तु एकमात्र से और साधना में निश्चयिता तो उसके प्रार्थनों से लेना है, जब समाधान का प्रारम्भ होता है तब दृढ़ निश्चय यह प्रत्यक्ष हो रहता है कि जो और इसका प्रारम्भ हो जायगा फिर भी मैंने सोचा था कि वह श्रुतिहीन है, प्रायः मैं ही समाधान है, मैं धारक समाधान का प्रारम्भ किया कर इसको भी मैंने कहा है कि और यह वह निश्चित और निश्चित दृष्टि देखी तो प्रायः प्रायः और साधना करने का हृदय छोड़ देगी।

मैंने धनपते धार से हाँ कर दी, जाते जाते उसने कहा मुझे समाधान का प्रारम्भ साधना प्राप्त है, इसलिए यदि प्रायः केवल प्रतीति को सिद्ध से ही समाधान में बैठना चाहते हैं तो प्रायः भी भक्तों, दृढ़ प्रार्थनों को मैं अपनी उपस्थितियों पर चलाती हूँ, और ये तो मेरे बाह्य की तरह कार्य करते हैं।

चर, मैं रात्रि को दक्षिण काली मन्दिर के पास जाते महा समाधान में इस रात्रि को उठने से गया और समाधान के बीच मन्त्र में उसका चिन्ता किया गया प्रायः प्रायः प्रायः को दूरी पर मैं बैठ गया, मैंने रक्षा के लिए अपने प्रार्थनों को ध्यान से लक्ष्मी की ओर ही चला दिया।

उग्र तारा सिद्धि

यों तो तारा साधना कई स्थानों पर स्पष्ट की गई है पर उग्र तारा अपने प्रायः में महत्वपूर्ण साधना है और इसके सिद्ध होने पर अन्य सभी देवियों और महादेवियों स्वतः सिद्ध हो जाती है।

समाधान की रात्रि को समाधान के मध्य में सर्वथा मग्न हो कर बैठ जाय और सामने ताजे मुद्दे की भस्म को पानी से घोला कर उग्र तारा की प्रति बनावे उस पर सिन्दूर का तिलक करें और स्वयं के भी सिन्दूर का तिलक करें, इसके बाद दक्षिण दिशा की ओर मुख कर सर्प ग्रहियों की माला से निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जप करें।

मन्त्र

ॐ ह्रीं उग्र तारायै नमो नमो ।

जब ५१ माला पूर्ण हो जाय तब उग्र तारा को दक्षिण दिशा की ओर किसी पेड़ की छाया के नीचे रख कर विश्रान्त करने की प्रार्थना करें।

यह २१ दिन की साधना है और इसमें निश्चय उग्र तारा की नवीन प्रति बना कर उसकी पूजा कर प्राण वैद्युतता प्रदान कर पंचोपचार पूजन कर मंत्र जप सम्पन्न किया जाता है।

यह साधना सिद्ध होने पर साधक "महासिद्ध" कहलाता है, और उसके शरीर में समस्त देवियाँ और महादेवियाँ स्थित होती हैं वह किसी भी असंभव कार्य को संभव सम्पन्न करने की क्षमता रखता है।

वास्तव में ही यह साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साधना है जिस उपलब्धि के योग्य हो सिद्ध कर पाते हैं।

बोली जब स्वात्मक 'रा' ही बना लिया है तो फिर मन्त्रज्ञान जागरण करने से लाभ ही क्या, मन्त्र तो तब है, कि जब ध्यान स्वात्मक 'रा' बनाया हो न जाय और मूढ मंत्रों का प्रयोग, मन्त्र भी आकम्पन देना काय ।

और कारतब में ही रहने किसी प्रकार की भ्रष्टाचार देना नहीं वही भी और मेरे प्राज्ञा देने से पूर्व ही अपने मन्त्रज्ञान जागरण की क्रिया प्रारम्भ करे । यह जोनों के लोभ प्रयोग प्रारम्भ कर रही थी, और द्वारा स्वज्ञान तक बाधों की काष्ठ हो रहा था, ऐसा लग रहा था कि उसे स्वज्ञान जागरण की क्रिया पूर्णता के साथ प्राप्त हो ।

कोई भी देर में पून, प्रेत मिश्राण, राक्षस चारों तरफ से घनड़ घनड़ कर भा रहे थे, मैं इस वक्तियों को लिलेते नमस्स साथ बीत रहा हूँ कि सुरक्षा 'रा' बोलने के बावजूद भी मन्त्रज्ञान के उस प्रमाणक शब्द को देखकर मैं धमर ही धमर बोझा विपणित धवश्य हो रहा था परन्तु मैंने कर्मधर्मों से प्रवृत्त मंत्रों की ओर देखा वह किसी भी प्रकार से परेष्ठान नहीं थी, विपणित नहीं थी, बल्कि राक्षस जैसे मिश्राण लते चारों ओर बह गये थे, और वह पुष्कपाती हुई उनसे बर्णित रही थी जैसे कि वह उसके भाई बहिन या सखी साथी ही ।

मन्त्रज्ञान यह एक कष्ट तक मन्त्रा मन्त्रज्ञान जागरण रहा, और इस बोध में लभन प्रकाश दार कर्मधीत दुष्टा होऊँगा, जब कोई दुष्टा राक्षस मेरे ऊपर पड़ता मारता तो मैंने दिव्य दृष्टि आता पर स्वात्मक 'रा' होने की वजह से वह कुछ कर नहीं पा रहा था पर इसी बावजूद वह मूर्खता मानता भी उसके चेहरे पर किसी प्रकार का कोई उद्वेग नहीं था ।

मन्त्रज्ञान जागरण सम्पन्न होने के बाद मैं उसके साथ प्रारम्भ की ओर लौट रहा था तो मैंने 'दुष्टा मन्त्र' यह मन्त्रज्ञान जागरण की विशेष विधि कहाँ से सीली ?

उसने कोई उत्तर नहीं दिया बोधी यह मैंने ऐसे व्यक्ति से छुप कर सीखी है, जिस में प्रवर्तन गुरु बनाना

बाह्यी हूँ, पर जब वह अपने किसी धर्म्य मिश्र को यह विधि सिखा रहा था, तो दूर पेड़ के छाये में छड़ी यह खिचा और यह मन्त्र जब सीख रही थी, विपिबत रिखा मैंने प्राप्त नहीं की है, परन्तु ध्यान देय रहे है, कि मन्त्रज्ञान जागरण में कोई वृद्धि भी नहीं रहते दी है ।

मैंने प्रवर्तन लगाया कि हो सकता है, कभी इस प्रकार मन्त्रों निखिलेश्वरानन्द की प्राप्ति होने और वे अपने किसी मिश्र को मन्त्रज्ञान जागरण सिखा रहे होंगे, इसने मन में सीखने की प्रवृत्ति तीव्र लागता रही होगी, और इसने उनसे सिखारण स्वीकार करने की इच्छा भी प्रकट की होगी तो उन्होंने मन्त्रा कर दिया होगा और तब इस ने छुप कर उस क्रिया को और मन्त्र विज्ञान को समझ लिया होगा ।

मेरे मन ने तर्क किया कि इसमें दोष भी क्या है, जब प्रयोगार्थ में एकलव्य की मिश्र बनाने से मन्त्रा कर दिया था, तो उसने भी तो छिपकर धनुर्विद्या सीखी थी और धनुर् में से प्राप्ति निकल गया था इसमें कोई दो राय नहीं कि किसी प्रवर्तना इसे उन्मत्कोटि की मन्त्रज्ञान जागरण क्रिया प्राप्त है ।

मैंने उसे वीर साधना सिद्धि सम्पन्न करने की स्वीकृति दे दी और वास्तव में ही जित साधना को करने में मुझे सात महीने लभ गये थे, उस साधना को इस प्रवृत्ति ने केवल कौशल दिनों में ही सिद्ध करके दिखा दिया कि इसमें मन्त्र का प्रारम्भ विषयता और कठोर से कठोर साधना सम्पन्न करने की इच्छा है ।

वीर साधना सम्पन्न करने के बाद इसने मेरे सामने ही पवन को बाध कर और वीर वीरता से पहाड़ की पुर चूर करवा कर यह बता दिया कि उसने किसी प्रकार से साधना सिद्ध की है, और सफलता पाई है ।

वीर साधना सम्पन्न करने के बाद साधक बहते हुए पवन की रोक सकता है, धमक कर प्रवृत्ति और दूकान था सकता है, परन्तु को हवा में उछाल कर एक प्रकार से

पड़ा वो चक्कावुर कर सकता है, हजारों सादमियों की एक ही बग में लट्टे कर सकता है और मैदान के माध्यम से हजारों के किसी भी कठिन कार्य को सम्पन्न कर सकता है, वैसाव साधना तो एक महिमी साधना है, जिसका कोई दुष्प्रभाव ही नहीं है और इस चक्की ने मान को भी दिनों में ही एक साधना को सम्पन्न कर यह बता दिया था कि यह किसी भी प्रकार की कठिन साधना को सम्पन्न कर सकती है।

इसके बाद बहुत ही लंबी कुछ दिन खान्द रही, और फिर उसके एक दिन प्रतःकाल मेरे सामने नरुना के साथ प्रार्थना की, कि मैं अपने मृत के सामने पहुँचने से पूर्व सभी एटिडों से मुक्ति प्राप्त कर लेना चाहती हूँ और 'श्यामा साधना' में इसका प्राप्त करना चाहती हूँ।

श्यामा साधना सम्पन्न हो तीसरा और कठोर साधना है जिसमें पूर्वज, पार्थी कर्मियों और पार्थी जालिजों

जल गमन प्रक्रिया साधना

यह उच्चकोटि की साधना बहुत जाती है, और इस साधना को सिद्ध करने पर व्यक्ति जल पर भी उभी साधनों से जल सम्पन्न प्रक्रिया से व्यक्ति सम्पन्न कर सकता है इससे साधक को किसी प्रकार की कोई प्रसुविधा नहीं है और न इसके का मतलब ही रहता है, उच्चकोटि के साधक इस साधना का सिद्ध करने के लिए आलायित रहते हैं।

रविवार की मध्य रात्रि को जब मैं खड़े होकर इस साधना को सम्पन्न करना पड़ता है और प्रगले रविवार तक अर्थात् साठ दिन तक उसे चौबीसों घंटे निरन्तर जब मैं खड़े रह कर मन्त्र साधना सम्पन्न करनी होती है, नींद के भोके में साधक पानी में गिर न जाय इसके लिए दोनों तरफ लकड़ी के सम्झे गाड़ कर उस सम्झों से साधक को बाँध लिया जाता है जिससे गिरने का खतरा नहीं रहता, साथ ही साथ उसके एक दो भूत भाई हमेशा निगरानी करते रहते हैं, इस साधना में नर्मि से अगर तक जब मैं खड़े रह कर साधना सम्पन्न करनी आवश्यक है।

इस साधना में हकीक भासा का प्रयोग होना चाहिए और बाँधोंसे बन्टे मन्त्र जाप करते रहना चाहिए, दिन रात में केवल दो बार हूथ या कोई तरल पदार्थ लिया जा सकता है, पानी के बाहर नहीं निकले इसमें खाना की संख्या निर्धारित नहीं है।

मन्त्र

ॐ हो ब्रह्म ब्रह्माण्डे भूँ सिद्धये की कालिके जलगमन सिद्धये फट् ।

वास्तव में ही यह साधना कठिन है, क्योंकि कई बार जब मैं खड़े रहने से मछलियाँ उसके पार्थी के पार्थ को नोचने लग जाती हैं, इसलिए सरोवर पर कड़वा तेल लगा कर पानी में खड़े रहने में सुविधा होती है।

इस साधना को सिद्ध करने पर व्यक्ति आसानी से जल पर चल कर यह सिद्ध कर सकता है कि हमारे भारतीय तन्त्र किन्ने अधिक सुश्रम और समर्थ है।

पर पूर्ण विजय प्राप्त करता होता है, सर्वथा मृत हो कर किसी भीरव के सामने बैठ कर इस साधना को सम्पन्न करता होता है, और इस बात का पुरा प्रत्यक्ष रचना मक़ा है कि मन्त्र में किसी भी प्रकार की उत्तेजना या उद्देग उत्पन्न न हो।

मैंने पहले किए मन्त्रकण्डि दे हो, मेरे अत्यन्त विष विषय बाबब को इस बात के निम्न अनुमति दे दी कि यह व्यासा साधना में सहायक प्रदान करें, मैंने देखा कि वास्तव में हो यह नवको इष्टता को बनी हुई है न यह किसी प्रकार से दृष्टता जावती है और न कोई इसकी मृणा करता है, मेरे मत ने कहा यह एक दिन प्रबन्ध हो अत्यन्त उच्च कोटि की साधिका योगी और अपने पुत्र की सहायता सिद्धांशों में से एक होगी।

व्यासा साधना में तीन दिन तक बिना प्राशन से रहिये, बिना खाया खाये, एक ही सामान पर बैठना पड़ता है, और सर्वथा घोबे लुकी रख कर मन्त्र साधना सम्पन्न करती होती है, और इसने अपने ही दिन से व्यासा साधना प्रारम्भ कर दी, और तीन दिनों में ही इस साधना को सम्पन्न कर यह सिद्ध कर दिया कि यह शरीर से और मन से पूर्णतः आकाशमयिष्ठ है और इसे किसी भी प्रकार से विचलित नहीं किया जा सकता।

कुछ समय यह गाना रही परन्तु एक सप्ताह भर बाद ही इसने "बाधन भीरव" सिद्ध सम्पुष्ट करने की पावा पाही, मैंने बहुत बाधन भीरव सिद्ध सम्पुष्ट करना कोई इसी बजाक नहीं है, यह कोई भीरव वाताय साधना नहीं है, जिससे कि तुम शून्य रहो हो बाधन भीरव सिद्ध करना अत्यन्त कठिन है, और उसमें लारा भीरव, उग्र भीरव और क्षिप्रनरता भीरव हो अत्यन्त दुष्कर सुबोध है, यदि कोई ही भी गतती हो जाती है तो वायक का तिर एक हीकद में ही धक् से क्षय हो जाता है।

इसने महा सिर ही यह से क्षय होना इससे व्यादा कुछ ही भी नहीं सकता, जब यह सिर को धक् से क्षय करेगा, तब मैं देख चुकी, मैं भाग इस साधना को प्रारम्भ कर रही हूँ भाग मुझे आशीर्वाद दीजिये कि मैं इस

साधना को पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न कर सकूँ।

धीरे धीरे मुझे ऐसा लगने लगा था कि यह विषय तो मुझ पर ही हावी होने लगी है, पर जब विषय के आगे बड़े और यह सफलता प्राप्त करे तो मुझ पर राज्य ही होता है, और यह जिस साधना में भी प्राप्त रही थी उसमें सफलता वा रही थी।

जब मैंने स्वीकृति की और बाधन भीरव साधना पूर्ण विधि इसको समाझाई तो आशय से बाहर अंगत पहाड़ की एक गुफा में बैठ कर इसने अपने उस कवि और अर्चनव साधना को भी संभव कर दिया, इस दशाओं पर बाधन भीरव नृत्य करते सगे, मैंने देखा ज्ञान भीरव, उग्र भीरव और रौद्र भीरव जैसे तीन ही भी पहले संकेत पर कार्य करते और शान्त हो जाते, प्रकार से इसने पूर्णता के हाथ उत समस्त साधनाओं सिद्ध कर दिया था।

इसके बाद इसने चौबीस दिन ब्रम में रह कर घषन प्रक्रिया साधना सिद्ध की जो कि तन्त्र की घल तीव्र साधना कही जाती है, इसने वायु मार्ग गति साध सम्पन्न कर जिसके माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर कुछ ही क्षणों में पहुँचा जा सकता है, इसने साधना सम्पन्न की जिसके द्वारा घाकाश से जहाँ भी की कर्षा कराई जा सकती है, वहीं पर परम्परी की भी की जा सकती है, आगे चल कर इसने उग्र लारा सिद्ध किया, जो कि अपने आप में अत्यन्त कठिन तीव्रन तात्त्विक क्रिया है, देखते ही देखते छः महीने भीतर भीतर दो महाविधाएँ सिद्ध कर ली और मुझे सगने जग कि अब सिद्धाश्रम में जाने से इसे कोई रोक सकता।

पाठक कल्पना कर सकते हैं कि एक तो मरी ब नेहरे पर मोलायन पूरे शरीर में प्रवृद्धता और उसके बाध ऐसी उच्चकोटि की साधनाएँ हो जो वह क्या गजब नहीं वा सकती और वास्तव में ही उलने बर्षों में तन्त्र के क्षेत्र में हम सब को प्राक्खर्ष्य करके रख दिया। ★

है, हम सब को भी जहाँ पर है, वहाँ भी जो किसी रूप में जुड़े हुए शुभ संकल्प से प्रेरणा करें कि हमने इस दिव्य दैविक महापूज में जो कुछ भी शक्ति से अधिक बन पाएँ, करेंगे, जो निष्पत्ति हो प्राप्त सब मिलकर प्राप्त साधनात्मक संस्कृति के प्रभाव एवं व्यापकता के अन्तर्गत ही हीन मानव के अपने इस अष्ट संसार में कई बेतना संवर्धित कर लेंगे करवट ला सकते हैं।

नई पीढ़ी एवं समाज का विकृत रूप

आज आप निबर भी निकल जाय विज्ञान एवं भौतिकवाद का भूत अपने पुनो पुनो से सदा की बढोते हुए सब पर हावी है, बेतहाशा जलज्वर होड़ में सब खड़े हुए

है, पावल है एक रात में लम्बपति बन कोठी, महल, छोट बग बीसत सब कुछ जाने की, प्रार्थना मर्यादाएँ एवं परम्पराएँ ताक में रख छोड़ी है, पावलस्य चक्रावधि की स्वर्य में प्रतापित हो निकलस्य विद्रुव बन भीचरकी है उनकी ही मकल कर हमारी-आपकी पीढ़ी स्वर्य के घनितस्व को दोर पर लगावे मूय मर्यादिका का जिकार हो रही है।

इस विवशना से अपने आपकी बचाकर नई पीढ़ी का भविष्य सुरक्षित रखना ही होगा अन्यथा कल की भांसी संज्ञान हमें किसी भी होमठ पर माफ नहीं करेगी, खरनरा कर टूट बसिगी हमारी मर्यादाओं एवं परम्पराओं की सभी सीमाएँ भारतीय संस्कृति के अन्तः

साधना शिबिर

१८ अक्टूबर १९८७। दिल्ली में सिद्धाश्रम साधक परिवार। दिल्ली ज्ञान के द्वारा ऊँचा घाम में साधना दीक्षा, संस्कार का अथक आयोजन, शांतीनगर के धरुण श्रीवास्तव के देख-रेख में पूर्ण उपोमय वातावरण, कवर लाल डागर के प्रयत्नों से सम्पूर्ण व्यवस्था, और इस एक दिवसीय साधना शिबिर में भाग लेने वाले थे दिल्ली के प्रबुद्ध वने, व्यवसायी, उद्योगपति, और बुद्धिजीवी साथ ही साथ ग्रामीण जनता भी, इनके मन में साधना के प्रति एक भावना थी।

और इस भौतिक वातावरण में रहने वाले-साधनाओं से सर्वथा दूर दैनिक समस्याओं से प्रस्तुत पूर्णतः भोगवादी प्रवृत्ति से मुक्त उन सभी उपस्थित दीक्षा देने वाले साधकों और श्रोताओं ने अनुभव किया कि वास्तव में ही इस घोर भौतिकतावादी युग में यदि पूर्ण शान्ति प्राप्त हो सकती है, तो उसका एक मात्र रास्ता है "साधना शिबिर" में उपस्थित होना, मुक्त का सहचर्य प्राप्त करना, दीक्षा संस्कार से सम्पन्न होना, और निम्न गुरु-मन्त्र या अन्य साधना मंत्रों के द्वारा अपने चित्त को पवित्र बनाते हुए पूर्णतः मानसिक शान्ति की ओर अग्रसर होना।

पूर्णतः व्यवसाय से सम्पन्न श्री पुष्कर विहला और भसीन जैसे अत्यधिक व्यस्त रहने वाले व्यक्तियों ने यह स्वीकार किया कि ऐसे साधना शिबिर ही मन को शान्ति दे सकते हैं, ऐसे साधना शिबिरों के माध्यम से ही मानसिक तनाव दूर हो सकते हैं और इस प्रकार के शिबिरों के आयोजन के द्वारा ही जीवन में समस्त प्रकार की सफलताओं को प्राप्त किया जा सकता है।

राधेश्याम नाम्ना श्राद्ध साधकों ने तो प्रणु किया कि हम पूरी दिल्ली में समय समय पर ऐसे शिबिर आयोजन करने का प्रयत्न करेंगे ही, क्योंकि भावनाओं की पूर्णता देने का एक मात्र यही रास्ता है।

महल,
में एव
ध जो
रही है
र के
लकार

र नई
र नल
र नहीं
में एव
उपल

लया
ल में
धोय
कीवी

में से
मों ने
रकसी
प्रमन
अरने

वाले
पधना
गोजन

र पर
र यही

बत मुझोटे पर मकली आकरण का कलक हय जायेवा,
धनीकाली के वये तने प्रयोग, उनके रेगमी एवं धावन्वर
इत परितय में मुने गये धवन्वर धर्म प्रेमी एवं धर्म
प्रांठ जगता की एव ऐसे मांछ पर ले जाकर खडा कर
देवे बहा से वासित लोट कर प्राध्विमान करने की भी
कोई बुझाएर बाकी नहीं बचनी ।

घरने काय में समकाम बहानी वाला दीवी,
दिवियों में आरजिय कोय बरन के नाम पर
पुताल खोल भवता पहले धवन्वर धारी दीवी
ही बहने ताई सन्ध्यामी, लकी का रेगमीय धुत लक्ष्य एक
ही है, बहनी के छहदी करोड़ों की तागत का हाथम कैसे
बी बना कर धारनी धनिताल पुजा करा संतार का हारा
मोल ऐश्वर्य स्वयं में समेट लेता ।

वही शोध रसद्विज के नाम पर प्रगटावार पूजा रहो है,
वही शोध रानेनिक नेत्र, भी एवं ध्यपारिटी की शैल की
नीव नही मोने दे रही है, पूरे अमात्र को ध्यपता में पूजो
कर राख छोडा है, कीवी सबको ज्ञान विन्दनी, तात्विक
चिन्ता की करपना आज सक्ता हो गई है, ध्यान पर
ध्यान बने जा रहे है लेकिन प्रायेक की नीव के नीचे पड़ी
हुई है वासना, भोग, यह भीर सब कुछ हड़ब लेने की
धक्कर पकड़ो वृत्ति ।

कैसे मुक्त होगा आज का यह समाज,
अज्ञता के ताने बाने से

सो चिन्तन इसी प्रश्न का जो उत्तर है चापके ये
साधना शिबिर, जो कुछ पाद सद्गुरु देव के प्रत्यक्ष संर-
क्षण एवं दिशा निर्देशन में पिछले कई वर्षों से निरन्तर
चलते जा रहे है जिनकी म्हुला एवं सकलता इसी में
सम्य है कि इन सदा दिना के शिबिर में भाग लेने के लिये
आते के किते किते से और बिदेसों तक से लाखों
समिदायें दौड़ दौड़ कर आते है, साधना सम्पन्न करते
है, और सारे मानसिक समस्याओं में मुक्त होकर दिन प्रति
दिन की भौतिक समस्याओं का समुचित एवं सटीक हल
प्राप्त करते है, आध्यात्मिक शिबिर साधना हल में

मानसिक शान्ति

१६ अक्टूबर ८७ का सांवकाल । रोहतक नगर
में लम्बा मिह पहल, सद्गिता सभा, रेडियो स्टेशन
के हायरलेटर श्री हरिमन्सुखी जी के प्रवर्तनों से एक
सम्य आवाजन, एव्य गुरुदेव का आत्मन्वय और
उन्होंने दिग्गज हल में प्रमुदा डाक्टरों, मिस्त्रीपनों
और बुद्धिजीविता के सामने "योग, शान्ति और
समाधि" विषय पर एक घण्टे का समुत्तुत प्रवचन ।

उन्होंने बताया कि विज्ञान की प्रगति से व्यक्ति
एक तरफ उहा भौतिक प्रगति कर रहा है, दूसरी
ओर उसनी ही मानसिक प्रगति बढ गई है और
जब तक मानसिक शान्ति नहीं है, तब तक जीवन
जोग का कोई उल्हंध्य ही नहीं है, और उपस्थित
सभी उपलब्धोति के श्रोताओं ने पहली बार समुत्तुत
विषय कि कवल विज्ञान ही समस्याओं का समाधान
नहीं कर सकता, साधना मन्त्र अप और योग के
द्वारा ही जीवन में पूर्णता, ध्यानश्र और मानसिक
शान्ति प्राप्त की जा सकती है ।

और आज के इस और भौतिक युग में तो ऐसे
जिविरों का आयोजन एक अनिवार्य बन गया है
और यह आज के युग की अनिवार्यता है जिससे
कि समाजका भीतिवता के भार से उबरकर मान-
सिक शान्ति पा सके ।

प्रह्लाद को प्राप्त हो कुंभ धुन जाते है ।

साधना शिबिर की प्रमुख विशेषता

साधक साधिकाओं की समुत्तुत के आकार पर उन्हें
साधना काल में और साधना के उपरान्त प्राप्त हुई आन-
न्दियों के आकार पर इन जिविरों की कुछ विशेषताये
पत्रिका पाठकों के लिए स्पष्ट कर देना उचित रहेगा ।

भारतीय संस्कृति की आधारभूत पुरातन विद्याओं का पुनर्स्थापन

इन साधना विधियों के माध्यम से साधक साधिकाओं को मन्त्र तन्त्र यन्त्र के प्रति भावक चिन्तक एवं प्रचार करने पर्याप्तता करते हुए सही दृष्टि देना और सही मूल्यांकन करने योग्य होने हुए इन आधारों को संरक्षित करने का प्रयत्न भारतीय विद्याओं के प्रति समाजवादी एवं प्रजातन्त्र के लोगों को बाह्य विज्ञान सही माननीय में इन विद्याओं का रक्षणीयवादन करना।

(२) वैदिक ज्ञान एवं मन्त्रों के प्रति लोप होती हुई आस्था को पुनः जगाना

वेदों की परिभाषा और मन्त्रों के प्रभाव के प्रति साधकात्मक सम्प्रदाय ने हम भारतीयों को भी गुमराह करके एक बड़ा प्रश्न पेश कर दिया है हमारे चिन्तन शाश्वत ज्ञान पर खड़ा किया है जिसे समझ रहे हैं यदि हम नहीं हटा सके तो प्राप्ति धारण करने का नक्शा फिली और रंग में रंग दिखाने का, इन साधना विधियों के माध्यम से मुख्य गुरुदेव का प्रकाश रहा है कि यही तन्त्र स्थिति सबसे सामने रखकर मन्त्र साधना एवं वैदिक ज्ञान अनुष्ठान सम्पन्न कराते हुए साधारण जन को इनका प्रत्यक्ष लाभ एवं महत्व दिखाने लगे।

(३) वैदिक यज्ञ एवं अनुष्ठानों के प्रति लोप होती हुई श्रद्धा को पुनः स्थापित करना

वैदिक यज्ञों को सम्पन्न करा कर व्यक्तिगत राष्ट्रीय स्तर पर समस्याओं का समाधान करने अनुकूलता दिखाना मुख्य गुरुदेव का विमोचन सत्य रहा है, उनका दावा है कि आज भी इन यज्ञ और अनुष्ठानों के माध्यम से प्रकृति को वाम में करने मन भुलायिक कार्य सम्पन्न कराया जा सकता है प्रत्येक बार साधक और शिष्यों के बीच ऐसा

साधना

साधना हमारे पूर्वजों की एक ऐसी विद्या जो आज के इस नीतिक युग में भी चमत्कार प्रभाव दिखाने में समर्थ है और इस प्रकार के प्रभाव कोई भी साधक ग्रहणा कर उसका उपयोग कर सकता है तथा इन साधनाओं के माध्यम से जन कल्याण कर सकता है।

दिल्ली के विलियम हॉस्पिटल के पास रहने वाले श्रवण कुमार गोयल के बीबीस वर्षीय पुत्र पक्षाघात (लकवा) हुआ गया उसे अस्पताल भरती करवाया डाक्टरों ने प्रयास भी किया कुछ न हो सका और उसका भाषा ग्रंथ लगभग शून्य सा प्रतीत होने लगा।

तीसरे दिन उन्होंने मुख्य गुरुदेव से टेलीफोन पर सम्पर्क किया तो उन्होंने कहा आज मैं इस संबंधित साधना सम्पन्न करूंगा, शाम को फि टेलीफोन आया और बताया कि उसके कुछ फर्क नहीं पड़ा है और आवाज शरीर पूर्वतः सकल द्रुत हो गया है, गुरुदेव ने टेलीफोन पर ही का लुप्त अभी जाकर उसके पैर में जोर से मुई चु दो यदि साबना सही है तो वह ठीक होगा, बाहिर और होगा ही।

जोधपुर से छः सौ मील दूर दिल्ली में गो जी ने घर जा कर ऐसा ही किया और पु चमत्कारिक प्रभाव हुआ, उसी क्षण से उस भाषा शरीर सक्रिय हो गया और ऐसा प्रतीत कि मानो उसे पक्षाघात हुआ ही नहीं था।

मन्त्र और साधनाएँ तो आज भी जीवित संप्राण है, आवश्यकता है उन्हें सही प्रकार समझने की और कार्य करने की, तो उससे नि जी चमत्कारिक प्रभाव अनुभव किये जा सकते

काया धार किया गया है, बरुन यज्ञ एवं पुनैष्टि यज्ञ के माध्यम से मन्त्रों वहाँ एवं पुन गल की प्राप्ति प्राप्त की संभव करवाई गई है।

(४) "मन्त्र राज भी ज्यों के त्यों सजीव एवं शक्तिशाली है", सिद्ध करना

जिन साधकों और साधिकाओं ने तपस्वियों शिवियों में कृत्रिम जीवन की कर धार लिया है उन्हें मालूम है कि मन्त्रों की त्रिकोटक शक्ति आज भी योही की तरह प्रसर करती है, यज्ञ कुंड में कनिष्ठ राज भी यन्त्र के प्रयोग होने हैं, मन्त्र के धारक की देखी देवता का वाहान कर उनके साक्षात्कार किया जा सकता है, यन्त्रों के माध्यम से सम्पूर्ण यज्ञीकरण, उच्छादन, शिष्टेषण और मारण पद्धति की प्राप्ति प्राप्त भी संभव है, इन शिवियों में घनेक प्रकार के प्रयोग साधकों ने सम्पन्न किये हैं।

(५) तन्त्र के ध्यात्मक प्रचार एवं समाज विरोधी अनेकानिष्ट तत्वों से मुक्ति

तन्त्र नहीं मन्त्रों में साधना की एक विशिष्ट पद्धति है जिसके माध्यम से अपने शरीरगत सभी नाड़ी संस्थानों को विशेष रूप में कियाशील करके हस्त रूपगता पार्वी जाती है, मान, भद्रिदा सम्प्रदेश की प्रादुर्भाव कर भोग निम्ना में लिख भ्रष्ट लोगों ने अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिये उनके प्रति लोगों में एक असाहज चिन्तन एवं डर व्याप्त कर दिया है ताकि उनका प्रभाव भीली जाती देना पर बना रहे, यचना शास्त्र में कहीं पर भी इन तन्त्रियों की तन्त्र में आत्मव्यवस्था नहीं बताई है, इन शिवियों में साधक और महिला साधिकाओं में साथ साथ यज्ञ साधना में भाग लें हुए पूर्ण सात्विक एवं मर्यादित जीवन में रह कर पूर्ण सकलता प्राप्त की है।

ग्रन्थास्था में आस्था

वस्त्रों का अगस्त प्राप्ति मंदान। गायत्री यज्ञ का भव्य प्रादोक्षण। पूज्य गुरुदेव डा० श्रीमाली जी के सानिध्य में एक ही एक कुण्डल यज्ञ का सूत्र पात और उन चार दिनों में यज्ञ का वेद मंत्रों का और साध्यात्मिक पवित्रता का ऐसा प्रवाह बना कि जैसे बम्बई पूरे तरह से आध्यात्मिक नगरी बन गयी है, दूर दराज से लोगों का समूह भाग लेने के लिए और देखने के लिए उत्सुक था, प्रताप शंकर पण्डित्य सूर्य कांत गेवाणी, प्रह्लाद खन्ना, श्रीमप्रकाश सूद, अभिमन्यु सोलंकी, प्रादि के प्रवर्तकों को वातावरण बना, जो आध्यात्मिक प्रवाह बना उसका फल राज भी देखने की मिलता है, हजारों हजारों घर साधनाओं में प्रवृत्त हुए, और उन्होंने अपनी समस्याओं का स्वयं ही समाधान किया, लंकड़ी हजारों तबयुक्त-युवतियों ने मोहितता से ऊब कर साधना में मानसिक गान्ति अनुभव की, और लाखों लोगों ने इन साधनाओं और मंत्रों के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान किया वहीं हजारों दूसरे परिवारों की समस्याओं के निराकरण में भी योगदान दिया।

वास्तव में ही आज का प्रत्येक परिवार अपनी ही समस्याओं से ग्रस्त है, बूझ रहा है और उन्हें कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है, ऐसी स्थिति में केवल साधना और साधना शिविर ही मानसिक गान्ति दे सकते हैं तथा पारिवारिक समस्याओं का निराकरण कर सकते हैं।

(६) भूत-प्रेत, पिशाच योनियों के प्रति स्वस्थ चिन्तन का अतिरोध

इन साधना शिविरों के माध्यम से भूत शिवि साधना संभव करते हुए, साधकों को पहली बार आभास

कहा जाता कि कृष्ण-वेद विज्ञान भी अनुष्ठान की तरह ही निगम योगिना होने के को पूर्ण सेवा, समर्पण और विभक्तवर्ती है, इनके अनुष्ठान का कोई भी फल नहीं होगा उन्हें यह सत्य सिद्ध कर अपने ही ज्ञ में इनके कार्य होता हुआ उन्हें उक्ति प्रदान करने में सत्य भी-सफल होता है।

(७) हिमालय स्थित योगी ऋषि, मुनियों की योगनीय साक्षताओं को सम्भार कराना

गुरुभू विष्णु दत्त सत्यक साधिकाओं को गुरुत्व के एक साक्षित विज्ञान, हृद भी महाविद्या साक्षात् शिष्य साक्षता, दुर्गा साधना, भूत भविष्य संबंधी शक्तिगुणों साधना, महावक्त्रो साधना, महाकाली साधना, पौरव साधना, सावर मन्त्र साधना, सायुक्ते साधना आदी पर काया प्रवेश, साधुभक्त कादि साधनाएं सम्पन्न कर कर सिद्ध एवं स्वयं प्रकृता को अपने इस गीतशास्त्री विद्या की धारी को वसित करने प्रस्ताव यही एक गुरु-देव का इस जित्तों के साधना से प्रसन्न लक्ष्य रहा है, उनका ही हृद पर यह संकेत है कि ये साधना की-प्रसंगे प्राप्त हैं पूर्ण प्रसाद के प्राप्ति के औपाधिक एक जित्तों में प्राप्त थे सेवा है वह इस प्रसाद का रस वान कभी जीवन-वत् भूना नहीं भवता।

(८) गुरुशिष्य के यथार्थी पात्रन सम्बन्ध की पुनर्स्थापना

शास्त्रोक्त गुरु शिष्या के मार्गस में गुरु गुरुदेव अपने शिष्य की पुनर्स्थापना के लक्ष्य-प्रदान कर सगे से सगा साक्षीवर्ती एवं शक्तिमान् विद्या के उसके पारों का प्रप कर उसे उच्च जीवन प्रदान करते हैं, साधिकाओं के द्वारा उसे स्वयं वाप करना शक्ति की शीघ्र सम्पन्न करत है, जित्तों उनके चरणों में बैठकर अपना जीवन हन्य समझता है।

(९) सूर्य सिद्धांत एवं संजीवन क्रिया से आज के विज्ञान को भी चुनौती

अमरीका में इस विद्वान्त का प्रतिपादन एक विद्वान् में करते, सूर्य-गुरुदेव में अमेरिका साक्षियों को शीघ्र शक्ति के सभी वैज्ञानिकों को सूर्य मुक्त करने पात्रवर्ती में आज दिया जो विज्ञान को धनी भी करने में सक्षमों सल सगे, फिर भी कर पावे यह सम्भवना नहीं की जा सकती, आज मध्य एवं पूर्व विज्ञान के साक्ष्य में सिद्ध करने साधना कुछ ही वर्षों में करके सिद्ध करता है।

भोग और मोक्ष की प्राप्ति

समाप्तावादी आज की पीढ़ी को हर कदम पर वैज्ञानिकता का दम भरती है, इन साधना विद्वानों में भाग लेकर अतमलक हो जाती है, साथ गहर उसका धुने के बादल का उड़ जाता है, फिर भी जिनकी प्रवृत्ति जहाँ उबलने की है, उन्हें ध्यान विज्ञान ही रूप विचारों से तो जहर उलटने ही, धर्मिक वृत्ति के आधार पर ही लोके बल से सिद्धियां करीबना चाहेंगे, स्वयं शक्तिमय बन कर पश्चिमी से नज़ जप कर कर पूरा फल चाहेंगे, ऐसे लोक स्वयं तो ज्ञान के चिन्ता हो, सुखाद होने की है, दूसरी की वो सुमराह करने से बाज नहीं आते, धार स्वयं साक्षी-भूत हो कर एक बार, कभी के कम एक बार धनसा ही अपना बहुमूल्य समय बिलात कर इन साधना विद्वानों में भाग ले, दासकी निश्चय हो सगे का विचारधर धारण का तत्परवर्ती भवन में वैदिक शक्तिगुण स्वयं में संग्रहाय योग-प्रदान, गुरुदेव प्रसादान करके प्राप्त कितना सक्षम महसूस करते हैं, योगियों लीला की निश्चय हो यही व जित्तों है जो अपने प्राप में सदैव शीघ्र सही है, गुरुदेव रहने हुए इस प्रसाद का भी सात में एक की बार स्वयं स्वयं कर्म-साक्षि में सिद्धियां आपके जीवन को सक्षम कर मया कर स्वयं शीघ्र मोक्ष दोनों में ही पूर्णता प्राप्त कर सके।



प्रतीति का अर्थ है, हमारे संसार

[illegible]

धीर जिज्ञासा केवल ज्ञान साधनच नही नही राज
घराना भी अपने घरवा नहीं है, यहां के मनुष्यक, नन-
मनुष्यी के पक्ष प्रदन दृष्टि है कि मानवके ज्ञान योग
मिलने ऐसे माध्यम से मिलने को प्राप्तच नही नही क
घरं नें मही सज्जन राजन हो, किसी ऐसे योगी के साथ
कुछ दिन निवास जाए, जो हमें मानव नें सिद्ध हस्त हो
की कुछ मही हो तो कुछ दिनों के लिए आगंतु बने जाए
धीर बड़े घर किसी आज्ञा सम्पन्न, धार्मिक व्यक्ति की
सोच करे को नि बध्दशर दिखाने नें निश्च हस्त हो, जो
अद्भुत बनकर दिखा अपना हो जिसके पास कुछ ज्ञान
हो। योग को वास्तव में ही कुछ घर गुजरने की अमता
रहता हो।

इसी राजकुमारियों में मिस क्वीन का नाम धन-धन का बाबूदादा रहा था इनके प्रमुख कारण थे एक तो मिस क्वीन का वास्तविक सुन्दर और धार्मिक भी, उनके बारे में कहा जाता है कि जिसका वे बहुत प्रसन्न थे समग्र उनकी रचना भी है, संकाई हवायें मास-मास के राजकुमार और राज-राज के लोग उनकी भावक देखने के लिए तब तक रात थक जाते हैं, उनके चेहरे में कुछ ऐसा धार्मिक और प्रेम का कि जो भी उनके बारे में देखना वह मने प्राण ही था वा यह जाना, दो-तीन में देखने कोवें भी कहीं भी और शकलका से बाहर सैकड़ों हवायें मुख कटों उनकी एक महल-देखने लिये जब वहाँ जब यह जाना

निष्कामी को पुनिष की कड़ी सुरक्षा व्यवस्था होती, कई बार तो संकटों मुक्त उन रातों पर बैठ जाते किन्तु रातों ने निद्रा स्वप्न में धर जाने की होती, उनके मन में और कोई प्राण नहीं होता, केवल एक ही इच्छा होती कि एक बार भित्त चूँच लें, उसकी एक भलक को क्षण मात्र के लिए भी सहें, देख लिया जाय उन पर पुनिष के दंडों का कोई धर नहीं पड़ता और घाबिर हार मान कर भित्त चूँच को एक संकष्ट के लिए कार से बाहर धाया पड़ता और इन मुक्कों को दर्शन के द्वार कृतार्थ करना पड़ता और भित्त चूँच को देखकर वे मुक्त धन्य भव हो उठते और विनम्रतापूर्वक रास्ता दे देते।

परन्तु प्रचलित का मन उन विषय बातचीतों की धोर

कमी नहीं लगता भगवान ने उसे अपनी बी की धोर में धर कर सोनभई दिया था परन्तु उसके चित्त पर कोई मुक्त कद ही नहीं था उसके मन में इन मुक्तों के कोई विशेष आकर्षण था ही नहीं, उसे यह ज्ञात था कि मुक्त पर धर मिलने के लिए संकटों द्वारा ही मुक्त धामना है, मेरी एक भलक पाने के लिए ये राजकुमार रातों है और केवल फाँस से ही नहीं शिरदू गुरे संसार के राज, धरनों के मुक्त शारी के लिए प्रस्ताव भेज रहे थे, पर भूत के मन में तो भारतीय धन के प्रति एक अजीब सा आकर्षण और सम्मोहन था, उसकी हर समय वा इच्छा बनो रहती कि मैं उड़ कर भारत चली जाऊँ भी हिमाशय की कंदराओं में निवास करने वाले किसी से

मेरे बेटे ने वशीकरण सीखा और....और....

पहले मैं नहीं जानता था कि आश के युग में तन्त्र मन्त्र जीवित है, और उनके माध्यम से आकर्षक कार्य किये जा सकते हैं, मेरा जवान लड़का एक प्रकार से निकम्मा सा है, न तो वह व्यापार की तरफ ध्यान देता है, और न व्यापारिक कार्यों में रुचि लेता है, इससे मैं कभी कभी बड़ा खिन्न रहता हूँ, बात करने की उसे क्षमता नहीं, क्रोध इतना कि बात काँत पर उबल पड़ता है, और कोई भी यदि उससे एक बार बातचीत कर लेता है तो दूसरी बार उससे बात करने की उसे इच्छा नहीं होती।

बेहरा और शरीर भी कोई विशेष सुन्दर और आकर्षक नहीं है, मेरी ही तरह थोड़ा सा भारी शरीर और साबसा सा साधारण नाक नक्का का चेहरा है, किसी भी प्रकार से उसके शरीर पर, बेहरे पर या बाणी में लावण्य बोध नहीं है, कभी कभी वह अपने कमरे में बैठा रहता, सामने कुछ ताँबे के यंत्र रखे रहता और कुछ पत्र मंत्र जाप करता रहता, पर मुझे तो कभी कोई सिद्धि दिखाई दी नहीं, और मैं इन सब की बकवास ही समझता था।

एक दिन वह जोधपुर चला गया और लगभग महीने भर बाद लौटा, साथ ही जोधपुर से जयपुर, उदयपुर आदि घूमने निकल गया होगा, धाया तो उसने अपने कमरे में एक विशेष प्रकार का यन्त्र रखा और रात रात की स्नान कर पीली धोती पहिन कर हकीक माला से मंत्र जाप करत रहता, कभी कभी तो वह पूरी रात ऐसा करता रहता, जहाँ तक मुझे स्मरण है, पूरी बम्बई में उसका कोई संगी साथी था मित्र नहीं था, और फिर ऐसे साधारण रूप रंग वाले आकर्षक व्यक्ति का संगी साथी हो भी कौन सकता है?

लगभग उसने प्यारह दिन तक साधना की और साधना के बाद मैंने देखा कि उसके चेहरे

१. और भी
पर की
है प्रि
था कि
२. आत्म
र. तरा
के राज
ई है, प
३. और
कम्य र
तर्ज और
सही ऐ

सोही की दिव्या दृष्टि की अपने आन में उच्चकोटि का
साक्षि हो, जिनके रात अर्धे अस्तिता हो, जो अमर्यो
का अमर्यो हो और उनके पास से कुछ ऐसा सीखा जान
को दूरोप में और फीट में पुन मथा है, वह अपने जीवन
में कुछ ऐसा कला बाहुनी की किन्हीं केवल कास में ही
नहीं धनित पूरे संसार में घटना साप हो, और वह तनी
सब पान वह कुछ ऐसा कर चुके, जिसकी वैध कर
सोच सारी तले उगली दबा है, और उसने भारतीय
ताम्रिक ग्रन्थों में और भारतीय तांत्रिकों में इति सेना
प्रारम्भ किया, जहाँ से भी और जो भी अन्य मिल जातः
वह उसे बड़े बाव में पड़ती, भारतीय दूतावास ने भी
सकने रवापि कर ऐसे लोगों का प्रतिपक्ष करने की

कोटि की जो कि इस विद्या में माहिर हो, ऐसे तांत्रिक
ग्रन्थ मंत्रवाये जो आध्यात्मिक थे, और जिनमें तन्त्र की
महत्त्वपूर्ण विद्याएँ साधना के साथ अंकित थी।

और उसने यह निश्चय कर लिया कि मुझे हर हालत
में भारतीय तन्त्र दिखा सीखनी है और इस क्षेत्र में कुछ
कर चुकता है।

अंगारों पर नृत्य

और इन तांत्रिक ग्रन्थों की ध्वनितें बंसाते एक
स्थान पर उसने पड़ा कि कानाशा मन्दिर के सामने नव-
गति के दिने जहाँ के कुछ निमित्त आत्माकार बंध

१. मे
को वह
१. बड़ा
१. और
इच्छा

१. सा
शरीर
सामने
सिद्धि

१. मे
र का
रिता
सत्त्व

संगी

मेहरे

पर एक विचार प्रकार की चमक है और आत्मा में आकर्षण शक्ति भी, मैंने इस तरह कोई ध्यान नहीं
दिया और और उसके अन्तर्गत की विशेष कर लड़कियों की संस्था बढने लगी, वे वदाकशा घर पर आ
जाती और घण्टों बातें करती रहती, देखीफोन हर समय लड़कियाँ ही रहती, मैं आश्चर्यचकित था,
जब कि मैं शाप खर्च के लिए महीने में दो सौतीन ही रुपये से ज्यादा नहीं देता: पर अब उसे पैसे
की कमी नहो थी, और वह किसी को भी प्रभावित करने की क्षमता प्राप्त कर चुका था, एक बार
तो कठिन व्यापारी में व्यापारिक समझौता नहीं हो रहा था व बड़ा हठी और घाय था, तो लड़के
ने कहा मैं इस व्यापारी को अपनी कर्तों पर और अपनी इच्छानुसार मनवा लूँगा, मैंने सोचा यह कैसे
संभव हो सकता है, पर एक दिन मुझ लड़का उसकी दुकान पर गया और घन्टे भर बाद ही वह
उस सेट को ले कर मेरे प्रसिध्दान में आया और वह अड्डियल सेट मेरी ही शर्तों पर व्यापारिक सम-
झौते पर हस्ताक्षर कर चला गया, मैं आश्चर्यचकित था, अपने इस निकम्मे पुत्र पर जिसने असंभव
कार्य को संभव कर दिखाया, उसने कहा मैंने बलीकरण विद्या सिद्ध की है और मैं किसी को भी एक
दो मिनट में ही अपने बल में कर सकता हूँ और उससे मन बाधा कार्य करवा सकता हूँ।

इसके बाद मैंने कई बार इसकी अनुभव भी किया, उसके मित्रों की श्रेणी में व्यापारिक पुत्र
से तो सुन्दर आकर्षक प्रतिनेतियां थी, जिसकी देखने के लिए लोग तरसते थे, उसकी वजह से मेरा
परिचय क्षेत्र तो बड़ा हो, जब भी कोई कठिन व्यापारिक अनुबन्ध करना होता, या कोई किसी
उच्च अधिकारी से काम निकालना पाना तो मैं उसे ही भेजता और वह तुरन्त कार्य सम्पन्न कर लौट
जाता, वास्तव में ही वह मुझ से मा ज्यादा व्यापारिक सक्षमता पा चुका था।

और मैंने पहली बार अनुभव किया क राज के युग में भी बलीकरण विद्या बिल्कुल सही
प्रामाणिक है और इससे किसी को भी जीवन भर के लिए अपने बल में किया जा सकता है,
और उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाया जा सकता है।

भीड़ सम्भी इस कोट बोधी अगारों को खाई बनाते हैं और वे उन पर नृत्य करते हैं, ठीक उसी प्रकार से जैसे कि वे अजोक्त पर नृत्य कर रहे हों, उसके मूह भी पड़ा कि राजस्थान में आज भी कई स्थानों पर ऐसे भोग हैं

जो अगारों पर नाचते हैं, और उनके पांव सुलसले नहीं या पांवों पर किसी प्रकार का कोई धाम नहीं पड़ता, उसने वह भी पढ़ा कि चात्र अंजल में गराक्षिया जाऊँ के भील धाव भी देवी को प्रसन्न करने के लिए अगारों पर

किसी भी क्षेत्र में सफलता के सात गुण

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सफलता पाना चाहता है, वह चाहे नौकरी करने वाला हो या व्यापारिक क्षेत्र में कार्य करने वाला हो, वह चाहे डाक्टर हो, इंजीनियर हो या कोई अन्य व्यवसाय में संलग्न हो, प्रत्येक व्यक्ति की यह आकांक्षा होती है कि वह अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त करे, पूर्णता प्राप्त करे और ऊँचाई पर पहुँचे।

इसके लिए वे भरसक प्रयत्न भी करते हैं, पर वह आवश्यक नहीं कि उन्हें सफलता ही मिले, प्रयत्न करने के बावजूद भी व्यापार नहीं चल पाता या नौकरी में प्रमोशन नहीं हो पाता, या आर्थिक उन्नति में सफलता नहीं मिल पाती, इसके लिए समाज विज्ञानियों ने सफलता के सात गुण बताये हैं, जिनको अपनाने पर निश्चय ही, आप अपने क्षेत्र में सफलता पा सकते हैं।

१- हमेशा मुसज्जित रहिये, आपका व्यक्तित्व ही आपकी पूंजी है, दूसरों के सामने आपका व्यक्तित्व ही आपको सफलता प्रदान करेगा, अतः जब घर से बाहर निकले तब शोर्मे में अपने आप को देख ले कि क्या आप सभी दृष्टियों से सुसज्जित हैं।

२- हमेशा अपने से उच्च स्तर के व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित कीजिये, सौ सामान्य की प्रपेक्षा एक उच्च स्तर का व्यक्ति ज्यादा सहायक हो सकता है, और आपको आगे बढ़ाने में अनुकूलता प्रदान कर सकता है।

३- कजूस मत बर्णिये, जहाँ पर जितना व्यय करना पड़े जरूर करिये इस बात का ध्यान रखिये कि विभ्रता निशाने में स्थानवृत्ति आवश्यक होती है।

४- सर्वेपा क्रोध रहित रहिये, सामने वाला किताना ही उत्तेजित हो आप अपने आप पर पूरा नियन्त्रण रखिये, आपकी यह अक्रोचना ही आपको सफलता प्रदान करेगी।

५- व्यक्तियों से सर्वेपा दूर रहिये और किसी भी प्रकार के व्यसन के गुलाम मत बनिये, इससे आपका व्यक्तित्व निखरेगा।

६- नित्य एक नवीन मित्र बनाइये, आप अनुभव करेंगे कुछ ही दिनों में आपके पास मित्रों की एक लाभी बड़ीं सख्या हो गई है।

७- किसी भी क्षेत्र में पूर्ण सफलता पाने के लिए "सिद्धि साधना" सम्पन्न करिये, "सिद्धि साधना यन्त्र" के सामने नित्य एक माला मन्त्र आप निम्न मन्त्र का करिये—

मन्त्र

ॐ नमिभ्रे हुं।

आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आप प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की ओर अग्रसर हैं।

एक दिन वह गुप्त निगर को कि धराबली पर्वत की सबसे ऊँची चोटी है तो नीचे उतर रहा था कि उसे एक तरफ एक घोषक मायासाँ बीठा हुआ दिखाई दिया, लम्बे लम्बे बाल बिखरी हुई जटाएँ, सारे शरीर पर राख मली हुई और माँ की नीचे एक टाट का टुकड़ा लपेटे हुए, श्वेत से प्राणों से देखा कि जहाँ पर वह बीठा हुआ है, उसने अपने चारों तरफ लकड़ियों जला रही है, उसके मध्य में बीठा हुआ, वह घोषक निरन्तर मंत्र जाप में लगी है श्वेत ने आश्चर्य के साथ देखा कि चारों तरफ सुलगती हुई जलती हुई लकड़ियों की आँध्र धारों धारों में काफी तेज है, श्वेत स्तब्ध हो खड़ा होकर पूरा घड़ी की फिर भी वह उन हूँकी जलती हुई लकड़ियों की आँध्र लीला के साथ महत्सुक्त कर रही थी जब कि वह घोषक उसके मध्य में बीठा हुआ विशाल आँध्र से आँखें बन्द बिने मान जाप कर रहा था, म तो उसके मन में किसी प्रकार का प्रदर्शन का भाव था और न किसी प्रकार का कोई दिखावा भी, वह अपने ही ध्यान में और अपनी ही साधना मग्न था।

श्वेत ने धनुष किया कि मैं जो विद्या सीखना चाहती हूँ वह पिता इसके पास ही सकती है, यदि चारों तरफ घुं घुं बरती हुई लकड़ियों और धार की लपटों के बीच घुलकरता हुआ वह बैठ सकता है तो निश्चय ही अंगारों पर भी बन सकता है, मेरा जो लक्ष्य है मैं जो कुछ सीखना चाहती है वह इस घोषक से सीखा जा सकता है और वह दूर पराधीन की एक अट्टाल पर बैठ गई और एक टक उस घोषक को निहारती रही।

तब मन एक पल्टे बाद जब लकड़ियाँ जलकर अंगारों में परिवर्तित हो गई तो उस घोषक ने आँखें बाँकी और उस अंगारों की-उन वहने हुए अंगारों की मुठों में मैं ने के मतलब रहा, ऐसा लग रहा था कि जैसे वह वहने हुए अंगारों में हो यष्टि छोटे मोटे कंकर परपर हो, जब वह उन अंगारों से तेल चुका तो अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ, और जिधे हुए मृगजर्म को बगल में बसाकर अंगारों की पवों से रौंदा हुआ बाहर निकल आया।

ज्यों ही वह घोषक बाहर निकला श्वेत ने आगे कर प्रणाम किया, घोषक ने एक लम्बा श्वेत को देखा उस मने पर उसकी मुन्दरता का कोई प्रभाव नहीं पड़ा वह एक तरफ चल दिया, पहली बार श्वेत ने अपने शरीर का अवसान धनुष किया, पहली बार अपने शरीर पराजित होने हुए देखा, पर फिर वह हिम्मत कर घोषक के सामने जा खड़ी हुई और मुक्त कर बरणी पकड़ लिया।

घोषक ने प्रश्न माया बात है क्या चाहती हो ?

भारत आने से पूर्व श्वेत ने काम चलाऊ हि माया सीख ली थी, घटने घटने कोली मैं-आप लिखा होता चाहती हूँ और कभी कभी जो कुछ देखा है वह बिना आप से सीखना चाहती हूँ।

घोषक जोरों से हँसा, बोला तुम बहुत नातुक और बे साधनाएँ बहुत करो है, तुम्हारा शरीर से साधनाओं का बोझ कैसे सहन करेगा ?

श्वेत से उत्तर दिया मैं प्राणों हर कसौटी पर ख उतरूँ तो और आप जिस प्रकार से भी मुझे साध सिखायें, उसी प्रकार से सीखने का प्रयत्न करूँगी काल से आई हूँ, मेरा नाम श्वेत है और मैं केवल य विद्या सीखने के लिए काल से चलकर आरतवर्ष रही हूँ।

घोषक की श्वेत की बातों में सलता धनुष उसकी आँखों में ख निश्चय देखा और अपने पीछे के लिए कह दिया।

घोषक वहाँ से चलता हुआ, स्वस्थान में आकर गया, श्वेत भी उस स्थान में पहली बार एक घी के पास बैठी थी, फिर भी उसके मन में किसी प्रकार भय या संकोच नहीं था, उसके मन में एक संकल्प हृदय में ख निश्चय था और उसे विश्वास था कि अवश्य ही इस साधना का सिद्ध कर मुँगी।

घासे बड़
देखा उसके
गड़ा बालों
ने सौन्दर्य
घोड़न की
मद करके
परखी की

हो ?

गले दिवसी
मैं-पापकी
हुकूमती

नातुक हो
मशोर ऐसी

हो पर खरी
मुझे साधना
कहानी है
शेखन यही
तयरी पहुँची

मनुष्य दुःख
हो धीरे धीरे

घाकर बँध
एक कौशल
ने प्रकार को
नकल पा
या कि

इसै लयभंग एक महीने तक उस शीघ्र के पास
स्नान में हो रही, घोपड़ की भी लाता उसकी एक
रोटी को रोटी बना देता, जो घोपड़ खाता, रबैल भी
वह साकर लगेच मनुष्य करती, बड़ा कठोर नियन्त्रण
का शीघ्र था, बड़ी छ सादरा की बंगारों पर चलने
की, और रबैल ने धूमिलपूर्वक उस साधना की सीखने
का प्रयत्न किया, उतने सबसे पहले प्रयत्न किया सीखी
हुकूमती का सम्मान किया, पानी का महत्व बनाते
का सम्मान किया और फिर दुःख ताड़ना प्रारम्भ की।

इसै लयभंग वालीत दिन तक उस घोपड़ के साथ
रही, इन वालीत दिनों में उसने पचासिन तप किया,
धर्मिक को निद्र किया बंगारों पर खड़े होने का प्रयत्न
किया, बंगारों की हाथ में ले कर खेचने की किया सम्पन्न
की और बड़कते हुए बंगारों पर बैठने उठने नाचने का
नयन मनुष्य प्राप्त किया, और फिर शीघ्र में विदा ली।

घोपड़ की घोपड़ का न ही रबैल के घाले में प्रसन्नता
प्रकट की और न जाने का उसे कुछ हुआ, उसने कल्प

प्राप में अपराजिता प्रतिभा है, उत्ते उजागर कर सकते हैं विपरयना साधना से।

जैन धर्म में विपरयना साधना का आध्यात्मिक महत्व है, विपरयना का मतलब है, अपने मन को
बराबर मजबूत रहना और उस पर कठोर नियन्त्रण करना।

हकीकत यह है कि मनुष्य का मन पर नियन्त्रण नहीं होता, इसलिए वह कभी कामी हो जाता
है, कभी उसमें क्रोध की भाषा बड़ जाती है, कभी वह लालच में आ जाता है और इस प्रकार मन के
स्वच्छ वर्ण पर इन काम, क्रोध, लोभ, मोह की धुंधली सी परत छाती रहती है, और धीरे
धीरे मन धुंधला सा हो जाता है और व्यक्ति की आध्यात्मिक और साधनात्मक प्रतिभा समाप्त हो
जाती है, वह केवल कामुक, भोगी और अश्रद्धा बन कर रह जाता है, साधना में उसकी सफलता नहीं
मिल पाती, धीरे धीरे उसकी मनुष्यता समाप्त हो जाती है इन सारी खराब और विपरीत स्थितियों
को मनुष्य बनाया जा सकता है, विपरयना साधना से।

पर्यायार्थों ने बताया है कि राज रात्रि को सोते समय अपने दिन भर के किये गये दुष्कर्मों
को याद कर लेना चाहिए और प्रतिज्ञा करना चाहिए कि भविष्य में ऐसे दुष्कर्म नहीं करूँगा
इसी प्रकार प्रातःकाल भी नहीं किया धपनानी चाहिए, इससे धीरे धीरे चित्तवृत्तियों में सुधार
होता है, और दिन भर मन पर जो धुंधलापन छाता है वह दूर हो जाता है, धीरे धीरे इसका
प्रभाव बढ़ता जाता है और एक दिन ऐसा आता है कि उसका मन पवित्र, बख्श और वर्ण की
तरङ्ग निर्मल हो जाता है, ऐसी स्थिति होने पर वह गलत कार्यों को और नहीं बढ़ता उसके हाथों
से गलत काम होते ही नहीं, बुरे रास्ते पर पांव रखते ही उसका मन चिक्कारने लग जाता है, कि
तब वह गलत काम बरतें जा रहे हो और वह उन बुराइयों से बच जाता है, इस प्रकार धीरे धीरे
व्यक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से परे हो कर पूर्ण शुद्ध चैतन्य एवं निर्मल हो जाता
है और ऐसा ही व्यक्ति साधना क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है।

विदा है दो, और जबल बिना एक क्षण भी मंदाये भारत से फ़ाँस की धरती पर उड़र गई।

[illegible]

जबल... प्रारंभ हो रहकते हुए, अंगारों पर नृत्य
जिन्हें श्री मुना, जग रह गया, यह जैसे संभव है, इसल
को तो देखने के लिए लोग सँकड़ों जानर खर्च करने के
लिए तैयार थे, थोर फिर वह इसल अंगारों पर नृत्य
प्रस्तुत करती है तो वह तों घपने घप में बहिरोज नृत्य
होया, कुछ कामबार बाजों में इसे देखनेवाली भरां कंठ
बाजकर तो कुछ में इसे प्रथम कदाया, कुछ ने लिखा कि
कि 'हम को कुछ हो सकती है।

हैवैल ने ग्राह को भी एक कूड़े की बूत दी, हैवी-
विजन के द्वारा एनार्जस करना दिया कि नृत्य के समय
उन विशेषताओं के सम्बन्ध ही वह अपने शरीर का परीक्षण
करनेवाले भी वह बला देगा कि नृत्य में व तां जिवी
प्रकार की दृष्टि का इस्तेमाल जियः २ घोर न जिंसी
प्रकार के रजस्य का लेप हावों और पैरों पर बना है-
गमिटी का कर्तव्य वह पूरी तरह से प्रामाणिक कर देगी
तभी वह नृत्य प्रस्तुत करेगी।

इस वक्तापन से तो हलकाम्प सा नुब गया, श्रव तो शक करने की कोई तुल्यशक्ति भी बाकी नहीं बची थी, प्रखरार भावों की झेलती हृदय से गई थी, और नात्र तीन दिनों से ही वो बहीने पहले ही पूरे स्ट्रेचियम के टिकट भंडी दासों पर बिक सके थे, एक एक टिकट जेब में बिक रहा था और ऊबे श्रविकारी की भी एक टिकट पाने के लिए

आरजू विनती करनी पड़ रही थी।

दहकते हुए अंगारों पर गुलाब का फूल

[illegible]

ठीक पांच बजे बसले मन्दिर गति से कमरे से बाहर निकली, लोग बाथ्रूम काठे उस सुन्दर ताबूत, कोशिका गुलाब के गुच्छ को बल्लेले हुए देख रहे थे धीरे साधन साधन के देख रहे थे बहकती हुए धनि मुण्ड को, जिधर अंगारे जोरों से दहक रहे थे धीरे उनमें से एक एक फीट की लपेटे बाहर निकल रही थी, उस कुम्ह को धीरे धीरे देख थी कि सत पीठ दूर को बढ़ा होता मुक्ति पा ।

एनल हावर भागो को धीर बढ रही थी धीर देखि
बिबु न केरु उसको एक एक भाग को कैद कर रहे थे
साथ स्टेडियम स्थान सा वेल् रहा था, मैच मैच की जगह
जगह बरो हुई की धीर नैन बिना किसी हिचकिचाहट
के भागो की धीर बढ रही थी, स्टेडियम का आलम था
या कि उसमें तिल रहने की नो जगह नही थी ऐसी

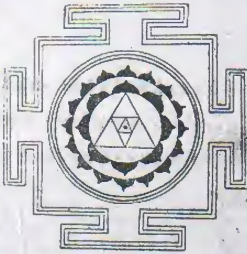
तप रहा था कि जैसे सूर्य पूरा उगम करे हो। युरोप की भरी परितुलना के ऊँचे में जहाँ शीतल इस रूप के देखने के लिए विशेष रूप से सज्जित था।

दहकते हुए शक्ति कुण्ड के पास कुछ क्षणों के लिए खल्लू रक्तो, उसने शक्ति कुण्ड की परिकला की धीरे धीरे उपस्थित समुदाय को प्रभावित किया और उसके बाद शक्ति कुण्ड में नव माँव उतर गई।

सारा स्टेडियम मर्म रोके हुए खड़े रह गया था उन्हें सिखाते नहीं हो रहा था कि शक्ति कोनल शरीर इस दृष्टि की हुई बाँध पर अंगारों पर मजबूत सकता है, पर खल्लू शक्ति का भी-उत्ते मूल्य का पहले के ही समुदाय का धीरे धीरे तत्त्वज्ञान के साथ उन अंगारों पर नृत्य कर रही थी, जैसे कि कोई सुन्दरी मध्यम कोनल गलावे पर नृत्य कर रही हो, वह अपने हाथों में दहकते हुए अंगारे लेगी, उदासली, पाँच से दोकर मारती और बराबर नृत्य करती जा रही थी।

अपने धाम में प्रदूषित रह गया शक्तिमय शरीर इस था जो तन्त्र ही नहीं हो सकता था कि शक्तियों के तन्त्र में रह गया था, शक्तियों की शक्तिमान नहीं हो रहा था वह पाँचों मल नष्ट कर देते रहे थे और खल्लू सुन्दर सुन्दर खल्लू मस्ती के साथ चिन्तित रही थी, मजबूत रही थी, नृत्य कर रही थी।

समग्र एक घण्टे तक नृत्य चला और सारा स्टेडियम खल्लू सा यह नृत्य देखता रहा, एक घण्टा कम बीत गया कुछ पता ही नहीं चला, और पूरे सारा घण्टों के बाद खल्लू और धीरे धीरे शक्ति कुण्ड के बाहर निकली, अंगारे धमकी दहका रहे थे और उसकी लड़के उठ रही थी पर खल्लू निवृत्त शक्ति की निवृत्ति और उसके चारों तरफ उपस्थित समुदाय को भारतीय मुद्रा में प्रभावित किया और सारा स्टेडियम के लोग खड़े हो कर सात्त्विक बजाते रहे, सात्त्विक के और से हारी कोनल नरती हुई सी गई थी



धीरे इस वषण की केवल स्टेडियम में बैठे हुए लोग ही नहीं देख रहे थे बल्कि पूरे संसार के लोग टेलिविजन के पर्दे पर इस प्रदूषित नृत्य को ताल रोके देख रहे थे।

धीरे पूरे दिन प्रत्येक बार पाँचों में बड़ी बड़ी बुद्धियों के खेल के मूल को ठूँटी ठूँटी बताना की, इसे शक्तिमय नृत्य बताना, बताना क्या कि खल्लू धरने धाम में शक्तिमय है और खल्लू एक ही नृत्य से पूरे विश्व में प्रसिद्ध हो गई, इसी पत्रिका धाम हुई कि घर में रखने के लिए जगह ही नहीं छोड़ी।

इसके बाद युरोप के अन्य स्थानों पर तीन नृत्य प्रस्तुत किये फिर धाम में खल्लू का मन इस भीतिवत्ता से ऊँच गया, उसने प्रसिद्धि, सम्मान, यश, और शक्ति का सम्बार धरनी माँछों से देखा और फिर वह एक दिन बिना किसी को बताये चुपचाप भारत चले गई और सेक्रेट रूप धारण कर कन्याती बन गई।

आज कल खल्लू प्राण के महाबलपूर्ण धाक में तन्त्र की विशिष्ट साधनाएँ सीखने में लगी है।

✽

अब संसार में कोई भी स्त्री असुन्दर नहीं रह सकती

सौन्दर्य अपने प्राय में अत्यन्त ही मधुर और आनन्ददायक द्रव्य है आज से ही नहीं वैदिक काल से स्त्रियाँ अपने सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए प्रयोग करती रही हैं, मनुष्य के कई नजों में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि उन्होंने सौन्दर्यमय बनने के लिए जहाँ देवताओं से प्रार्थना की वही विविध अवसरों से अपने प्राणको सजाने का भी प्रयत्न किया।

घरि घोर सौन्दर्य के मान दण्ड बनने लगे और पौराणिक काल में घाते घाते स्त्रियों के सौन्दर्य पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा, प्रत्येक स्त्री यह चाहती थी कि वह दूसरों के सामने सुन्दर लिये, प्रत्येक स्त्री के मन में यह भावना थी कि वह इस प्रकार मर्त्यो का प्रयोग करे, जिससे उसकी मनुस्वर भावा सुन्दरता में बढत जाय, इस समय तब मनुष्य का प्रयत्न काफी हो गया था, और अंतर्गत मानस में यह भी स्पष्ट हुआ था कि मनुष्य से संबंधित जड़ी बूटियों के सेवन से भी सौन्दर्य को निरास हो सकता है।

इसके बाद तो इस पर नित्य नवीन शोध होती रही, नित्य नवीन प्रयोग होते रहे, और मनुष्य ही उन जड़ी बूटियों और द्रव्य का निकाला जाने लगा जिसके माध्यम से सौन्दर्य को बढ़ाया जा सके, जिसके माध्यम से पूर्ण स्वस्थ शरीर बनाया जा सके, और जिसके माध्यम से अमरता और माकर्म्य प्रदान किया जा सके।

बालीवास ने सौन्दर्य के—पूर्ण सौन्दर्य के बारह गुण बताये हैं जो स्त्री इन बारह गुणों से युक्त है, वही वास्तव में सौन्दर्यमयी कही जा सकती है, एक महात्मा पूर्ण स्त्रीत्व में स्त्रीरूप ने अपनी वैशिका को सौन्दर्य के इन गुणों को बताते हुए कहा कि बाल और अधिव्य में भी इन बारह गुणों से युक्त स्त्री ही सौन्दर्यमयी कहना सकती है।

(१) जिसका कद पूरा हो अर्थात् लगभग ५ से सवा पाँच के पास पाँच फुट लम्बा होना है।

(२) शरीर में फालतू मांस न हो, परन्तु पूरा शरीर पीठिका हो।

(३) जिसका वक्षस्पर्श और हृदय बराबर नाप के हो पर कमर सर्वथा पतली हो, बाधुनिक समय में भी कहा जा सकता है कि यदि वक्षस्पर्श और हृदय ३६ इन्च के हो तो कमर २४ इन्च के पास पास होनी चाहिए।

(४) सिर के बाल लम्बे, घने, चपटीले और सह-राहे हुए हो, ऐसा नगे कि जैसे पर्वत शिखर से कोई नराला नीचे गिर रहा हो।

(५) भ्रम्याकार चेहरा हो, तथा चेहरे पर किसी प्रकार का कोई दाग धब्बा या मस्सा न हो।

(६) दाँते बड़ी बड़ी सुन्दर और सम्मोहन युक्त हो, पक्के भ्रम्य हो, जिसके माध्यम से वह किसी को जो आकर्षित करते हैं सक्षम हो।

(७) साठ शरीर और हो जिस प्रकार दूध से

केसर हावने पर दूध का रंग जैसा नैसर्गिक होता जाता है ऐसा ही रंग सोम्य की परिभाषा माना गया है।

(२) छत्रज उत्पन्न, मन्त्राल पेठ और शरीर अंधाएं सोम्यवर्ण माने गई हैं।

(३) शरीर पर बाल नहीं के बराबर हो और हाथ

शरीर और शरीर आकर्षक हो।

(४) वस्त्रों वाली आध्यात्मिक मयूर और आनन्द प्रधान करने वाली हो साथ ही साथ उसके चरणों में भी और चरणों का एक चिह्न तरीका हो जिससे कि मानने वाला सम्मोहित हो सके।

सौन्दर्य वल्ली

यह एक महत्वपूर्ण पोषा है और ऐराणिक काल से इसे "सौन्दर्य वल्ली" के नाम से पुकारा जाता है, इस पोषे की ऊँचाई लगभग तीन सार्डे तीन फीट होती है, इसके पत्ते लम्बे मुकीले और पोलापद लिये हुए हरे रंग के होते हैं, इसका तना अत्यधिक चिकना और आकर्षक होता है, इस पर बादाम के आकार के गोले फल लगते हैं जिसमें गुठली नहीं होती, वसन्त ऋतु में साल में एक बार इस पर सुनहरे रंग के पुष्प खिलते हैं, जिससे यह अत्यधिक सुगंध और दिखाई देता है, इन फूलों की यह चिकनाता है कि रात्रि में ये पुष्प दीपक की तरह टिम टिमते हैं और रोकनी देते हैं जिससे दूर से ही इस पोषे की पहिचान हो जाती है।

इन पोषे के आस पास की सभी जेल मुक्त हो जाती है ऐसा लगता है कि जैसे पोषे के चारों ओर जेल फैला गया हो, पोषे का मिट्टी उठाई जाय तो सन्तुष्ट अनुभव होती है, इसके तने के चारों ओर कोई न कोई साँप लिपटा रहता है या तने को खोदने समय तोड़े से साँप अवश्य हो निकलता हुआ दिखाई देता है, इसी से समस्त वल्ली पोषे की पहिचान होती है।

यह साँप अत्यधिक जहरीला, काला, और लम्बा होता है, कुकुर और खोइने पर पास में लड़ा व्यक्ति जहर के प्रभाव से समाप्त हो जाता है, यदि यह साँप किसी को काट ले तो निश्चय ही उसकी मृत्यु हो ही जाती है, इस पोषे की जड़ को प्राप्त करने के लिए साँप को निकालना या पकड़ना जरूरी होता है।

वोही का एक पिजरा बना कर व्यक्ति पास में ही बने मचान पर बैठ जाता है, और फिर सोहे की किसी मुकीली छड़ से पास की घरती की आँधने की प्रक्रिया शुरू की जाती है, बोड़ी की देर में जब कुकुरता हुआ सर्प बाहर निकलता है तो उस पर वह सोहे का पिजरा डाल दिया जाता है जिससे वह साँप कैद हो जाता है, और फिर इस साँप को पिजरे में ही कैद कर दूर ले जाया जाता है और तब इस पोषे की जड़ को खोद कर बाहर निकाली जाती है।

यह मणिधर सर्प होता है, कुछ लोग इसे मार कर इसके मस्तिष्क से मणि निकाल लेते हैं जो सर्वमणि कहलाती है, और जिसे संसार की दुर्लभ मणि कही जाती है, यह रात में हीरे की तरह चमकती है।

गह गुण
१ मासिक
१ शरीर
इन गुणों
की इन
वल्ली है
१ से सारा
रा मरीर
१ अन्य के
व से दो
नहे ३६
१ बाहिर
१ सही
ते कोई
१ किसी
बुक्त हो,
की भी
दूध में

(११) सलाह बोनी, मुकीली नासिका, गुलाब की पंखुटियों को सरह होठ और बोड़ी ती निकली हुई दुधड़ी धामायेन मानी गई है।

(१२) साया करीर एक विष्णु सन्त में बना हुआ था जो, किसी देवता वाले की कोई कामो नकर न थाने।

उपरोक्त बारह विशेषताएँ, सोम्य की विशेषताएँ मानो गई हैं, और इन विशेषताओं से युक्त तबली ही सोम्यसमर्पण कहें जा सकती हैं।

कालीदास के समय में वैष्णवों को नगर बहुत कहा जाता था, वे बनबनत नहीं होते जो धर्मियु जीवन भर किसी एक पुरुष की ही होकर रह जाती थी, और वह पुरुष उसके रहने रहने, धाम धाम और जीवन निर्वाह का पूरा धन उठाता था यह उन समय में सम्भन्ता का एक मात्र देव माना जाता था, उच्च धर्म के लोग इस प्रकार नगर बहुत से युक्त होकर अपने धाम की शौर्यशाली महारूपा कहते थे, जिसकी उप पत्नी ना नगर बहुत बा प्रेमिका जितनी ही ध्याता मुत्तर होती थी, धामधर्म में उसका स्वर उठता ही ऊँचा उठ जाता था।

उस समय दिव्यात्मना की चर्चा भारत भर में होती लभ गई थी, मात्र १७-१८ वर्ष की आयु में ही उसकी चर्चा और उसके धर्मधर्म की बात धर्म जन साधारण में फैलने लग गई थी, इससे पहले ही कालीदास दिव्यात्मना की माँ के पास पहुँचे और और दिव्यात्मना की प्रसन्न किया बनाने का प्रस्ताव रख दिया।

कालीदास केना संग्रह का प्रतिष्ठित और सम्माननीय व्यक्ति दिव्यात्मना को धरना थे, इनसे ज्यादा मानस की क्या बात हो सकती है, दिव्यात्मना की माँ ने सहर्ष स्वीकृति दे दी।

कालीदास यन्त्रपुर में पहुँचे और पहली बार दिव्यात्मना को देखा सासब में ही वह सोम्य की साधारण पुँज थी, सोम्य के को मानसक होते हैं, उस पर बहुत लगभग सभी उतर रही थी, परन्तु कालीदास तो कालीदास ही

थे, उन्होंने मन में सोचा कि दिव्यात्मना एक ऐसी सौन्दर्य पुँज बने, जिसे माने के लिए हजारों सम्माननीय व्यक्ति तबलो रह जाय, जिसकी श्लाघा देखने के लिए शरीर इन्तजार करे जो अपने धाम में देवान सोम्य हैं ही, पर इसके लिए कुछ और भी उपाय जरूरी हैं, और उसने दिव्यात्मना को कहा निश्चय ही तुम सोम्यसमर्पणी हो, और अपने धाम में प्रसन्न साधवर्ग रखती हो, परन्तु दुम्हें यह स्मरण रखना है कि तुम कालीदास की गणिका हो, और ऐसी गणिका बनने धाम में धार्मिक होती है, मैं इसके लिए जरूरी ही कोई उपाय करूँगा और निश्चय ही मैं तुम्हें संसार की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी बना दूँगा, एक ऐसी सुन्दरी जो अपने धाम में देवान और प्रसिद्ध हो, एक ऐसी सुन्दरी, जिसको देखने के लिए मनुष्य तो क्या देवता भी तरसे, एक ऐसी सुन्दरी जिसका नाम होठों पर पारें ही, युक्त तबल कर रह जाय, और मैं तुम्हें ऐसा लायक बना बाहता हूँ जो अपने धाम में आश्चर्य चकित करने वाला हो।

उस समय प्रादुर्भावार्थ सुधन्वा का नाम धारा नगरी में ही नहीं बसियु पूरे भारतभर में विख्यात था, प्रादुर्भाव का उन्हें बहुत ज्ञान था, कालीदास ने स्वयं उन्हें आजनाथा बा और मनुष्य किया बा सुधन्वा अपने अपने धाम में अत्युत्तम सेवाराज है, जिनके पास महत्त्वपूर्ण प्रयोग हैं।

कालीदास सीधे सुधन्वा के पास पहुँचे, कालीदास को अपने घर आया देख कर सुधन्वा अत्युत्तम हो गये, माँ से मिलते हुए बोले, धाम में और मेरा घर सम्म हो गये हैं जबकि मापके कारण यहाँ गये, परन्तु जरूर धाम की विशेष उद्देश्य से धामे हूँ, धाम मुझे आता है, धामधर्म ही मापकी इच्छा को पूरी करने का प्रयत्न करूँगा।

कालीदास धाम पर बैठ गये और और शरीर अपने मन की बात, सुधन्वा को बना दी, कालीदास कहा, धार कोई ऐसी शीघ्रता तैयार करें, जो अपने म

मे प्रतिबिम्ब हो, और मैंने अपने मनोके मे सौन्दर्य के
विस्तार निजो है, तो सौन्दर्य के धारक शृणु बनाये है उस
पर विस्तारणा करी उतरे, यथपि वक्षमें कोई तो राग

मही नि विद्यामया सुन्दर है, पाकयक है, सम्मोहक है
परन्तु परे मन ने तो कुछ और है, न तो यह चाहता हूँ
कि वह दिव्य को पश्चिमी और प्रथम सौन्दर्य छात्रिणी

सौन्दर्य बटिका

सुप्रबुद्ध ने जो फार्मूला सांख्यिकी के लिए प्रयोग किया था वह काफी वर्षों तक गोपनीय रहा, भारत के अधिकतर फार्मूलेदारों का प्रयत्न इस फार्मूले को प्राप्त करने से सदाशित था और उन्होंने इसकी खोज भी की।

पिछले दिनों मंडी (हिमाचल प्रदेश) में रहने वाले एक पंडित वैद्य को सुनवा की लिसी हुई एक पुस्तिका प्राप्त हुई है जिसमें कई सुस्त्रे लिखे हुए हैं, वे सभी सुस्त्रे पुरुष वीर्यदंघी और विशेष कर नारी शोणित को उजागर करने के लिए हैं, इसी पुस्तिका में हीमन्द वीर्य का भी प्रयोग बहुत विवरण दिया है जिसे भी महिला का पटने के लिए प्रयुक्त कर रहा है।

सांन्ध्यं कल्पा पीथे प्रजापतिः प्राणं विधे जायं यदि कौ तिला सोमस्यं दत्त्वा जही हो
 हो पञ्चत्वा गोला तथा कः पुनः विधा जाय पञ्चोत्तमं पत्ने, दारुह्य सोदो पुन तथा छः सोमं उसके
 कल लिये जायं, और इन सब में श्यामा में गुला दे, दूधन पर इन सब को प्रलय प्रलय पीत कर
 सोमं च प्रलय बनायं ।

फिर एक किलो हरे आंवले ले कर उसका छिलका तथा उसकी गुठली निकाल दी जाय, और फिर उनको दो किलो पानी में भिगो दें, तीन दिन तक पानी में भीगने के बाद उनको उस पानी में ही मसल कर एक रस कर दें, और किसी मलमल के बारीक कपड़े में छान ले ।

[illegible]

सेवन करने से पूर्व छः दिन तक त्रिफला का चूर्ण ले कर पेट साफ कर ले और फिर नियम दो गोली सुबह और दो गोली शाम सेवन करें, कम से कम यह दस दिन का कोर्स ले और ज्यादा से ज्यादा नौ से दिनों वा।

भेषज के समय खट्टा चीज, मसो, दूध, चीज़ या गरिष्ठ भोजन न करे, तो वास्तव में ही इसके हाथों हाथ चमत्कारी परिणाम देखने को मिलते हैं :

जैसे जिसके सामने रक्षा, चर्चों को और नियंत्रण की तुलना करने लगे, पर ऐसा सौन्दर्य नाम धर्म के द्वारा ही संभव है, और मैं इसी लिए धर्म के घर-घर उपस्थित हुआ हूँ।

मुद्रा का ये कहा, मैंने इसका प्रयोग किया है, और जो कुछ आपने कहा है, जो कुछ आपके मन में है, तथा दिव्यशक्ति को जिस प्रकार से ध्यान प्रदान करते हैं, उसके अनुसार वस्तुओं को सौन्दर्य मुक्त बनाई जा सकती है, मैंने "सौन्दर्य शक्ति" शीर्षक के द्वारा सौन्दर्य मुद्रिका का निर्माण कर धारण पुत्री पर ही प्रयोग किया था, और प्राप्त स्वयं इस प्रकार का प्रमाण देना सकते हैं, ऐसा कहते कहते मुद्रिका ने अपनी पुत्री को धारण की थी, और ज्यों ही मुद्रिका की पुत्री मुद्रिका की उपस्थित हुई, वाली दास ठने से रह गये, ऐसा था कि जैसे हृदय की दृष्टि बन गई हो, धर्म के चहरे पर टिकी तो हृदय का नाम ही नहीं ले रही थी, एक ऐसा सौन्दर्य मुद्रिका नामने बना था, जिसके धर्म दिव्यशक्ति मुद्रिका की, नगम्य थी।

मुद्रिका के संकेत पर मुद्रिका के अन्दर चली गई, और सब काशीदास सौन्दर्य मुद्रिका, संकेत होने होते उन्हें कुछ मनन बन गया, बोलें मुद्रिका! धारण में ही धारण सौन्दर्य धारणमुद्रिका है, मैंने आपने धारणमुद्रिका को पहनी बार प्रत्यक्ष देखा है, और मैं ऐसा ही सौन्दर्य, ऐसा ही धारणमुद्रिका दिव्यशक्ति में चाहता हूँ।

मुद्रिका ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, मैं एक हस्ताक्षर के नीचे और संवेधित शीर्षक बना कर आपको ये मुद्रिका और इसकी सेवन विधि भी बता दूंगा, जिस एक बोली मुद्रिका और एक पोली नाम की मेरी से मुक्त से मुद्रिका भी संसार की धर्म मुद्रिका बन सकती है; यह मुद्रिका ही ऐसी है, जिसके माध्यम से शरीर के रोग और दोष समाप्त हो जाते हैं, शरीर का आरोग्य और बड़ा हुआ दास कम हो जाता है, स्वस्थ बनने सही आकार में जा जाते हैं, और वैद्यक वेदांग, लाक्षणिक मुक्त बन जाता है, यही नहीं धर्म इस मुद्रिका की यह विनम्रता है, कि

तंत्र द्वारा अद्वितीय सौन्दर्य प्राप्ति

आमुद्रिका के माध्यम से तो सौन्दर्य प्राप्त होता ही है, तन्त्र के माध्यम से भी आश्चर्यजनक सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता है।

मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा मुक्त सौन्दर्य मुद्रिका प्राप्त कर ले और मुद्रिका की रात्रि को यह प्रयोग उस मुद्रिका के सामने प्रारम्भ करें, इससे प्रत्यक्ष उपकरणों की या दीपक प्राप्ति की जरूरत नहीं होती, केवल स्पष्टिक माला से मन्त्र जप पर्याप्त होता है, कुल छः दिन में सवा लाख मन्त्र जप किया जाय।

मन्त्र

ॐ रतिक्रियायै कामदेव्यायै मम श्रेणो उपरि प्रविश्य सुदशंगायै फट्।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है और इस प्रयोग को प्रत्येक पुरुष या स्त्री सम्पन्न कर सकती है।

यदि यह सोचा जाता है तो वह वह कर एक निश्चित सम्पत्ति की प्राप्ति कर लेता है; यदि बात छोटे हो या बचकिले न हो या फटे हुए हो, तो वह सम्पत्ति धारण करने को जाते हैं, इस मुद्रिका के द्वारा कमर का काष्ठन मांस को तीन दिन में ही समाप्त हो जाता है, और प्राणों के नीचे को कासात्म्य होता है, वह हूर हो जाता है, यही नहीं धर्म इस मुद्रिका की यह विनम्रता है कि यह बचकिले के जाने या तांबले रंग को पीले रंग में परिवर्तित कर देती है, इसलिए तो यह संसार की बहुमूल्य और अद्वितीय शक्ति है, जिसका प्रयोग मैंने अपनी पुत्री पर किया है, और वह आपके सामने है।

काशीदास उठ कर चले गये, पर चौबीसी बंधे उनकी दाखों के सामने मुद्रिका का सौन्दर्य मंडराता रहा।

प्राप्ति

धर्म के लिए भी भुगतानों की पूछ न सके, वास्तव में ही वह भद्रपूज कोन्द की साक्षात् की भी और जिसकी जिनके के बाद भुगतान सक्षम नहीं है,

एन होता

क सीधे

यें गुटि

यह प्रयो

मसे धर्म

हन्त नहीं

परदे

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

मन्त्र प्र

दुपचा ने मीरवंकली पोषे की दुंड निकालन उन समय धने बकती में ऐसे पीये प्रचुर भोगा में ये धीर उसके पावों मुल-बल, तगा, पत्ते, फल, धीर पुष्प लक्ष्मर उसकी घोट कर मन्त्रोप्य जल में सर्वन किया धीर उससे लोच गोपीरा का निर्माण किया ओ धने के आकार की ओ, धीर एक दिव मुकता मे कालीदास की सम्मान मुकं कला रूप ये सोनियां उन्हें दे दी थी- बना दिया कि इस लोके का देवन मिल प्रातः धीर सायं करना है।

कालीदास उन सोन्दर गुटिकायों की मन्त्रुषा ले कर मन्त्रुषा के पास गये, धीर उसे सोने के बर्त में लिपटी हुई ये सोनियां उठे ये सो धीर उसकी सेवक बिधि भी लक्ष्म भी।

दिव्यांगना ने उसी दिव से उन सोनियां का सेवन मान्य दिया; कालीदास अग्रमान लिये उसकी प्रगति करने के लिए दिव्यांगना के वहाँ जाते रहते, धीर महसास करते कि वास्तव में ही सोनियां का अक्षर हो रहा है।

पर इसके बाद वे लगभग किसी अन्य कार्य में ललक करने के कारण पन्द्रह दिन तक दिव्यांगना के वहाँ नहीं जा सके, धारमयरी से बाहिर होने के कारण वे प्रगति भी नहीं पा सके, धीर यह एक ऐसा नायक मायला था कि किसी को यह भी नहीं सक्ते थे।

जब वे बाहर से वापिस लौटे तो मन्त्र धारि ने पूछा हो कर सबसे पहले दिव्यांगना के वहाँ पहुँचे, अन्तःपुर में गये ही सामने दिव्यांगना को खड़े देखा, अपने धार में धारण धीर देखाओं को भी लगाने वाला सोमर्ष था दिव्यांगना का, तारा शरीर जैसे बदल गया था, एक अमृत लपक, एक आश्चर्यजनक गति, धीर अगिष्ट सोमर्ष पर गया था, दिव्यांगना को देख कालीदास की लहलहा लगी भावों पर विभावस नहीं हुआ कि यह नहीं दिव्या-

गना है जिसे पन्द्रह बीस रोज पहले छोड़ गये थे, हजार हजार गुना अन्तर का गया था दिव्यगंगा में, एक ऐसी विशालता की वृष्टि रिजवाई दे रही थी दिव्यांगना में, कालीदास ठहरे से घड़े के पड़े रह गये, उन्हें अपने शरीर को भी छोड़ नहीं रहें, धारि केवल का नाम हो नहीं ले रही थी, निजना समय कीज गया, कुछ पता ही नहीं चला, वास्तव में ही इन गीतियों के तेजन से दिव्यांगना भद्रपूज सोमर्षमयी बन गई थी, गृध्मना की पुत्रों से भी ज्यादा सोमर्षपुत्र, ज्यादा प्रागोत्तेजक धीर ज्यया प्राचर्यगंग गुफत।

अचानक दिव्यांगना की बीरता के अक्षर की तरह आवाज गुवाई पड़ी-बैठिये।

कालीदास बेतय हुए, धीर वास्तविक स्थिति में धारि, बोले दिव्यांगना, तुम वास्तव में ही धड़िलीय सोमर्षमयी बन गई हो, इस समय पूरी पृथ्वी पर तुम्हारे जैसा सोमर्ष धीर आचर्यन किसी के पास नहीं है, मनुष्य तो क्या जैसे त जैसा योगी, तप्यासी धीर देवता भी तुम्हारे सोमर्ष का बेग सहन नहीं कर सकता, किसी को भी तुम विरहित करने की सामर्थ्य रखती हो, येहरे पर एक ऐसा धीर, एक ऐसा सोमर्ष धीर ऐसी आशा था गई है, कि उसका वर्णन करना भी मेरे बल में नहीं है, तुम्हारे सोमर्ष के धामे मेरी प्राणी मृद है, वास्तव में ही तुम साजे मिले हुए गुलाब के भी ज्यादा कोमल, सुगन्धित, साकरक धीर धड़िलीय हो-धीर ऐसा कहते कहते कालीदास ने खड़े हो कर दिव्यांगना की धननी भुजाओं में कर लिया।

इतिहास साली है कि जाने जाने समय में दिव्यांगना कतौही किसी पर शासन करती रही, उसके सोमर्ष की एक अक्षर पाते के लिए केठ, श्रीमन्त धीर अक्षर्य प्रांचे बिछाए रखते, उनकी एक आवाज पर धनना सब कुछ न्योछावर करने के लिए बुबक तैयार रहते, धीर दिव्यांगना सारतमर्ष ही धड़िलीय सोमर्षमयी बनकर हमेशा हमेशा के लिए अपना नाम इतिहास में अंकित कर दिया।

इकतीस वर्षों भरवी "हीन" जिसके पास दुर्लभ तन्त्र है

पुनर्मान काव्य "तन्त्र काव्य" कहलाता है, समय का वह बराबर गुमता रहता है, और उसी प्रकार से गुम परिवर्तन होता रहता है, वर्षों पहले पूरे भारतवर्ष में तन्त्र का बोधाला था और नायिकों को भारतवर्ष में अत्यन्त ही सम्माननीय रूप में देखा जाता था, कुछ भोखनाथ, अत्यन्त नायकी और तन्त्र काव्य काव्यी बोधाला काव्य को पाव भी हम सम्माननीय स्थिति में देखते हैं जिन्होंने भारत की प्राचीन तन्त्र विद्या को जीवित रखा और हजारों वर्षों की अज्ञानि को हटाकर हमें प्रकाश कर के दिये।

पर बाद में कुछ तो पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति हम पर हावी हो गई और इन दोनों को इकोमता तथा पाश्चात्य माना जाने लगा, और फिर कुछ ऐसे पाश्चात्य और दोनों तन्त्रिकों की भारतवर्ष में चली तरफ चल गये जिन्होंने देह कुछ को तन्त्र मान लिया, तन्त्रो तन्त्रो जटाए, विभिन्न वेदका और उठ पठाग काव्यो में अज्ञान का विस्मय इन पर हो रहने गया, और तन्त्रिक तन्त्र अपने धाम में पड़िया, डरावना, और भ्रष्ट बन गया।

पर फिर अब पुनः परिवर्तन हुआ है, भारत की जन जेतना में नायिकों के प्रति आस्था पैदा हुई है, भारतीय जन मानस में यह सम्मान है कि भारतीय तन्त्र को अपने साथ में लड़ी है, उचित है कि तन्त्र काव्य है परन्तु कुछ अन्त तन्त्रिकों के हाथों में यह विद्या चली गयी है, बदनामी हो गयी है, अब उन्होंने पुनः तन्त्र की ओर अपना आस्थापूर्व विद्या है, उन्होंने तन्त्र साधनाएँ सम्पन्न की

हैं, वे भारतीय किन्हीं मठ या बन्दिर के चक्कर में न गये, वे किसी घोषड़ या बाबाओं के तन्त्र जाल में न फँस गये और न इन्होंने कोई तन्त्र की सीखा ही है इन्होंने तो इस बात को समझने की कोशिश की, तन्त्र का भारतीय तन्त्र सही और प्रामाणिक है, क्या हम पूर्वोक्तों ने जो विद्या भारत में प्रस्तुत की थी वह प्रामाणिक है और क्या उन विद्याओं को जन साधारण समझ सकता है।

और इसी भावना के फलस्वरूप उन्होंने कुछ विद्या साधनाएँ प्रारम्भ की थी न तो वह अज्ञान में गये, उन्होंने मांस और मदिरा का सेवन किया, और न ही गृहस्थ जीवन में किसी प्रकार का व्यक्तित्व माने दिया उनका अपना गृहस्थ जीवन मुचाक रूप से चलता रहा और साथ ही साथ अपना व्यापार या नीकरी करते हुए इन साधनाओं की ओर प्रवृत्त हुए तथा अपने घर में, मातुली उपकरणों के माध्यम से मन्त्र जाप एवं हाथों सम्पन्न की, और इसके माध्यम में उन्होंने प्राश्नार्थक परिणाम प्राप्त किये।

इन सब के करने से उनका तन्त्रिक बनने का स्वप्न नहीं वे तो अपने समस्याओं से परत थे और समस्याओं का निराकरण विज्ञान के पास नहीं था, मानसिक रूप से परेशान थे, अपने पुत्र के व्यवहार दुखी थे, दुष्टों के विवाह में विनम्र होने से परेशान पति-पत्नी के मतभेद से विचलित थे और इनका उत्तम तो विज्ञान के पास था और न अंधविश्वास के पास, इ

उत्तर तो तन्त्र के द्वारा ही सम्भव हो सकता था और उन्होंने इतने संश्लिष्ट मन्त्र जाप करता मुक्त किया, और उन्होंने साधकों के साथ ऐसा किया कि वे अपनी स्वयं की समस्याएँ स्वयं हल कर सकते हैं, इसके लिए मैं तो शायदी मुक्तों के चक्कर में पड़ने की जरूरत ही, और मैं नहीं, भाग्यो पर याबा रबड़ने की आवश्यकता है, और इसीलिए जब साधारण म इसकी प्रति उत्पन्नता और पैदा करता है, सामान्य और साधन उत्तर के व्यक्ति ही नहीं पाते। उच्च स्तर के प्रबुद्ध व्यक्ति को साधन-साधो में सब तेज होते, अपने जान का भारतीय और वैश्विक कृपाते में और प्रबुद्ध करो तने, उनके मन के हीन भावना दूर हो गई और वे पहले से ज्यादा मुक्त होते थे। यह सब और पहले से ज्यादा सम्भव हो सके।

ऐसे स्थिति में कुछ विज्ञान साधकों ने अपने यह कर रहे व्यक्ति की सोच साधन की जो सबकारों में रचित तो नहीं वे जो साधकों के महान और मदाधीन तो नहीं वे, प्रबुद्ध जो सही रूप में साधक के और उनके पास बाकर उन्होंने उन साधकों को सख्ते की कोशिश की जो उनकी वैश्विक जीवन की समस्याओं को हल कर रहे, जो उनके जीवन की कठिनाइयों में मार्ग प्रशस्त कर रहे, जो उनकी बाधाओं और विघटनों का निराकरण कर रहे।

और मैंने देखा कि इस मामले में निम्नलिखित रहे, मुझे ये हूँ और समाधिमान का विशेष गुण किन्हीं की दिना है, जब वे किसी बात का निष्कर्ष निकालते हैं तो उसे तुरंत करके ही छोड़ते हैं, मन के क्षेत्र में भी किसी ने जब मान बना मुक्त किया तो पिछले कुछ ही वर्षों में कई विधियों के साथ उभर कर सामने आई जो अपने आप में साधना के क्षेत्र में वैश्विकीय है।

यह आवश्यक नहीं है कि कोई प्रौढ़ या बुद्ध स्वयं ही, साधना में सकलता प्राप्त करें, साधना के लिए मैं तो किसी नहीं, जहाँ और मैं ध्याना का वर्णन ही है, कोई भी नहीं या कुछ साधना सम्भव कर सकता है, इस में

तक़्तियों ने भी नहीं की, और जब उन्होंने साधकों सम्भव की, उनके द्वारा चमत्कार दिखाये जाते लगे तो प्रबुद्ध बने, बुद्धिवादी और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति भी साक्ष्य करते लगे कि साधना में तन्त्र पुरुषों की ही बराबरी नहीं है, प्राचीन स्थितियों भी साधना में सकलता वा सकती है, ऐसी ही स्थितियों में एक नाम उद्धृत कर जाना है, जिसे ही कहते हैं।

मैं नहीं कहता कि उनका पूरा मान नवा है, वह किस की दिना है, वे विद्याएँ उलते कहाँ से लीं। पर सबकारों में अब कर इसकी प्रस्ता है ही है, वैश्विक लोगों ने उनका परीक्षण किया है: उनके चमत्कारों को देख कर उन लोगों ने सतों लगे उनकी दबाई है, वे यह मानने के लिए बाध्य हुए हैं कि भारतीय तन्त्र अपने आप में समुद्र और कीर्ति है।

मनाली हिमाचल प्रदेश का एक महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल है, जहाँ हजारों संतानों घूमते जाते हैं यहाँ से एक सड़क रोहतास दर्रे की ओर जाती है, जो काल गुफा के पास से होकर धारों की ओर जाती है, ब्यास नदी से इसी सड़क पर लगभग १५ मील धारों, एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक है, जिसने दो तीव्र बुद्ध स्थापनी रहते हैं और उसके पास में ही यह हीन नाम की एकणी धारों माता पिता और भारी के साथ अत्यंत साधनाय तरीके ले रहती है।

पर यह धार्मिक ही उच्च कोटि की वास्तिका है, प्रायः पूर्व जन्म में यह कोई महत्त्वपूर्ण वास्तिका रही है, यों भी विनाश में साथ धनी तक जीवित है, और कई स्थानों पर ऐसे हैं जहाँ माय की विज्ञान उनके चमत्कारों को देख कर प्राच्यर्षि चकित रह जाते हैं।

पिछली यात्रा में मैंने इस हीन की देखा, तो मुझे उम्मा पुनः उस स्मारक हो गया और मैंने उनके यहाँ सम्भव दो चप्ते मिलाने, उसकी भी कुछ ऐसा सामान्य हुआ कि पुनः जन्म में इस अस्तित्व से किसी न किसी रूप में सबूत रहा है।

देव दुर्लभ

शोध सिद्धिदायक

भगवती साधना शिविर

१८-३-८८ से २५-३-८८ तक

दुर्लभ अवसर

जैन नवरात्रि तो वास्तव में ही देव दुर्लभ मानी गई है, और फिर इस बार तो प्रयत्न की दृष्टि से पूर्ण सिद्धिदायक योगों से सम्पन्न इस नवरात्रि को सूर्यग्रहण से भी पूर्ण संबंध बना है। फलस्वरूप साधना की दृष्टि से यह एक दुर्लभ, शीघ्र सिद्धिदायक एवं अद्वितीय पर्व बन गया है।

दस महाविद्या साधनाएं भी

इस दुर्लभ शिविर में केवल भगवती दुर्गा नवरात्रि साधना ही नहीं, अपितु दस महाविद्याओं से संबंधित दुर्लभ साधनाएं भी सम्पन्न कराई जायेंगी, जो कि आपकी जीवन का अविस्मरणीय अवसर होगा। फिर भला कौन ऐसा साधक होगा, जो इस साधना शिविर में भाग लेने से बांझ रहे।

लक्ष्मी प्रत्यक्ष सिद्धि

और फिर इसी शिविर में (१) लक्ष्मी प्रत्यक्ष सिद्धि (२) हरिद्रा गणपति सिद्धि प्रयाग (३) सूर्य सिद्धि प्रकीर्ण (४) नवनिधि-वर्णिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा जैसी दुर्लभ गोपनीय और महत्वपूर्ण साधनाएं भी सम्पन्न कराई जायेंगी।

घर पर नहीं

ऐसी साधनाएं घर पर सम्पन्न होना संभव नहीं, क्योंकि ये गोपनीय साधनाएं हैं, जो एक घेरणों में बैठकर कृपितुल्योक्त जीते हुए ही सिद्ध की जा सकती हैं, आपके लिए ही तो यह साधना शिविर लगाया गया है।

स्थान रिजर्व करा लें

स्थान-न्यूनता की वजह से भारतवर्ष के साधकों एवं पाठकों को शिविर में भाग लेने सेना संभव नहीं है। किन्तु हम "साधना शिविर धनुषाक्षि प्रपत्र" की प्रतिलिपि कर लें और कर तो रुपये के माप में, एक रुपए के साथ हमें भेज दें, तब आपका स्थान रिजर्व माना जाएगा, शिविर की विधिवत जानकारी वहां आने पर जमा करा दें।

सम्पर्क

संयोजक-सर्व विज्ञान डॉ० श्रीमान् डाईरीट कोलोमी, जोधपुर-२४२००१ (राजस्थान)

संसार का सर्वाधिक दुर्लभ एवं अप्राप्य पारद शिर्वालिंग

(बारह तोले का)

जिसके घर में स्थापित होने से ही जीवन का पूर्ण
सौभाग्य प्राप्त हो जाता है

❖ संसार में सब कुछ सुखम है, प्राप्य है, पर पारे को टोस बनाकर शिर्वालिंग का निराण कठिन असंभव अप्राप्य ही है ।

❖ और फिर ढाढ़श सद्गुरु के प्रतीक बारह तोले का सजीव सप्राण, स चैतन्य सिद्धि शिर्वालिंग ही तो फिर उसका कहना ही क्या ?

❖ और आप इसे प्राप्त कर सकते हैं, पत्रिका के ध्याजीवन सदस्य बराबर ।

नियम:-

❖ आप पहले मात्र ६००)रु० भेज दें, मनिवाहेंर या बैंक ट्राण्ट से ह्मआपको १००)रु० की बी० पी० से यह दुर्लभ शिर्वालिंग उपहार स्वच्छ भेज देंगे ।

❖ इस प्रकार आपके १५००)रु० पत्रिका कार्यालय में जमा रहेंगे, व आपको जीवन भर पत्रिका मुक्त मिलती रहेगी ।

❖ और ये १५००)रु० भी आपकी धरोहर बनराशि है, नियमानुसार सूचना देकर इस धरोहर बनराशि को आप वापस प्राप्त कर सकते हैं ।

यदि शिर्वालिंग पसन्द न आये, तो पूरी धनराशि वापिस प्राप्त कर सकते हैं

एक दुर्लभ तत्पर

मात्र २१-४-८८ तक ही । हम सारीस तत्पर उपहार आप प्राप्त कर सकते हैं ।

सम्पर्क

मानव-संज्ञ-मन्त्र विभाग, ४०० थोमाली मार्ग हार्दिको० कोलेनी, जोडपुर-७५२००१ (राजस्थान)

